39वाँ 39th

राष्ट्रीय फ़िल्म National

समारोह Film Festival

1992

संपादन

लता अनन्तरामन

EDITOR

LATHA ANANTHARAMAN

समन्वय

अजीत गुप्ता

रामपाल सिंह, मंजु खन्ना, अविनाश वाचस्पति, गणेश चन्द

Co-ordination

AJIT GUPTA

Rampal Singh, Manju Khanna, Avinash Vachaspati, Ganesh Chand

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।

Designed and produced for the Directorate of Film Festivals by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, Printed at Veerendra Printers, New Delhi - 110005.

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	7	DADA SAHEB PHALKE AWARD
निर्णायक मण्डल	10	THE JURIES
कथाचित्र पुरस्कार	13	AWARDS FOR FEATURE FILMS
सर्वोत्तम कथाचित्र	14	Best Feature Film
सर्वोत्तम निर्देशन	16	Best Director
द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र	18	Second Best Feature Film
निर्देशन के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार	20	Indira Gandhi Award for First Film of a Director
सर्वोत्तम पटकथा	22	Best Screenplay
सर्वोत्तम छायांकन	24	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	26	Best Audiography
सर्वोत्तम सम्पादन	28	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	30	Best Art Direction
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	32	Best Music Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	34	Best Costume Design
सर्वोत्तम अभिनेता	36	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	38	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	40	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	42	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	44	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	46	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	48	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम गीत	50	Best Lyrics
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	52	Best Assamese Film
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	54	Best Bengali Film
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	56	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	58	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	60	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	62	Best Oriya Film
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	64	Best Tamil Film
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	66	Best Telugu Film
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	68	Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र	70	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र	72	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम बाल कथाचित्र	74	Best Children's Film

निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	76	Special Jury Award
विशेष उल्लेख	78	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए और प्रविष्टियां, जो नहीं प्राप्त हुई	80	Awards Not Given and Entries Not Received
गैर-कथाचित्र पुरस्कार	81	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार	82	Best Non-Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र पुरस्कार	84	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानव जातीय फ़िल्म	86	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	88	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृति फ़िल्म	90	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)	92	Best Scientific (Environment/Ecology) Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिक्षण फ़िल्म	94	Best Environmental/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म	96	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म	98	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक फ़िल्म	100	Best Historical Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	102	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	104	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	106	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	108	Best Animation Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	110	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	112	Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	114	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम छायांकन	116	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	118	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	120	Best Editing
विशेष उल्लेख	122	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	124	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	125	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	126	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक	128	Best Film Critic
कथासार : कथाचित्र	131	**SYNOPSES: FEATURE FILMS**
अभयम	132	Abhayam
आदि मीमांसा	133	Adi Mimansa
आगन्तुक	134	Agantuk
अन्तर्धान	135	Antardhan
भद्रम कोडुको	136	Bhadram Koduko
भारतम्	137	Bharatham

धारावी	138	Dharavi
दीक्षा	139	Diksha
दुर्गा	140	Durga
फिरिंगोती	141	Firingoti
हलधर	142	Haladhar
कडावु	143	Kadavu
लम्हे	144	Lamhe
मैसूर मल्लिगे	145	Mysoora Mallige
रुकमावती की हवेली	146	Rukmavati ki Haveli
सारोथी	147	Sarothi
स्वाती किरणम्	148	Swathi Kiranam
तारा	149	Tara
वन्ना वन्ना पूक्कल	150	Vanna Vanna Pookkal
यज्ञनयम	151	Yagnyam
यमनम	152	Yamanam
कथासार : गैर कथाचित्र	153	**SYNOPSES: NON-FEATURE FILMS**
आकृति	154	Akruti
आनंद भवन	155	Anand Bhavan
बल्लू शाह	156	Ballu Shah
भागीरथी की पुकार	157	Bhagirathi ki Pukaar
भावांतरण	158	Bhavantarana
ऑइज ऑफ स्टोन	158	Eyes of Stone
कबितर अनंत जात्र पाथे	159	Kabitar Ananta Jatrapathe
कमलाबाई	160	Kamlabai
लिविंग ऑन द जंक	161	Living on the Junk
मलबेरियम पट्टुनूलम	162	Malberiyum Pattunoolum
ए मैटर ऑफ मदरहुड	163	A Matter of Motherhood
मिटी पंग	164	Meitei Pung
मुदियाले एकती विकल्प पंथ	165	Mudialy Ekti Bikalpa Pantha
ऑफ माइन्स एंड मैन	166	Of Mines and Men
पुनरावृत्ति	166	Punaravritti
संचारी	167	Sanchari
साइलेन्ट वैली-एन इंडियन रेनफारेस्ट	168	Silent Valley-An Indian Rainforest
सन्स ऑफ अबाटानी : द मिसिंग	169	Sons of Abotani: The Mising
ए स्टोरी ऑफ ट्राइम्फ	170	A Story of Triumph
तोतानामा	171	Totanama
द वेलिएन्ट वन्स	172	The Valiant Ones

दादा साहेब	Dada Saheb
फाल्के	Phalke
पुरस्कार	Award

दादा साहेब फ़ाल्के पुरस्कार 1991

भालजी पेंढारकर

स्वर्ण कमल, 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार और एक शाल ।

भालजी पेंढारकर मराठी फ़िल्मों के वयोवृद्ध निर्देशक, निर्माता, और पटकथा लेखक हैं । उनका जन्म 1898 में महाराष्ट्र में कोल्हापुर में हुआ । उन्होंने अपना फ़िल्मी जीवन 1920 में अर्थात भारतीय सिनेमा के जन्मकाल के आस-पास शुरू किया । उन्होंने 5 मूक फ़िल्मों की पटकथा लिखी । 1932 में उन्होंने पहली सवाक् फ़िल्म **श्याम सुन्दर** का निर्देशन किया। उन्होंने भारत के प्राचीन गौरव को दर्शाने वाली पौराणिक फ़िल्में बनाई जो बहुत लोकप्रिय हुईं। इनमें **सावित्री** (1936), **महारथी कर्ण** (1944), **वाल्मिकी** (1946) उल्लेखनीय हैं । 1952 में उन्होंने ऐतिहासिक फ़िल्म **छत्रपति शिवाजी** का निर्माण किया, जिसमें देशभक्ति की भावना चित्रित की गई।

लगभग 70 वर्षों के अपने फ़िल्मी जीवन में पेंढारकर ने 60 से अधिक मराठी फ़िल्मों और 8 हिन्दी फ़िल्मों का निर्माण किया है। इनमें से अधिकांश फ़िल्में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों पर आधारित हैं । अपनी फ़िल्मों की विषय वस्तु के कारण ही वे भारतीय सिनेमा के संस्थापक के साथ-साथ राष्ट्र-निर्माण के उन्नायक के रूप में भी विख्यात हैं । स्वतन्त्रता के प्रति उनके समर्पण और ऐतिहासिक तथा सामाजिक कथाओं के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति की सभी ने सराहना की है ।

भालजी पेंढारकर को **साधी मानस** (1965) के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार और महाराष्ट्र राज्य का सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मिला । **तम्बादी माटी** (1967) के लिए भी उन्हें राज्य का सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार मिला । इसी तरह उनकी फ़िल्म **गारची रानी** (1968) को भी राज्य का सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार प्रदान किया गया ।

DADA SAHEB PHALKE AWARD 1991

BHALJI PENDHARKAR

Swarna Kamal, a cash prize of Rs. 1,00,000 and a shawl

Bhalji Pendharkar was born in 1898 in Kolhapur, Maharashtra. A veteran director, script writer and producer of Marathi films, he began his career in films in 1920, almost at the birth of Indian cinema. He wrote the screenplay for five silent films and wrote and directed his first talkie, **Shyam Sunder**, in 1932.

Savitri (1936), **Maharathi Karna** (1944), **Valmiki** (1946) and other mythologicals were popular for their depiction of the ancient glories of India. Historicals such as **Chatrapathi Shivaji** (1952) inculcated a patriotic spirit in their audiences.

In his seventy years of involvement in cinema he has produced more than sixty Marathi films and eight Hindi films, most of them dealing with historical and cultural themes. It is because of the content of his films that Pendharkar has been hailed not only as a founding father of Indian film but also as a contributor to the founding of the nation. Pendharkar's commitment to the cause of freedom and his expression of it through historical and social narratives have been widely recognised.

Bhalji Pendharkar has won national awards for the best film for **Saadhi Manasa** (1965), which also won Maharashtra state's best film award, and **Tambadi Mathi** (1967). The state's best film award was also given to **Garchi Rani** (1968).

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

Jury for Feature Films

अदूर गोपालकृष्णन् (अध्यक्ष)
Adoor Gopalakrishnan (Chairman)

आमिर रज़ा हुसैन
Amir Raza Hussain

आशीष सराफ
Ashish Saraf

फिरोज रंगूनवाला
Firoze Rangoonwalla

गुम्मडी वेंकटेश्वर राव
Gummadi Venkateswara Rao

हेमा चौधरी
Hema Chowdari

आर.लक्ष्मण
R. Lakshman

ललिता रवि
Lalitha Ravee

नब्येन्दु चटर्जी
Nabyendu Chatterjee

नित्यानंद सामंत्रे
Nityananda Samantaray

पी. माधवन
P. Madhavvan

प्रफुल्ल साइकिया
Prafulla Saikia

पी.आर.एस. पिल्लै
P.R.S. Pillay

राजा मित्रा
Raja Mitra

श्रीकुमारन थम्पी
Sreekumaran Thampi

उर्वशी तलवार
Urvashi Talwar

विनोद नागपाल
Vinod Nagpal

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

Jury for Non-Feature Films

बुद्धदेव दासगुप्ता (अध्यक्ष)
Buddhadeb Dasgupta (Chairman)

अरुण कौल
Arun Kaul

जगमोहन
Jag Mohan

जहांगीर चौधरी
Jehangir Chowdhury

विजया मुले
Vijaya Mulay

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल

Jury for Writing on Cinema

कमलेश्वर (अध्यक्ष)
Kamleshwar (Chairman)

शांता सरबजीत सिंह
Shanta Sarbjeet Singh

विजय ससनूर
Vijay Sasnur

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

आगन्तुक (बंगला)

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड** को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सत्यजीत राय** को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार बंगला फिल्म **आगन्तुक** को एक असाधारण विषय को कुशलता के साथ प्रस्तुत करने और उसमें हास्य, रहस्य और नाटकीयता का समावेश करते हुए मानव आचरण को गहराई के साथ अभिव्यक्त करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

AGANTUK (Bengali)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Producer: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director: **SATYAJIT RAY**

Citation
The Award for the Best Feature Film of 1991 is given to the Bengali film **AGANTUK** for its masterly treatment of an unusual subject investing it with humour, suspense and drama accomplishing remarkable insights into human behaviour.

सत्यजीत राय भारतीय फिल्म जगत के दीपस्तम्भ थे । उन्होंने फिल्मकला के सभी पहलूओं में पूर्ण दक्षता का परिचय दिया । फिल्मों के निर्माण तथा निर्देशन के अलावा उन्होंने संगीत निर्देशन, सम्पादन, कहानी और पटकथा लेखन तथा सैट डिजाइनिंग और वेशभूषा तक में विशेष योग्यता के साथ काम किया । उनकी फिल्मों की कहानियां बहुत अधिक प्रभावशाली रही हैं । उनकी अनेक फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं । उन्होंने सिनेमा के सम्बन्ध में कई निबंध भी लिखे ।

सत्यजीत राय का जन्म 1921 में बंगाल के एक बौद्धिक सम्पन्न परिवार में हुआ । उनके दादा और पिता लेखक थे और उनके परिवार पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का काफी प्रभाव था । वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूर्ण करने के बाद चित्रकला की शिक्षा पाने के लिए शान्तिनिकेतन गए ।

बाद में वे कलकत्ता में एक ब्रिटिश विज्ञापन कम्पनी में कलाकार के रूप में काम करने लगे । ग्राफिक्स कलाकार के रूप में उन्होंने अनेक पुस्तकों के लिए चित्र और रेखाचित्र बनाए तथा मुख्य पृष्ठों के डिजाइन तैयार किए। उन्होंने **राय रोमन** और **राय बिज़ारे** नाम के दो टाइपफेस भी विकसित किए। उन्होंने विभूति भूषण बंद्योपाध्याय के उपन्यास **पाथेर पंचाली** के लिए रेखाचित्र तैयार किए और उनकी फिल्मों के अनेक दृश्यों को देखकर उन रेखाचित्रों की याद आ जाती है ।

1950 के दशक में वे लन्दन में रहे । स्वदेश लौटकर उन्होंने **पाथेर पांचाली** की पटकथा लिखी, जो गांव के एक गरीब पुजारी के बेटे अप्पू के बारे में बनाई गई तीन फिल्मों का पहला भाग था । 1956 के कॉन्स फिल्म समारोह में फिल्म कला की श्रेष्ठता तथा मानवीय अभिव्यक्ति के लिए इस फिल्म को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। यहीं से सत्यजीत राय के जीवन में नया मोड आया।

उनकी लगभग सभी फिल्मों को पुरस्कार मिले। 1984 में उन्हें फिल्म के क्षेत्र में देश का सर्वोच्च सम्मान **दादा साहेब फाल्के** पुरस्कार दिया गया । इस वर्ष सिनेमा जगत की श्रेष्ठ सेवा के लिए देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अंलकृत किया गया । उन्हें अकादमी ऑफ मोशन पिक्चर्स द्वारा जीवन भर की उपलब्धियों के लिए **आस्कर पुरस्कार** भी प्रदान किया गया ।

सत्यजीत राय का देहांत 23 अप्रैल 1992 को कलकत्ता में हुआ ।

SATYAJIT RAY has been hailed as a genius in virtually every aspect of his craft. He wrote the screenplay, designed the set and costumes, scored the music, directed and mixed and edited the film. The result was a fluid and controlled product. Yet, his films make their greatest impact as stories. Many of Ray's films have arisen from works of literature, and he himself has written detective stories, science fiction and fairy tales, apart from essays on cinema.

Satyajit Ray was born in 1921 into the Bengali intellectual aristocracy. His grandfather and father were writers. Rabindranath Tagore had a strong influence on the family, and when Satyajit graduated from Calcutta University he went on to study painting at Santiniketan. Ray later worked in Calcutta as a junior visualiser for a British advertising agency. As a graphic artist, he also illustrated books and designed book covers and created two typefaces, Ray Roman and Ray Bizarre. His graphic art, which he never stopped producing, has enriched his films. He illustrated Bibhuti Bhushan Bandyopadhyay's novel **Pather Panchali**, and many of the images in Ray's film recall those illustrations.

In the fifties, Ray worked in London and spent most of his free time in cinema houses. On his way back to India, he penned the screenplay of **Pather Panchali**, the first part of a film trilogy about Apu, the son of a poor village priest. The film won a special prize at the 1956 Cannes Film Festival for its excellence as a human document and was a turning point in Ray's career.

Satyajit Ray's films have won national and international recognition. Almost every one of them has been an award-winner. In 1984, he won the Dada Saheb Phalke Award. This year, the Government of India conferred on him the Bharat Ratna for his excellent service to cinema. He also won the 1992 Lifetime Achievement Award of the Academy of Motion Pictures.

Satyajit Ray died on April 23, 1992, in Calcutta.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

सत्यजीत राय

निर्देशक **सत्यजीत राय** को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार
प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1991 का पुरस्कार **सत्यजीत राय** को बंगला फिल्म **आगन्तुक** के निर्देशन के लिए दिया गया है, जिसमें उन्होंने उच्च कोटि की फिल्म कला तथा अद्भुत सिने अनुभूति के सृजन में इस्तेमाल की गई सिनेमा की भाषा पर अपने पूर्ण अधिकार का परिचय दिया है

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

SATYAJIT RAY

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Director: **SATYAJIT RAY**

Citation
The Award for the Best Direction of 1991 is given to **SATYAJIT RAY** for his work in the Bengali film **AGANTUK** for the outstanding craftsmanship and the command over the language of cinema he employed in creating a remarkable cinematic experience.

राय का फ़िल्मवृत्त

पाथेर पांचाली (1955)
अपराजितो (1956)
पारस पत्थर (1957)
जलसाघर (1958)
अपूर संसार (1959)
देवी (1960)
तीन कन्या (1961)
कंचनजंघा (1962)
अभिजान (1962)
महानगर (1963)
चारूलता(1964)
कापुरूष-ओ-महापुरूष (1965)
नायक (1966)
चिड़ीखाना (1967)
गोपी गायने बाघा बायने (1968)
अरण्येर दिन रात्रि (1970)
प्रतिद्वंदी (1970)
सीमाबद्ध (1971)
आशनी संकेत (1973)
सोनार केला (1974)
जन अरण्य (1975)
शतरंज के खिलाड़ी (1977)
जय बाबा फेलुनाथ (1978)
हीरक राजार देशे (1980)
घरे बाइरे (1984)
गणशत्रु (1989)
शाखा प्रशाखा (1990)
आगन्तुक (1991)
रवीन्द्रनाथ टैगोर (1961)
टू (1970)
सिक्किम (1971)
द इनर आई (1972)
बाला (1976)
पीकूज डे (1980)

The films of Satyajit Ray

Pather Panchali (1955)
Aparajito (1956)
Parash Pathar (1957)
Jalsaghar (1958)
Apur Sansar (1959)
Devi (1960)
Teen Kanya (1961)
Kanchenjungha (1962)
Abhijan (1962)
Mahanagar (1963)
Charulata (1964)
Kapurush-O-Mahapurush (1965)
Nayak (1966)
Chidiakhana (1967)
Goopy Gyne Bagha Byne (1968)
Aranyer Din Raatri (1970)
Pratidwandi (1970)
Seemabaddha (1971)
Ashani Sanket (1973)
Sonar Kella (1974)
Jana Aranya (1975)
Shatranj ke Khiladi (1977)
Joi Baba Felunath (1978)
Hirak Rajar Deshe (1980)
Ghare Baire (1984)
Ganashatru (1989)
Shakha Prashakha (1990)
Agantuk (1991)
Rabindranath Tagore (1961)
Two (1970)
Sikkim (1971)
The Inner Eye (1972)
Bala (1976)
Pikoo's Day (1980)
Sadgati (telefilm, 1981)
Sukumar Ray (1987)

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

फिरिंगोती (असमिया)

निर्माता **शैलधर बरूआ** और **जाहनु बरूआ** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **जाहनु बरूआ** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार असमिया फ़िल्म **फिरिंगोती** को उसकी कलात्मक श्रेष्ठता और सामाजिक महत्व के विषय के चित्रण में फ़िल्म माध्यम के कुशल इस्तेमाल के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE SECOND BEST FEATURE FILM

FIRINGOTI (Assamese)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producers: **SAILADHAR BAROOAH** and **JAHNU BARUA**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **JAHNU BARUA**

Citation
The Award for the Second Best Feature Film of 1991 is given to the Assamese film **FIRINGOTI** for its artistic excellence and for the effective use of the medium for portraying a theme of immense social relevance.

शैलधर बरूआ सामाजिक कार्यकर्ता, खेल प्रेमी और दवाओं तथा भवन निर्माण क्षेत्र के व्यापारी हैं। उन्होंने जाह्नु बरूआ के साथ मिलकर पटकई पिक्चर्स नामक संस्था बनाई और **पापोरी, हलोधिया चोराए बायोधन खाए** तथा **फिरिंगोती** जैसी फिल्मों का निर्माण किया।

SAILADHAR BAROOAH is a social worker, sports promoter, and a businessman in the fields of construction and medicine. Together with Jahnua Barua he formed Patkai Pictures and made the films **Papori**, **Halodhia Choraye Baodhan Khai** and **Firingoti**.

जाह्नु बरूआ ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद विभिन्न फिल्म परियोजनाओं पर काम किया। बाद में वे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन में काम करने लगे जहां उन्होंने 'साइट' के लिए सौ से अधिक शैक्षणिक कार्यक्रम तैयार किये। उनकी पहली फिल्म **अपरूपा** को 1983 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। बरूआ की अन्य फिल्में हैं **पापोरी, बनानी** और **हलोधिया चौराए बायोधन खाए** को 1988 में राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण कमल तथा लोकार्नो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सिल्वर लेपर्ड मिला। इस फिल्म को उसी वर्ष के टोकियो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में एशिया वर्ग की सर्वोत्तम वर्ग की सर्वोत्तम फिल्म के रूप में शामिल किया गया। **बनानी** फिल्म को 1990 में पर्यावरण पर सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

JAHNU BARUA, a graduate in direction from the Film and Television Institute of India, worked on various film projects till he joined the Indian Space Research Organization, where he made more than a hundred educational television programmes for the Satellite Instructional Television Experiment. His first film was **Aparoopa**, which won a National Award in 1983. Barua's later films include **Papori**, **Halodhia Choraye Baodhan Khai**, and **Banani**. **Halodhia Choraye Baodhan Khai** won the Swarna Kamal at the National Film Festival in 1988 and the Silver Leopard at the Locarno International Film Festival the same year. It was also included in the Best of Asia section of the Tokyo International Film Festival in 1988. **Banani** received the National Award for the Best Film on Environment in 1990.

निर्देशक के सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

हलधर (असमिया)

निर्माता **गीती बरूआ** और **द्विजेन हजारिका** को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **संजीव हजारिका** को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार असमिया फिल्म **हलधर** को दृष्टिकोण की नवीनता, हास्य की अत्यन्त सूक्ष्म प्रस्तुति और एक हल के आस-पास फिल्म निर्माण का निर्णय करने में दिखाये गये साहस के लिए दिया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

HALADHAR (Assamese)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Producers: **GEETI BARUA and DWIJEN HAZORIKA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director: **SANJEEV HAZORIKA**

Citation
The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1991 is given to the Assamese film **HALADHAR** for its freshness of approach, the subtlety of its pervasive humour and the courage shown in choosing to build a film around a plough.

गीती बरूआ असम में अनेक सांस्कृतिक तथा नाटक मंडलियों में सक्रिय रही हैं। उन्होंने फ़िल्म निर्माण के अनेक विभागों में काम किया और **सुरजा तेजार अन्य नाम, अग्नि, दृष्टि** और **प्रभाती पाछिर गान** जैसी फ़िल्मों के निर्माण से सम्बद्ध रही हैं।

GEETI BARUA has been closely involved with various cultural and dramatic groups of Assam. She has worked in several aspects of film production and has been associated with the production of **Surja Tejar Anya Naam, Agni, Dristi** and **Prabhati Pakhir Gaan**.

द्विजेन हज़ारिका असम में मछलियों के जाने-माने व्यापारी हैं और सांस्कृतिक तथा सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए हैं।

DWIJEN HAZORIKA is a pioneering businessman in fisheries in Assam and is involved with cultural and social organisations of the state.

1956 में जन्मे **संजीव हज़ारिका** ने 1980 में गौहाटी विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उनकी रुचि नाटकों में रही है। 1978 में वे आकाशवाणी, गौहाटी में नाटक कलाकार के रूप में चुने गये। कई वर्षों तक नाटकों के निर्देशन में नाम कमाने के बाद उन्होंने 1983 में फ़िल्म क्षेत्र में पदार्पण किया। उन्होंने पुलक गोगोई, डाक्टर भवेन्द्रनाथ सैकिया तथा हेम बोरा जैसे प्रमुख निर्देशकों के साथ काम किया। उन्हें इस्टर्न इंडिया मोशन पिक्चर्स की ओर से सर्वोत्तम सह-अभिनेता का पुरस्कार मिला। उन्होंने टेलीविजन में भी अभिनेता और निर्देशक के रूप में किया है।

Born in 1956, **SANJEEV HAZORIKA** graduated in science from Gauhati University in 1980. Always a lover of stage and drama, Hazorika was selected as a drama artist in All India Radio, Gauhati in 1978. Following an award-winning career in directing on the stage, Hazorika came to be associated with films in 1983. He worked with the eminent directors Pulak Gogoi, Dr. Bhabendra Nath Saikia and Hem Bora. He has won the Best Supporting Actor Award from the Eastern India Motion Pictures Association and has worked as an actor and as a director in television.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

एम.टी.वासुदेवन नायर

पटकथा लेखक **एम.टी.वासुदेवन नायर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1991 का पुरस्कार **एम.टी. वासुदेवन नायर** को मलयालम फ़िल्म **कडावु** में एक उपेक्षित बालक की निराशा को अत्यन्त भावपूर्ण तथा काव्यात्मक शैली में अभिव्यक्त करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

M.T. VASUDEVAN NAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Screenplay Writer: **M.T. VASUDEVAN NAIR**

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1991 is given to **M.T. VASUDEVAN NAIR** for his work in the Malayalam film **KADAVU** for its sensitive and poetic treatment of disillusionment of an underprivileged adolescent.

एम.टी. **वासुदेवन नायर** केरल के फ़िल्म प्रेमियों में एम.टी. के नाम से विख्यात हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें, कहानियां और उपन्यास लिखे है। उन्हें साहित्य अकादमी तथा अन्य अनेक साहित्यिक पुरस्कार मिले हैं। वे 1966 से फ़िल्मों की पटकथायें लिख रहे हैं। उनकी कई फ़िल्में उनकी अपनी कहानियों पर आधारित हैं। उनकी प्रथम फ़िल्म **निर्मालयम** को 1973 में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक मिला। वे तीन पत्रिकाओं का सम्पादन भी करते हैं।

M.T. VASUDEVAN NAIR, known as M.T. to filmgoers in Kerala, has written books, short stories and novels and has won numerous literary awards, including the Central Sahitya Akademy Award. He has been a screenplay writer since 1966. Many of his films are based on his own stories. His first film, **Nirmalyam**, won the President's Gold Medal in 1973. He also edits three periodicals in Kerala.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

ए.के.बीर

छायाकार **ए.के.बीर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1991 का पुरस्कार **ए.के.बीर** को उड़िया फिल्म **आदि मीमांसा** में उनके काम के लिए दिया गया है। उन्होंने फिल्म के स्वरूप और मुख्य भाव को ऐन्द्रिक गुणवत्ता प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

A.K. BIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman: **A.K. BIR**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the laboratory processing the film: **PRASAD FILM LABORATORIES**

Citation
The Award for the Best Cinematography of 1991 is given to **A.K. BIR** for his work in the Oriya film **ADI MIMANSA**. He has achieved a high degree of accomplishment in painting the film with light, imparting a sensuous quality to the texture and feel of the film.

ए.के.बीर ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने अनेक विज्ञापन फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा कथाचित्रों का छायांकन किया है। इनमें से अनेक फिल्मों को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए है। उन्होंने टेलीविजन के लिए भी काफी काम किया है।

A.K. BIR is a graduate in cinematography from the FTII, Pune. He is based in Bombay and has been involved as cinematographer in several advertising, documentary and feature films, many of which have received regional, national and international awards. He has also done extensive work for television.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

अजय मुंजाल और ए.एम. पद्मनाभन

ध्वनि आलेखक **अजय मुंजाल** और **ए.एम. पद्मनाभन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1991 का पुरस्कार **अजय मुंजाल** और **ए.एम.पद्मनाभन** को हिन्दी फिल्म **रुकमावती की हवेली** में उनके काम के लिए दिया गया है। उन्होंने फिल्म में व्याप्त घोर उत्पीड़न को सशक्त ढंग से उभारने में ध्वनि के प्रभाव और स्तर का कुशलता से प्रयोग किया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

AJAY MUNJAL and A.M. PADMANABHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographers: **AJAY MUNJAL** and **A.M. PADMANABHAN**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1991 is given to **AJAY MUNJAL** and **A.M. PADMANABHAN** for their work in the Hindi film **RUKMAVATI KI HAVELI** for the quality and the effectiveness of the sound in contributing to the ambience of stark oppression that pervades the film.

अजय मुंजाल ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्रि-इंजीनियरी की परीक्षा उत्तीर्ण की और भारतीय फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान से ध्वनि आलेखन और ध्वनि अभियांत्रिकी में विशेष योग्यता के साथ डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने 3 कथाचित्रों **मैं जिन्दा हूँ, दृष्टि** और **रुकमावती की हवेली** के लिए ध्वनि आलेखन किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न विषयों पर अनेक वृत्तचित्रों, टेलीफिल्मों और धारावाहिकों के लिए भी काम किया है।

AJAY MUNJAL completed his pre-engineering course in Kurukshetra University and holds a diploma in film and television from the FTII, Pune, with a specialisation in sound recording and sound engineering. He has worked on three feature films—**Main Zinda Hoon**, **Drishti** and **Rukmavati ki Haveli**—in addition to numerous corporate films, television films and serials, and documentaries on a wide range of subjects.

ए.एम. पद्मानाभन् फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से ध्वनि आलेखन में स्नातक है। गत 12 वर्षों में उन्होंने कई कथाचित्र एवं लघु फिल्मों में ध्वनि आलेखन के रूप में कार्य किया है। वे अराधना साऊंड स्टूडियों में मुख्य ध्वनि आलेखक है। वर्तमान में **रुकमावती की हवेली** इनकी प्रथम कथाचित्र है जिसके लिए इन्हें आलेखक का पुरस्कार मिला है।

A.M. PADMANABHAN is a graduate in sound recording and sound engineering from the FTII, Pune. He has done sound recording for several feature films and documentaries for the past 12 years. He is presently the chief sound recordist at Aradhana Sound Studios. **Rukmavati ki Haveli** was rerecorded by Padmanabhan and it is the first film for which he has won an award.

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

रेणु सलूजा

फ़िल्म सम्पादक **रेणु सलूजा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फ़िल्म सम्पादन का 1991 का पुरस्कार **रेणु सलूजा** को हिन्दी फ़िल्म **धारावी** में ध्वनि और दृश्य रचना के संयोग से सही समय और लय प्राप्त करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

RENU SALUJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor: **RENU SALUJA**

Citation

The Award for the Best Editing of 1991 is given to **RENU SALUJA** for her work in the Hindi film **DHARAVI** for achieving the right timing and rhythm, with the dexterous juxtaposition of sound and visuals.

रेणु सलूजा ने एल्फिस्टन कालेज बम्बई से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद भारतीय विद्याभवन के राजेन्द्र प्रसाद संचार संस्थान से पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1976 में उन्होंने भारतीय फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया। रेणु सूलजा ने अनेक हिन्दी कथाचित्रों तथा कई टेलीविजन धारावाहिकों का सम्पादन किया है। 1989 में हिन्दी फिल्म **परिन्दा** के लिए उन्हें सर्वोत्तम सम्पादन का राष्ट्रीय सम्पादन का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

RENU SALUJA graduated from Elphinstone College, Bombay, and holds a diploma in journalism from the Rajendra Prasad Institute of Communications, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay. She graduated from the FTII in 1976. She has edited many feature films in Hindi as well as a number of television serials. In 1989 she won the national award for best editing for her work in the Hindi film **Parinda**.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

समीर चन्दा

कला निर्देशक **समीर चन्दा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1991 का पुरस्कार **समीर चन्दा** को हिन्दी फिल्म **रुकमावती की हवेली** में फिल्म के मूल भाव और स्वरूप के अनुरूप विश्वसनीय तथा वास्तविक वातावरण का निर्माण करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

SAMIR CHANDA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Art Director: **SAMIR CHANDA**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1991 is given to **SAMIR CHANDA** for his work in the Hindi film **RUKMAVATI KI HAVELI** for creating an authentic and real setting, matching the mood and manner of the film.

समीर चन्दा ने अपना फिल्मी जीवन कला निर्देशक नितीश रॉय के सहायक के रूप में प्रारम्भ किया । तब से उन्होंने स्वतंत्र रूप से कई फिल्मों में कला निर्देशक के रूप में कार्य किया है । **रुकमावती की हवेली** उनकी प्रथम हिन्दी फिल्म है जिनके लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है ।

SAMIR CHANDA began his career in film as assistant to the art director Nitish Roy. Since then he has worked independently as art director on several films. **Rukmavati ki Haveli** is the first film for which he has won a national award.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

रजत ढोलकिया

संगीत निर्देशक **रजत ढोलकिया** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1991 का पुरस्कार **रजत ढोलकिया** को हिन्दी फिल्म **धारावी** में संगीत को फिल्म के स्वरूप के अभिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत करके फिल्म के मूल विषय के अर्थ और आयाम को व्यापकता प्रदान करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

RAJAT DHOLAKIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Music Director: **RAJAT DHOLAKIA**

Citation

The Award for the Best Music Direction of 1991 is given to **RAJAT DHOLAKIA** for using music as an integral part of the film structure, furthering the meaning and dimension of the theme in the Hindi film **DHARAVI**.

रजत ढोलकिया फिल्मों, वीडियों कार्यक्रमों तथा नाटकों के संगीत निर्देशक के रूप में काम करते हैं। उन्होंने पंडित रामप्रसाद शर्मा और फ्रांस के गिटारवादक मार्क सलन से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके अलावा वे अपने पिता, प्रसिद्ध संगीतकार और गायक दिलीप ढोलकिया से भी समय-समय पर कुछ सीखते रहते हैं। किन्तु बुनियादी तौर पर रजत ढोलकिया अपने बलबूते पर संगीत निर्देशक बने हैं। जिन फिल्मों के लिए उन्होंने संगीत दिया है उन में **होली** (1984), **ओम दरबदर** (1985), **काफिला** (1986) और **मिर्च मसाला** (1986) शामिल हैं।

RAJAT DHOLAKIA works as a music director for films, video programmes, and plays. He has had brief stints of training with Pandit Ramprasad Sharma and the French guitarist Mark Salan, as well as continuous interaction with his father, Dileep Dholakia, the well-known music director, composer and singer, but he is primarily self-taught. The feature films for which he has been music director are **Holi** (1984), **Om Durbadar** (1985), **Kafila** (1986) and **Mirch Masala** (1986), all of them in Hindi.

सर्वोत्तम वेशभूषा पुरस्कार

नीता लुल्ला, कचिन्स और लीना दारू

वेशभूषाकार **नीता लुल्ला, कचिन्स** और **लीना दारू** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषा का 1991 का पुरस्कार **नीता लुल्ला, कचिन्स** और **लीना दारू** को हिन्दी फिल्म **लम्हे** में राजस्थानी पहरावे के रंगों, विविधता और भव्यता को प्रामाणिकता के साथ उजागर करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

NEETA LULLA, KACHINS and LEENA DARU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Costume Designers: **NEETA LULLA, KACHINS** and **LEENA DARU**

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1991 is given to **NEETA LULLA, KACHINS** and **LEENA DARU** for their work in the Hindi film **LAMHE** for faithfully recreating the colour, variety and richness of the dresses worn in Rajasthan.

नीता श्यमा लुल्ला का जन्म 1964 में हुआ। उन्होंने 1984 में एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय से वेशभूषाकार और फैशन समन्वयकर्ता का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्हें हिन्दी और तेलुगु फिल्मों के अनेक मुख्य कलाकारों की वेशभूषा तैयार करने का अनुभव है। 1983 और 1984 में उन्हें सर्वोत्तम वेशभूषा के लिए पुरस्कार मिले।

NEETA SHYAM LULLA was born in 1964 and trained as a dressmaker and fashion coordinator at SNDT University in 1984. She has designed clothes for leading artistes in numerous Hindi and Telugu films. She has won awards for best outfits in 1983 and 1984.

लीना दारू पिछले 26 वर्ष से वेशभूषाकार के रूप में फ़िल्म उद्योग में काम कर रही हैं। उन्होंने हेमा मालिनी, शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, परवीन बाबी, मौसमी चटर्जी, श्रीदेवी तथा अन्य मुख्य अभिनेत्रियों की वेशभूषा तैयार की है।

LEENA DARU has worked twenty-six years in the film industry as a costume designer. She has designed for Hema Malini, Shabana Azmi, Smita Patil, Parveen Babi, Moushumi Chatterjee, Sridevi and other leading actresses.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

मोहन लाल को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम अभिनेता का 1991 का पुरस्कार **मोहन लाल** को मलयालम फिल्म **भारतम्** में अभिनय की ऊंचाई का परिचय देने तथा गलतफहमी के शिकार संगीतकार के चरित्र को अत्यन्त संयम के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

MOHANLAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actor: **MOHANLAL**

Citation
The Award for the Best Actor of 1991 is given to **MOHANLAL** for his work in the Malayalam film **BHARATHAM** for his range as an actor as well as the restraint he applied in the portrayal of the much misunderstood musician.

मोहन लाल असाधारण भूमिकायें करने के लिए विख्यात हैं। उन्होंने **राजाविन्दे माकन** और **भूमियलि राजक्कनमार** जैसी फ़िल्मों में अपनी भूमिकाओं से सुपरस्टार की ख्याति प्राप्त की, लेकिन **चेप्पू, आर्यन** और **क्रीड्म** जैसी फ़िल्मों में उन्होंने अपने अभिनय की उच्चता तथा विविधता का परिचय दिया। **क्रीड्म** फिल्म के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कारों में विशेष उल्लेख का पुरस्कार मिला।

MOHANLAL has been known for his unconventional portrayals. He reached superstar status through his roles in **Rajavinte Makan** and **Bhoomiyile Rajakkanmar**, but has displayed his flexibility and talent in films like **Cheppu, Aryan** and **Kireedom. Kireedom** won the special mention in the national awards.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

मलाया गोस्वामी

अभिनेत्री **मलाया गोस्वामी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1991 का पुरस्कार **मलाया गोस्वामी** को असमिया फ़िल्म **फिरिंगोती** में ऐसी अध्यापिका की भूमिका को सूक्ष्म और सहज ढंग से निभाने के लिए दिया गया है, जो अपने निजी जीवन की पीड़ाओं से उबर कर जीवन के उच्च आदर्शों के लिए स्वयं को समर्पित कर देती है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

MOLOYA GOSWAMI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actress: **MOLOYA GOSWAMI**

Citation

The Award for the Best Actress of 1991 is given to **MOLOYA GOSWAMI** for her work in the Assamese film **FIRINGOTI** for the subtle and natural portrayal of a teacher who overcomes the trauma of her personal life and dedicates herself to the pursuit of a noble mission.

मलाया गोस्वामी असम में जागी रोड कालेज में पढ़ाती हैं। उन्हें भबेन सैकिया की फिल्म **अग्निस्नान** से ख्याति मिली। **फिरिंगोती** उनकी दूसरी फिल्म है।

MOLOYA GOSWAMI, professionally a lecturer in Jagiroad College in Assam, came to prominence with her excellent performance in Bhaben Saikia's **Agnisnan**. **Firingoti** has been her second major film.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

पी.एल. नारायण

सह अभिनेता **पी.एल. नारायण** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेता का 1991 का पुरस्कार पी.एल. नारायण को तेलुगु फिल्म **यगनयम** में एक दलित किसान के चरित्र को विश्वसनीयता के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

P.L. NARAYANA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Supporting Actor: **P.L. NARAYANA**

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1991 is given to **P.L. NARAYANA** for his work in the Telugu film **YAGNYAM** for the convincing portrayal of an oppressed farmer.

पी.एल.नारायण का जन्म उडिपि में हुआ। उन्होंने दो सौ से अधिक तेलुगु फिल्मों में काम किया है और आन्ध्र प्रदेश में सर्वोत्तम चरित्र अभिनेता, सर्वोत्तम हास्य अभिनेता और सर्वोत्तम सह-अभिनेता के रूप में अनेक पुरस्कार जीते हैं। वे लेखक और निर्देशक के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।

P.L. NARAYANA was born in Udipi and was brought up in Andhra Pradesh. He has acted in more than two hundred Telugu films and has won several awards in Andhra Pradesh as Best Character Actor, Best Comedian and Best Supporting Actor. He is also well known as a writer and director.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री

शान्तादेवी

सह अभिनेत्री **शान्तादेवी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का 1991 का पुरस्कार **शान्तादेवी** को मलयालम फिल्म **यमनम** में अभिनय के लिए दिया गया है, जिसमें उन्होंने सूझ-बूझ वाली और दुखी मां की भूमिका निभाई है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

SANTHADEVI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Supporting Actress: **SANTHADEVI**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1991 is given to **SANTHADEVI** for her work in the Malayalam film **YAMANAM**, who lives the role of the understanding and tormented mother.

शान्ता देवी नाटकों और फ़िल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं और उन्होंने सौ से अधिक फ़िल्मों में काम किया है। उन्हें अभिनय के लिए अनेक क्षेत्रीय पुरस्कार मिले हैं।

SANTHADEVI is a noted actress of the screen and stage and has acted in over a hundred films. She has won many regional awards for her work.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

सन्तोष रेड्डी

बाल कलाकार **संतोष रेड्डी** को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1991 का पुरस्कार **संतोष रेड्डी** को तेलुगु फिल्म **भद्रम कोडुको** में एक आवारा बच्चे की भूमिका सहज ढंग से निभाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

SANTOSH REDDY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Child Artiste: **SANTOSH REDDY**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1991 is given to **SANTOSH REDDY** for his work in the Telugu film **BHADRAM KODUKO** for giving a natural performance of a street-smart child.

संतोष रेड्डी भारती और नारायण रेड्डी के पुत्र हैं। उनका जन्म 1980 में हैदराबाद में हुआ। वे सातवीं कक्षा के छात्र हैं। **भद्रम कोडुको** उनकी पहली फिल्म है।

SANTOSH REDDY, son of Bharathi and Narayana Reddy, was born in 1980 in the suburbs of Hyderabad. He is now studying in the seventh standard. **Bhadram Koduko** is his first film.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

के.जे. येशुदास

पार्श्व गायक **के.जे. येशुदास** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1991 का पुरस्कार **के.जे. येशुदास** को मलयालम फ़िल्म **भारतम्** में शास्त्रीय शैली में माधुर्य एवं कौशल के साथ गीत गाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

K.J. YESUDAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Playback Singer: **K.J. YESUDAS**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1991 is given to **K.J. YESUDAS** for the mellifluous and masterful rendering of songs in the classical style in the Malayalam film **BHARATHAM**.

के.जे. यशुदास ने शास्त्रीय कर्नाटक संगीत का प्रशिक्षण त्रिवेन्द्रम की आर.एल.वी. संगीत एकादमी और स्वातितिरुनल संगीत महाविद्यालय में प्राप्त किया। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन पार्श्व गायक के रूप में मलयालम फिल्म **कलपडूकल** से आरम्भ किया। उन्होंने कई भाषाओं की फिल्मों में स्वर दिया है तथा अनेक बार सर्वोत्तम पार्श्व गायक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया है।

K.J. YESUDAS received training in classical Carnatic music at the R.L.V. Music Academy in Tripunithura and the Swathithirunal College of Music in Trivandrum. He began his career in playback singing in the Malayalam film **Kalpadukal**. Since then he has sung for films in several languages and has won the national award for the best male playback singer many times.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

वाणी जयराम

पार्श्व गायिका **वाणी जयराम** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1991 का पुरस्कार **वाणी जयराम** को तेलुगु फिल्म **स्वाती किरणम्** में उनके स्वर की स्पष्टता और गहनता के लिए दिया गया है, जिससे एक बच्चे के लिए गाया शास्त्रीय गीत सजीव हो उठा।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

VANI JAYARAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Playback Singer: **VANI JAYARAM**

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1991 is given to **VANI JAYARAM** for the texture and clarity of her voice, which enlivened the classical song sung for the child prodigy in the Telugu film **SWATHI KIRANAM**.

वाणी जयराम बचपन से ही गायिका हैं और उन्होंने संगीत का प्रशिक्षण कदालूर श्रीनिवास आयंगार, सेमनगुडी श्रीनिवास अय्यर और जी.एन. बालसुब्रह्मण्यम से प्राप्त किया। आवाज की मधुरता और भावप्रवणता के कारण उन्हें कई क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

VANI JAYARAM was a child prodigy trained in Carnatic music by Kadalur Srinivasa Iyengar, Semmangudi Srinivasa Iyer and G.N. Balasubramaniam. She mastered Hindusthani music after marriage and made her debut as a playback singer in the film **Guddi**. The melodic and emotional appeal of her voice has won her numerous regional and national awards.

सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार

के.एस. नरसिम्हा स्वामी

गीतकार **के.एस. नरसिम्हा स्वामी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीतकार का 1991 का पुरस्कार **के.एस. नरसिम्हा स्वामी** को कनन्ड फिल्म **मैसूरा मल्लिगे** के गीतों की गहनता और काव्यात्मक विशेषता के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

K.S. NARASIMHA SWAMY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Lyricist: **K.S. NARASIMHA SWAMY**

Citation

The Award for the Best Lyrics of 1991 is given to **K.S. NARASIMHA SWAMY** for his work in the Kannada film **MYSOORA MALLIGE** for the depth and poetic quality of the lyrics.

के. एस. नरसिम्हा स्वामी का जन्म 1915 में कर्नाटक में किक्केरी में हुआ। वे राज्य भर में बहुत प्रसिद्ध हैं। वे आधुनिक कन्नड़ साहित्य के प्रमुख कवि के रूप में विख्यात हैं। **मैसूरा मल्लिगे** उनके प्रेम गीतों का संग्रह है, जो कन्नड़ की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना मानी जाती है। उनकी अन्य काव्य पुस्तकें हैं **इरावत, देवपद मल्ली, उंगुरा, इरूवंतिगे, शिलालाते, मनेयिन्डा मानागे, तेराडा बागिलू** और **नवपल्लव**। उन्होंने कहानी संग्रह **मरियाकल्लु, निबध संग्रह, उपवन,** और एक उपन्यास **दमयन्ती** की भी रचना की है। उन्होंने अनेक पुस्तकों का अनुवाद भी किया है। नरसिम्हा स्वामी को अनेक पुस्तकों पर राज्य और केन्द्र के अकादमी पुरस्कारों के अलावा मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट की मानद डिग्री प्रदान की गई है।

K.S. NARASIMHA SWAMY was born in 1915 in Kikkeri, Karnataka. He is a household name throughout the state. His poetry is said to show a mastery and deft handling of the spoken idiom, hence he is known as the first of the modern Kannada poets. **Mysore Mallige**, a book of love songs, is still his most popular work. His other poetic works are **Iravatha, Deepada Malli, Ungura, Iruvanthige, Shilalathe, Maneyinda Manage, Terada Bagilu** and **Navapallava**. He has also written **Mariya Kallu**, a collection of short stories, **Upavana**, a collection of essays, and **Damayanthi**, a work of fiction. He has to his credit numerous translations.

Narasimha Swamy has won both State and Central Academy Awards for his works, and he was awarded an honorary doctorate by Mysore University.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

सरोथी

निर्माता **डॉ० भबेन्द्र नाथ सैकिया** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **डॉ० भबेन्द्र नाथ सैकिया** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **सरोथी** फिल्म को एक मध्य वर्गीय परिवार के उस मुखिया के जीवन का प्रतीकात्मक और सहानुभूतिपूर्ण ढंग से चित्रण करने के लिए दिया गया है जो अपने ही घर में बेगाना-सा बना हुआ है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

SAROTHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **DR. BHABENDRA NATH SAIKIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **DR. BHABENDRA NATH SAIKIA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1991 is given to **SAROTHI** for the suggestive and sympathetic portrayal of the breadwinner of a middle-class family who stands alone and isolated even in his own home.

डॉ० भवेन्द्र नाथ सैकिया असम के जाने माने लेखक हैं। उन्हें 1976 में साहित्य अकादमी और 1981 में साहित्यिक हरनाथ घोष पदक और बंगीय साहित्य परिषद् का पुरस्कार मिला। उनके कथाचित्रों **सन्ध्याराग** (1977), **अनिर्वन** (1981), **अग्निस्नान** (1985) और **कोलाहल** (1988) को रजत कमल प्रदान किये गये और ये फ़िल्में भारत तथा विदेशों में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की गई हैं।

DR. BHABENDRA NATH SAIKIA is an accomplished and award-winning creative writer of Assam, recipient of the Sahitya Akademy Award in 1976 and the Sahityik Haranath Ghosh Medal of the Bankgiya Sahitya Parishad in 1981. His feature films **Sandhyarag** (1977), **Anirban** (1981), **Agnisnan** (1985) and **Kolahal** (1988) won the Rajat Kamal and have been screened in various international festivals in India and abroad.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

अन्तर्धान

निर्माता **नव कुमार चन्द्र, स्वप्न मित्रा** तथा **सुचेता मित्रा** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **तपन सिन्हा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **अन्तर्धान** को दिया गया है, जिसमें रहस्य की रचना और पूरी फिल्म में उसका निर्वाह सफलतापूर्वक किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

ANTARDHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers: **NABAKUMAR CHANDRA, SWAPAN KUMAR MITRA** and **SUCHETA MITRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **TAPAN SINHA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1991 is given to **ANTARDHAN** for the manner in which the suspense is built and sustained throughout the film.

नब कुमार चन्द्र अनेक व्यापारिक कम्पनियों में हिस्सेदार है तथा नबचन्द्रा प्रॅडिक्शन प्रा०लि० की स्थापना की है।

NABAKUMAR CHANDRA is a partner in several business concerns and has initiated Nabachandra Production Pvt. Ltd.

स्वप्न कुमार मित्रा का जन्म 1943 में हुआ। उन्होंने बिरला टेक्नोलोजी संस्थान से मैकेनिकल इंजीनीयरी की डिग्री हासिल की। वे साऊदरन कूलिंग टावर्स प्रा.लि. के प्रबन्ध निदेशक भी हैं।

SWAPAN KUMAR MITRA is a mechanical engineer, a graduate of the Birla Institute of Technology, and managing director of Southern Cooling Towers (P) Ltd.

सुचेता मित्रा साऊदरन् कूलिंग टावर्स प्रा०लि० में कार्यकारी निदेशक हैं। **अन्तर्धान** इन निर्माताओं की पहली फ़िल्म है।

SUCHETA MITRA is executive director of Southern Cooling Towers (P) Ltd.

Antardhan is the first venture of the producers.

तपन सिन्हा का जन्म 1924 में हुआ। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने फिल्मों का निर्देशन 1952 में प्रारम्भ किया। उन्होंने अब तक 38 फिल्में बनाई हैं और इनमें से आधी अर्थात 19 फिल्मों ने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। उनकी अनेक फिल्में बर्लिन, वीनस, मास्को, सैनफ्रांसिस्को, लोकार्नो, कार्क, कम्बोडिया और सियोल जैसे अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी पुरस्कृत हुई हैं।

TAPAN SINHA was born in 1924 and graduated in science from Calcutta University. He began directing films in 1952. He has made thirty-eight films and has won nineteen national awards. Many of his films have won awards at the international film festivals at Berlin, Venice, Moscow, San Francisco, Locarno, Cork, Cambodia and Seoul.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

दीक्षा और धारावी

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि.** और **दूरदर्शन** (दीक्षा के लिए) और **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि.** और **दूरदर्शन** (धारावी के लिए) को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **अरूण कौल** (दीक्षा के लिए) और **सुधीर मिश्र** (धारावी के लिए) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **दीक्षा** को एक समसामयिक सामाजिक विषय को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **धारावी** फिल्म को भी प्रदान किया गया है जिसमें मनुष्य की जीने की असीम और अदम्य इच्छा को चित्रित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

DIKSHA and DHARAVI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.** and **DOORDARSHAN** (for **DIKSHA**) and **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.** and **DOORDARSHAN** (for **DHARAVI**)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors: **ARUN KAUL** (for **DIKSHA**) and **SUDHIR MISHRA** (for **DHARAVI**)

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1991 is given to **DIKSHA** for the impressive treatment of a relevant social theme.

The Award for Best Feature Film in Hindi of 1991 is also given to **DHARAVI** for its affirmation of the indefatigable human spirit of survival.

अरूण कौल निर्माता या पटकथा लेखक के रूप में **एक अधूरी कहानी, भूवन शोम, इंटरव्यू, अंधी गली, इजाज़त** और **लेकिन** फिल्मों से सम्बद्ध रहे हैं। वे फिल्म सोसायटी आन्दोलन के नेता रहे हैं और सिनेमा पत्रिका क्लोज-अप के सम्पादक रहे हैं।

ARUN KAUL has been associated with **Ek Adhuri Kahani, Bhuvan Shome, Interview, Andhi Gali, Ijaazai** and **Lekin** in the capacity of producer or screenplay writer. He has been a leader of the film society movement, and edited **Close-up**, a magazine on cinema.

सुधीर मिश्र ने विनोद चोपड़ा, कुन्दन शाह, और सईद मिर्जा के साथ मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है। स्वतन्त्र रूप से निर्देशित उनकी पहली फ़िल्म थी **यह वो मंजिल तो नहीं**। उनकी दूसरी फ़िल्म **मैं ज़िन्दा हूं** को मध्य वर्ग की कामकाजी महिलाओं के चित्रण के लिए 1988 का सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मिला।

SUDHIR MISHRA has worked as Chief Assistant Director with Vinod Chopra, Kundan Shah and Saeed Mirza. His first independent film was **Yeh Woh Manzil To Nahin**. His second feature film, **Main Zinda Hoon**, won the 1988 national award for best feature film on social issues for its portrayal of the middle-class working woman.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

मैसूरा मल्लिगे

निर्माता **श्रीहरि एल. खोडे** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **टी.एस. नागभरण** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **मैसूरा मल्लिगे** को प्रसिद्ध कन्नड़ कवि के.एस. नरसिम्हा स्वामी की कविताओं के आधार पर फिल्म की कल्पना और उसे साकार करने के साहसपूर्ण प्रयास के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

MYSOORA MALLIGE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **SRIHARI L. KHODAY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **T.S. NAGABHARANA**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1991 is given to **MYSOORA MALLIGE** for the bold attempt in conceiving and structuring a film stringing together poems written by the renowned Kannada poet K.S. Narasimha Swamy.

खोडे उद्योग समूह के प्रबन्ध निदेशक **श्रीहरि एल. खोडे** ने **शान्ता शिशुनाला शरीफ** फिल्म का निर्माण किया, जिसे 1990 में राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

SRIHARI L. KHODAY, Managing Director of the Khoday Group of Industries, produced **Santha Shishunala Shareefa**, which won the national award for the best film on national integration in 1990.

टी.एस. नागभरण की पहली फिल्म **ग्रहण** को 1978 में राष्ट्रीय एकता के सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मिला। उन्होंने 1980 में **अन्वेषण**, 1984 में **बंकिर मृगया**, 1988 में **शान्ता शिशुनाला शरीफ** फिल्में बनाईं। इन फिल्मों को अनेक क्षेत्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उन्होंने टेलीविजन सीरियल **तेनालीरामा** का भी निर्देशन किया है।

T.S. NAGABHARANA's first feature film, **Grahana**, won the national award for the best feature film on national integration in 1978. His later films, **Anveshane** (1980), **Banker Margaya** (1984), **Aasphota** (1988) and **Santha Shishunala Shareefa** (1989), won regional and national awards. Nagabharana has also directed the television series **Tenali Rama**.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

कडावु

निर्माता एम.टी. **वासुदेवन नायर** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक एम.टी. **वासुदेवन नायर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **कडावु** को दिया गया है जिसमें ग्रामीण जीवन का चित्रण बड़ी सहजता और सादगी से किया गया है तथा मानव मूल्यों और सम्बन्धों को पूरा महत्व दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

KADAVU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **M.T. VASUDEVAN NAIR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **M.T. VASUDEVAN NAIR**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 1991 is given to **KADAVU** for its simplicity of treatment in the delineation of rural life with a genuine feel for human values and relationships.

एम.टी. वासुदेवन नायर केरल के फ़िल्म प्रेमियों में एम.टी. के नाम से विख्यात हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें, कहानियां और उपन्यास लिखे हैं। उन्हें साहित्य अकादमी तथा अन्य अनेक साहित्यिक पुरस्कार मिले हैं। वे 1966 से फ़िल्मों की पटकथायें लिख रहे हैं। उनकी कई फ़िल्में उनकी अपनी कहानियों पर आधारित हैं। उनकी प्रथम फ़िल्म **निर्मालयम** को 1973 में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक मिला। वे तीन पत्रिकाओं का सम्पादन भी करते हैं।

M.T. VASUDEVAN NAIR, known as M.T. to filmgoers in Kerala, has written books, short stories and novels and has won numerous literary awards, including the Central Sahitya Akademy Award. He has been a screenplay writer since 1966. Many of his films are based on his own stories. His first film, **Nirmalyam**, won the President's Gold Medal in 1973. He also edits three periodicals in Kerala.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

तारा

निर्माता **विजया जेना** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **विजया जेना** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **तारा** फिल्म को प्रदान किया गया है, जिसमें पुरूष शासित समाज में अपनी पहचान को तलाशने वाली एक महिला के चरित्र को सचाई और निष्ठा के साथ चित्रित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

TARA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **BIJAYA JENA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BIJAYA JENA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya of 1991 is given to **TARA**, which is marked by its sincerity in truthfully portraying a woman's search for her identity in a male-dominated society.

विजया जेना ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से अभिनय में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने 6 उड़िया फ़िल्मों, कुछ हिन्दी फिल्मों तथा टेलीविजन नाटकों में काम किया है। उन्होंने ब्रिटेन में इस्माइल मर्चेन्ट द्वारा बनाई गई फ़िल्म **दि डिसीवर्स** में भी भूमिका निभाई। **जागा बलिया** फिल्म में अभिनय के लिए उन्हें सर्वोत्तम अभिनेत्री का उड़ीसा राज्य पुरस्कार प्रदान किया गया। **तारा** फिल्म की निर्माता और निर्देशक के साथ-साथ वे अभिनेत्री और सह-लेखिका भी हैं।

BIJAYA JENA holds a diploma in film acting from the FTII, Pune. She has acted in six Oriya films as well as in some Hindi films and television dramas. She played a role in Ismail Merchant's **The Deceivers**, a British production. She received the Orissa State Award for Best Actress for her role in **Jaga Balia**. She is involved in **Tara** as a producer, director, co-writer and actress.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

वन्ना वन्ना पूक्कल

निर्माता **एस. धानु** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **बालु महेन्द्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **वन्ना वन्ना पूक्कल** को ऐसे किशोर-प्रेम का सच्चा और प्रभावशाली चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है जिसका अंत अप्रत्याशित रूप से दुखद होता है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

VANNA VANNA POOKKAL

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **S. DHANU**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BALU MAHENDRA**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Tamil of 1991 is given to **VANNA VANNA POOKKAL** for the truthful and effective portrayal of juvenile romance ending in unexpected tragedy.

एस.धनु ने फ़िल्म उद्योग में 1976 में वितरक के रूप में प्रवेश किया। अपने व्यवसाय में सफलता से प्रोत्साहित होकर उन्होंने निर्माण के क्षेत्र में हाथ आज़माने का फैसला किया। 1985 में उनकी पहली फ़िल्म **यार** बाक्स आफिस पर सफल रही। अपनी अगली फ़िल्म **नल्लवन** के लिए उन्होंने कहानी, पटकथा, संवाद और गीत भी लिखे।

उन्होंने **पुदुप्पडगन** फ़िल्म का निर्देशन किया और साथ ही उसकी कहानी, पटकथा, संवाद, गीत लिखने के अलावा संगीत निर्देशन किया। **वन्ना वन्ना पूक्कल** धनु की छठी फ़िल्म है।

S. DHANU entered the film industry as a distributor in 1976. His success encouraged him to go into production, with the film **Yaar** (1985), a box office hit. For his later venture **Nallavan**, he wrote the story, screenplay, dialogues and lyrics as well. He directed **Pudhuppadagan**, for which he also wrote the story, screenplay, dialogues and lyrics and scored the music. **Vanna Vanna Pookkal** is Dhanu's sixth venture.

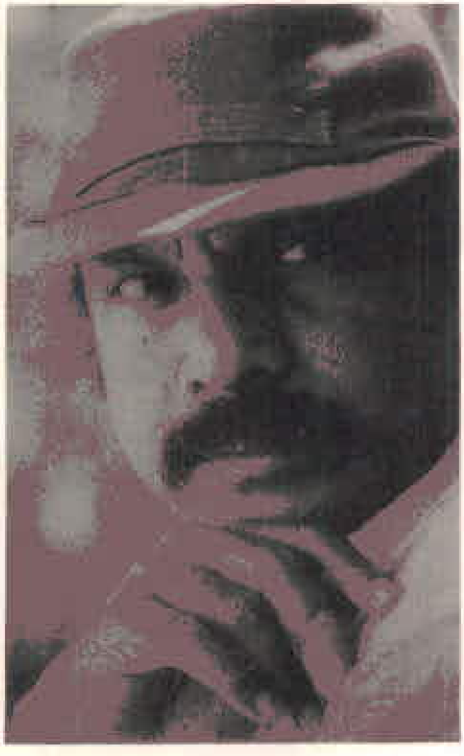

बालू महेन्द्रा ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से छायांकन में स्वर्ण पदक के साथ डिप्लोमा किया। उन्होंने रामू करियत, पी.एन.मेनन, बापू और के. विश्वनाथ जैसे निर्देशकों के साथ छायाकार के रूप में कार्य किया। 1976 से वे फ़िल्मों का निर्देशन कर रहे हैं। वे अपने फ़िल्मों की पटकथा, सम्पादन और छायांकन भी करते हैं। उन्हें दो बार सर्वोत्तम छायांकन के लिए दो बार सर्वोत्तम निर्देशन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। केरल, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडू में सर्वोत्तम छायांकन के लिए अनेक राज्य पुरस्कारों के अलावा वे तीन बार सर्वोत्तम निर्देशन के लिए फ़िल्म फेयर पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं।

उन्होंने कन्नड, तमिल, मलयालम, तेलुगू और हिन्दी में फिल्मों का निर्देशन किया है।

BALU MAHENDRA is a graduate in cinematography and a gold medallist from the FTII, Pune. He worked as a cinematographer with the directors Ramu Kariat, P.N. Menon, Bapu and K. Viswanath. Since 1976 he has been directing films, for which he also writes, edits and photographs. He has twice won the national award for best cinematographer and twice for best director. He has won state awards for best cinematography in Kerala, Andhra Pradesh and Tamil Nadu and has won the Filmfare Award for best direction three times.

Balu Mahendra has directed films in Kannada, Tamil, Malayalam, Telugu and Hindi.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

भद्रम कोडुको

निर्माता **वी. रामचन्द्र राव** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक ए. **कुटुम्ब राव** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **भद्रम कोडुको** को बेघर बच्चों को संरक्षण प्रदान करने की आवश्यकता की ओर प्रभावशाली ढंग से ध्यान खींचने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

BHADRAM KODUKO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **V. RAMACHANDRA RAO**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **A. KUTUMBA RAO**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Telugu of 1991 is given to **BHADRAM KODUKO** for effectively focussing attention on the need for providing protection to homeless children.

वी. रामचन्द्र राव ने विज्ञान, कला तथा भाषाशास्त्र का अध्ययन किया है। वे विकास भारती एजूकेशनल फाउंडेशन के अध्यक्ष तथा स्वच्छ फिल्मस् लि० के प्रबन्ध निदेशक हैं।

V. RAMACHANDRA RAO has studied science, arts and linguistics. He is chairman of the Vikasa Bharati Educational Foundation and Managing Director of Swatcha Films Pvt. Ltd.

ए. कुटुम्ब राव ने अनेक उपन्यास और कहानियां लिखी हैं। वे टीवी फिल्मों के लिए कहानी, पटकथा तथा संवाद भी लिखते रहे हैं। उन्हें नाटकों के निर्देशन और अभिनय का 15 वर्ष का अनुभव प्राप्त है। **भद्रम कोडुको** तेलुगु में उनका पहला कथाचित्र है।

AKKINENI KUTUMBA RAO is a writer of novels and short stories in Telugu as well as story, screenplay, and dialogues for television films. He has fifteen years of stage experience as director and actor. **Bhadram Koduko** is his first feature film in Telugu.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नरगिस दत्त पुरस्कार

आदि मीमांसा (उड़िया)

निर्माता **ए.के.बीर** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **ए.के.बीर** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **आदि मीमांसा** को प्रदान किया गया है, जिसमें रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं का गहरी सूझ-बूझ के साथ चित्रण करते हुए मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा की गई है और एकता का संदेश दिया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

ADI MIMANSA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **A.K. BIR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **A.K. BIR**

Citation
The Award for the Best Feature Film on National Integration of 1991 is given to **ADI MIMANSA** for its strong appeal for integration and upholding of human values brought about through a remarkably understated treatment of incidents from everyday life.

ए.के.बीर ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने अनेक विज्ञापन फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा कथाचित्रों का छायांकन किया है। इनमें से अनेक फिल्मों को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए है। उन्होंने टेलीविजन के लिए भी काफी काम किया है।

A.K. BIR is a graduate in cinematography from the FTII, Pune. He is based in Bombay and has been involved as cinematographer in several advertising, documentary and feature films, many of which have received regional, national and international awards. He has also done extensive work for television.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र

दुर्गा (हिन्दी)

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **बासु चटर्जी** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **दुर्गा** को प्रदान किया गया है, जिसमें छोटे परिवार के सिद्धान्त का संदेश अत्यन्त कुशलता के साथ लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

DURGA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **BASU CHATTERJI**

Citation
The Award for the Best Film on Family Welfare of 1991 is given to the Hindi film **DURGA** for the skillful way in which the message of the small family norm is communicated.

बासु चटर्जी ब्लिट्ज पत्रिका में राजनीतिक कार्टूनकार के रूप में काम करते थे। उन्होंने फ़िल्म फोरम संस्था के निर्माण में योगदान किया जो 1960 और 1970 के दशकों में सबसे बड़ी और अधिक सक्रिय फिल्म संस्था थी। 1970 में अपनी फ़िल्म **सारा आकाश** से उन्हें काफी ख्याति मिली। उन्होंने अनेक कथाचित्र, टीवी सीरियल तथा टेली फ़िल्मों का निर्माण किया और इन सब में उन्होंने उद्देश्यपूर्ण तथा अच्छी फ़िल्में बनाने की अपनी ख्याति को बरकरार रखा है।

BASU CHATTERJI, a political cartoonist for **Blitz**, worked to build up Film Forum, the largest and most active film society of the late sixties and early seventies. His first film, **Sara Akash** (1970), won him renown and throughout his work on feature films, television serials, and telefilms his name has been associated with a sincerity of purpose and with good cinema.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

यमनम (मलयालम)

निर्माता **अजयन वरीकोलिल** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **पद्मश्री भारत गोपी** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध महिला और बाल कल्याण, दहेज, नशीले पदार्थ और विकलांग कल्याण जैसे सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **यमनम** को शारीरिक रूप से विकलांग लोगों के पक्ष को प्रस्तुत करने तथा ऐसे संसार में अपनी इच्छा से जीने के उनके अधिकार का समर्थन करने के लिए दिया गया है, जहां उनके प्रति सद्भाव कम और सहानुभूति अधिक है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

YAMANAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **AJAYAN VARICOLIL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **PADMASHRI BHARAT GOPY**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, and Welfare of the Handicapped of 1991 is given to the Malayalam film **YAMANAM** for advocating the cause of the physically handicapped and upholding their right to be on their own, in a world that is more generous with its sympathy than understanding.

अजयन वारिकोलिल ने विज्ञान और इंजीनियरी में डिग्री तथा वित्त प्रबन्ध में डिप्लोमा किया है । उन्होंने कई कहानियां लिखी है और कला तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में वे सक्रिय हैं । **यमनम** उनकी पहली फिल्म है।

AJAYAN VARICOLIL is a graduate in science and engineering and holds a diploma in finance management. He is the author of many short stories and is actively associated with arts and cultural movements. **Yamanam** is his maiden venture into film production.

भरत गोपी ने 1960 में नाटकों में काम शुरू किया और कई पुरस्कार प्राप्त किये । 1972 में वे फिल्मों में अभिनय करने लगे । उन्हें **स्वयंवरम्** फिल्म में अभिनय के लिए स्वर्ण पदक तथा **कोडियेट्टम** फिल्म में अभिनय के लिए भरत पुरस्कार प्रदान किया गया। केरल सरकार की ओर से उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता के अनेक पुरस्कार मिले । 1985 में टोकियो एशिया प्रशान्त फिल्म समारोह में उन्हें सर्वोत्तम अभिनय के लिए निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार दिया गया । निर्देशक के रूप में **यमनम** उनकी दूसरी फिल्म है ।

BHARAT GOPY began his award-winning career in theatre in 1960. He started acting in films in 1972. He has won the Gold Medal for his performance in **Swayamvaram** and the Bharat Award for **Kodiyettam** as well as numerous best actor awards from Kerala. He won the special jury award for best acting in the Asia Pacific Film Festival in Tokyo in 1985. **Yamanam** is his second directorial venture.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

अभयम (मलयालम)

निर्माता **भारतीय बालचित्र समिति** को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **शिवन** को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **अभयम** को प्रदान किया गया है जो बच्चों और बड़ों दोनों का एक साथ मनोरंजन करने की क्षमता रखती है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

ABHAYAM

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **SIVAN**

Citation
The Award for the Best Childern's Film of 1991 is given to the Malayalam film **ABHAYAM** for its outstanding qualities as a film that entertains children and adults alike.

शिवन का जन्म 1938 में केरल में ऐसे परिवार में हुआ, जो शास्त्रीय और कला के क्षेत्र में काफी अग्रणी माना जाता था। उन्होंने फोटो पत्रकार के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन आरम्भ किया और रंगमंच के बारे में अध्ययन किया। 1972 में उनकी पहली फिल्म **स्वप्नम** को राज्य स्तर के 4 पुरस्कारों के अलावा फिल्म फेयर पुरस्कार मिला। 1982 में उनकी फिल्म **यागोम** ने सर्वोत्तम कथाचित्र, सर्वोत्तम निर्देशन तथा सर्वोत्तम छायांकन के पुरस्कार अर्जित किये। 1990 में उनकी फिल्म **मोहिनीयट्टम** को सर्वोत्तम छायांकन और सर्वोत्तम संपादन के पुरस्कार मिले।

SIVAN was born in 1938 into a Kerala family well known for its wealth of classical music and art. He began his career as a photojournalist and studied theatre. His first feature film, **Swapnam** (1972), won four state awards and a Filmfare Award. **Yagom** (1982) won awards for best film, best director and best photography. **Mohiniyattam** (1990) won awards for best cinematography and editing.

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

सौमित्र चटर्जी

सौमित्र चटर्जी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल ने बंगला फ़िल्म **अन्तर्धान** के मुख्य कलाकार और प्रख्यात अभिनेता सौमित्र चटर्जी को फ़िल्मों, खासकर सत्यजीत राय की फ़िल्मों में श्रेष्ठ अभिनय के लिए अपना विशेष पुरस्कार प्रदान किया है।

SPECIAL JURY AWARD

SOUMITRA CHATTERJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to **SOUMITRA CHATTERJEE**

Citation

The Jury wishes to single out the veteran actor **SOUMITRA CHATTERJEE**, the lead actor of the Bengali film **ANTARDHAN**, for his outstanding screen performances, especially in the films of Satyajit Ray.

सौमित्र चटर्जी सत्यजीत राय की खोज हैं। उनका जन्म 1935 में हुआ। उन्होंने राय की 14 फिल्मों में काम किया है, जिनमें **अपूर संसार, समाप्ति, सोनार केला, जय बाबा फेलुनाथ, शाखा प्रशाखा, अभिजान** और **चारूलता** शामिल हैं। उन्होंने **खुदिता पाषाण, ज़िंदेर बांधी, आंतक** तथा तपन सिन्हा की कई अन्य फिल्मों में भी अभिनय किया है। वे 150 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं।

SOUMITRA CHATTERJEE, born in 1935, was a discovery of Satyajit Ray's. He has acted in fourteen of Ray's films, including **Apu Sansar**, **Samapti**, **Sonar Kella**, **Joy Baba Felunath**, **Shakha Proshakha**, **Abhijan** and **Charulata**. He has also acted in **Khudita Pasan**, **Zinder Bandhi**, **Atanka** and many other films by Tapan Sinha, in a career that spans over 150 films.

विशेष उल्लेख

ममता शंकर

निर्णायक मण्डल ने बंगला फिल्म **आगन्तुक** में एक गृहिणी की भूमिका निभाने के लिए **ममता शंकर** का विशेष उल्लेख किया है।

रवीन्द्रन

निर्णायक मण्डल ने मलयालम फिल्म **भारतम्** के गीतों के लिए **रवीन्द्रन** के संगीत के ऊंचे स्तर का भी विशेष उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

MAMATA SHANKAR

The Jury wishes to make a special mention of **MAMATA SHANKAR** for her performance as the housewife in the Bengali film **AGANTUK**.

RAVINDRAN

The Jury wishes to make a special mention of the quality of music composed by **RAVINDRAN** for the song in the Malayalam film **BHARATHAM**.

ममता शंकर उदय शंकर और अमला शंकर की बेटी है। उन्होंने कलकत्ता से उदय शंकर भारतीय संस्कृति केन्द्र में संगीत की शिक्षा प्राप्त की। मृणाल सेन, बुद्धदेब दासगुप्ता, गौतम घोष और सत्यजीत राय की फिल्मों में उनका अभिनय काफी सराहा गया है। उन्होंने बंगला तथा अन्य भाषाओं की 40 से अधिक फिल्मों में काम किया है।

MAMATA SHANKAR is the daughter of Uday and Amala Shankar. She studied dance at the Uday Shankar Indian Culture Centre in Calcutta. Her roles in the films of Mrinal Sen, Buddhadeb Dasgupta, Gautam Ghosh, and Satyajit Ray have drawn attention and applause. She has acted in more than forty films in Bengali and other languages.

रवीन्द्रन का जन्म 1943 में केरल में कुलतुपूजा में हुआ। उन्होंने संगीत की शिक्षा स्वात्तितिरूनल संगीत एकादमी में प्राप्त की। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन पार्श्व गायक के रूप में आरम्भ किया और मलयालम फिल्म **चूला** से वे संगीत दिर्नेशक बन गये। वे सभी दक्षिण भारतीय भाषाओं की 150 से अधिक फिल्मों में संगीत दे चुके हैं। 1990 में **हिजहाईनेस अब्दुल्ला** में संगीत निर्देशन के लिए उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

RAVINDRAN was born in 1943 in Kulathupuzha, Kerala, and studied music at the Swathithirunal Music Academy. He began his film career as a playback singer and later was music director for the Malayalam film **Choola**. He has composed music for more than 150 films in all the South Indian languages. He received the Filmfare Award in 1990 for his work in **His Highness Abdullah**.

पुरस्कार जो नहीं दिये गये

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान नहीं किये :

1. सर्वोत्तम विशेष प्रभाव
2. सर्वोत्तम नृत्य कला
3. संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार
4. पर्यावरण / संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार
5. लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार
6. सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र पुरस्कार
7. सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार
8. सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र पुरस्कार

निम्नलिखित भाषाओं में प्रविष्टियां प्राप्त नहीं हुईं:

1. कश्मीरी
2. संस्कृत
3. सिन्धी
4. उर्दू

AWARDS NOT GIVEN

The Feature Film Jury did not give the following awards:

1. Best Special Effects
2. Best Choreography
3. Best Feature Film in Each of the Languages Other than Those Specified in Schedule VIII of the Constitution.
4. Best Film on Environment/Conservation/Preservation
5. Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
6. Best Feature Film in Gujarati
7. Best Feature Film in Marathi
8. Best Feature Film in Punjabi

ENTRIES NOT RECEIVED IN THE FOLLOWING LANGUAGES:

1. Kashmiri
2. Sanskrit
3. Sindhi
4. Urdu

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

सन्स ऑफ अबोतानी : द मिसिंग

निर्माता **दिलीप डोले** को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **गौतम बोरा** को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **सन्स ऑफ अबोतानी : द मिसिंग** को प्रदान किया गया है, जिसमें ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसी एक जनजाति के जीवन और अस्तित्व के लिए उनके संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से फिल्माया गया है। इस फ़िल्म की अन्य विशेषतायें हैं: लयात्मकता, मधुर ध्वनि और कल्पनाशील संगीत।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

SONS OF ABOTANI: THE MISINGS

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer: **DILIP DOLEY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **GAUTAM BORA**

Citation
The Award for the Best Non-Feature Film of 1991 is given to the film **SONS OF ABOTANI: THE MISINGS**, which effectively portrays the life of a tribe living on the banks of the river Brahmaputra and its struggle to survive. The film is marked by its lyrical quality, serenity, sculpted sound and imaginative music.

दिलीप डोले का जन्म 1951 में हुआ। उन्होंने 1976 में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वे बहुत लोकप्रिय लोक गायक तथा संगीतकार हैं। **सन्स ऑफ अबोतानी : द मिसिंग** उनकी पहली फ़िल्म है।

DILIP DOLEY was born in 1951 and graduated from Dibrugarh University in 1976. He is a popular folk singer and composer in Assam. **The Sons of Abotani** is his first film venture.

गौतम बोरा ने जर्मनी के कोनराड वर्ल्ड इन्स्टीच्यूट से फ़िल्म और टेलीविजन निर्देशन में डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने **प्रथम रागिनी** फ़िल्म के सह निर्देशक और **अग्निस्नान** के सहायक निर्देशक के रूप में काम किया और इन दोनों फ़िल्मों को रजत कमल मिला। स्वतन्त्र रूप से बनाई गई उनकी पहली फ़िल्म **वोसोबिपो** को निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फ़िल्म के लिए स्वर्ण कमल मिला और उसे कई अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में भी भेजा गया।

GAUTAM BORA holds a degree in film and television direction from Konrad World Institute, Germany. He worked as associate director on **Pratham Ragini** and as assistant director on **Agnisnan**, both of them winners of the Rajat Kamal. His first independent feature film was **Wosobipo**, which won the Swarna Kamal in the debut film category and was entered in international film festivals.

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

कमलाबाई (हिन्दी)

निर्माता **रीना मोहन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **रीना मोहन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र का 1991 का पुरस्कार **रीना मोहन** को उनकी फिल्म **कमलाबाई** के लिए दिया गया है। निर्देशक ने भारतीय सिनेमा की प्रथम अभिनेत्री और बहुमुखी प्रतिभा वाली मंच कलाकार के जीवन को मार्मिक तथा संवेदनशील शैली में प्रस्तुत किया है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

KAMLABAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **REENA MOHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **REENA MOHAN**

Citation
The Award for the First Non-Feature Film of a Director is given to **REENA MOHAN** for the film **KAMLABAI**. The director has presented a sensitive and heartwarming portrait of a remarkable woman who was the first lady of the Indian screen and a versatile stage actress.

रीना मोहन ने भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान से संपादन में विशेषज्ञता के साथ डिप्लोमा प्राप्त किया। उसके बाद से वे दिल्ली व बम्बई में स्वतन्त्र रूप से फिल्म संपादन करती रही हैं। निर्देशक के रूप में **कमलाबाई** उनकी पहली फ़िल्म है।

REENA MOHAN graduated from the Film and Television Institute of India, Pune, with specialisation in editing. Since then she has worked in Delhi and Bombay as a freelance editor. **Kamlabai** is her first directorial venture.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म पुरस्कार

दि वेलिएन्ट वन्स (अंग्रेजी)

निर्माता ए.के. **बालकृष्णन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक ए.के. **बालकृष्णन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **द वेलिएन्ट वन्स** को कर्नाटक में कुर्ग क्षेत्र के एक विशिष्ट समुदाय कोडागु की परम्परागत जीवन शैली को निपुणता के साथ चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ETHNOGRAPHIC FILM

THE VALIANT ONES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **A.K. BALAKRISHNAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **A.K. BALAKRISHNAN**

Citation
The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1991 is given to **THE VALIANT ONES** for competently presenting the traditional lifestyle of Kodagus, a distinctive community of Coorga in Karnataka.

ए.के. बालकृष्णन ने भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन तथा पटकथा लेखन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने मलयालम की अनेक पुरस्कृत फिल्मों के सह निर्देशक के रूप में काम किया। 1983 से वे नई दिल्ली के केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलोजी संस्थान के लिए शैक्षिक फ़िल्मों का निर्माण कर रहे हैं।

A. K. BALAKRISHNAN is a graduate from the FTII, Pune, in direction and screenplay writing. He worked as associate director for some award-winning films in Malayalam. Since 1983 he has been producing educational films for the Central Institute of Educational Technology, New Delhi.

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म पुरस्कार

भावांतरण (उड़िया) और कबितार अनंत जात्रा पथे (बंगला)

निर्माता **मैसर्स बॉम्बे सिनेमाटोग्राफ प्रा॰ लिमिटेड** (भावांतरण के लिए) और **पश्चिम बंगाल सरकार सरकार के सूचना और संस्कृति विभाग** (कबितार अनंत जात्रा पथे के लिए) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **कुमार शाहनी** (भावांतरण के लिए) तथा **सनत कुमार दासगुप्ता** (कबितार अनंत जात्रा पथे के लिए) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तमं जीवनी फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **भावांतरण** को गुरू केलुचरण महापात्र के जीवन तथा कला को विशिष्ट शैली में चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **कबितार अनंत जात्रा पथे** को भी दिया गया है, जिसमें स्वर्गीय जीवनानन्द दास के काव्य को उनके जीवन और युग के साथ जोड़ते हुए कल्पनाशील ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

BHAVANTARANA and KABITAR ANANTA JATRAPATHE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **BOMBAY CINEMATOGRAPH PVT. LTD.** (for **BHAVANTARANA**) and **DEPT. OF INFORMATION AND CULTURAL AFFAIRS,** Government of West Bengal (for **KABITAR ANANTA JATRAPATHE**)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors: **KUMAR SHAHANI** (for **BHAVANTARANA**) and **SANAT KUMAR DASGUPTA** (for **KABITAR ANANTA JATRAPATHE**)

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1991 is given to **BHAVANTARANA** for presenting the life and art of Guru Kelucharan Mahapatra in a distinct stylised manner. The Award for the Best Biographical Film of 1991 is also given to **KABITAR ANANTA JATRAPATHE** for imaginative visualisation of the poetry of the late Jibananand Das and relating it to his life and time.

कुमार शाहनी ने अपने प्रथम कथाचित्र **मायादर्पण** (1972) से ही अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली। उनकी फिल्म **ख्याल गाथा** (1989) को रोटेर्डम में फिपरेसी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में फीचर फिल्मों के अलावा वृत्तचित्रों तथा शैक्षिक फिल्मों का निर्माण किया है।

KUMAR SHAHANI's debut feature, **Maya Darpan** (1972), brought him international recognition. His **Khayal Gatha** (1989) won the FIPRESCI Award at Rotterdam. He has made several feature films in Hindi and English as well as documentary and educational films.

सनत कुमार दासगुप्ता ने अनेक वृत्तचित्रों का निर्देशन व निर्माण किया है। उन्होंने पुरस्कृत फिल्मों **माँ भूमि (तेलुगु)** और **दखल** (बंगला) के सह-निर्देशक के रूप में काम किया। उन्होंने बंगला में एक काव्य पुस्तक की रचना भी की है।

SANAT KUMAR DASGUPTA has directed and produced numerous documentaries. He was associate director of the award-winning **Maa Bhoomi** (Telugu) and **Dakhal** (Bengali). He is also the author of a book of poems in Bengali.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार

संचारी (अंग्रेजी)

निर्माता **अरूण खोपकर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **अरूण खोपकर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **संचारी** फ़िल्म को प्रदान किया गया है जिसमें लीलासैमसन की कला की अभिव्यक्ति के माध्यम से भरतनाट्यम की शैली और विषय का अविस्मरणीय प्रस्तुतीकरण किया गया है तथा नृत्य और फ़िल्म की भाषा को एक दूसरे से जोड़ने का सुन्दर प्रयास किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

SANCHARI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **ARUN KHOPKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ARUN KHOP-KAR**

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural film of 1991 is given to **SANCHARI** for a memorable presentation of form and content of the Bharatnatyam dance through the exposition of Leela Samson's art, brilliantly synthesising dance and cinematographic language.

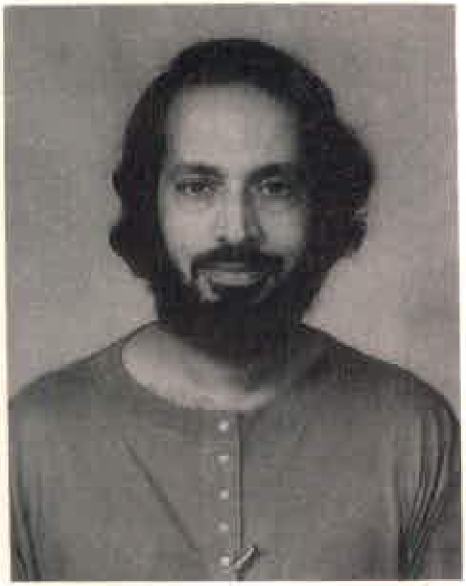

अरूण खोपकर ने फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उनकी फिल्में **फिगर्स ऑफ थॉट** (1991) और **टोबेको हेबिट्स एण्ड ओरल कैंसर** ने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। उनकी पुस्तक **गुरूदत्त : तीन अंकी शोकांतिका** (1986) को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

ARUN KHOPKAR is a diploma holder in film direction from the FTII. He has won national awards for his films **Figures of Thought** (1991) and **Tobacco Habits and Oral Cancer** (1978) and for his book **Guru Dutt: Teen Anki Shokantika** (1986).

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म पुरस्कार

साइलेन्ट वैली - एन इंडियन रेनफोरेस्ट (अंग्रेजी)

निर्माता **इको मीडिया प्रा० लिमिटेड** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **शेखर दत्तात्री** और **रेवती मुखर्जी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **साइलेन्ट वैली-एन इंडियन रेनफोरेस्ट** को परिस्थिति वैज्ञानिक विरासत तथा पर्यावरण के लिए खतरे की समस्या को बड़े परिश्रम के साथ प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM

SILENT VALLEY—AN INDIAN RAINFOREST

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,00,00 to the Producer: **ECO MEDIA (P) LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors: **SHEKAR DATTATRI and REVATI MUKHERJEE**

Citation
The Award for the Best Scientific (Environment/Ecology) Film of 1991 is given to the film **SILENT VALLEY** for its painstaking and inspiring presentation of the ecological heritage and the threat to the environment.

शेखर दत्तात्री फ़िल्म निर्देशक, छायाकार और संपादक के रूप में काम करते हुए पर्यावरण सम्बन्धी शिक्षा से बहुत गहराई से जुडे हुए हैं। 1986 के बाद से उन्होंने पर्यावरण सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर 6 वृत्तचित्र बनाये हैं और दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वे सरिसृप विज्ञान में भी रुचि रखते हैं और वन्य जीवन के छायाकार और चित्रकार हैं।

SHEKAR DATTATRI, director, cinematographer and film editor by profession, is deeply involved with environmental education. He has made six documentaries since 1986 on various environmental themes and won two national awards. He is also a keen herpetologist and a wildlife photographer and illustrator.

रेवती मुखर्जी भी वन्य जीवन में गहरी रुचि लेती है। वे निर्देशक और फ़िल्म संपादक के रूप में काम करती हैं और 1986 के बाद से उन्होंने पर्यावरण सम्बन्धी विषयों की 5 फ़िल्मों का सम्पादन किया है।

REVATI MUKHERJEE is equally interested in wild life. She works as director and film editor and has edited five films on environmental subjects since 1986.

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म पुरस्कार

मुदियाली एकती बिकल्प पंथा (अंग्रेजी)

निर्माता **दिलीप कुमार राय** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **समीरन दत्ता** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का 1991 का पुरस्कार **मुदियाली एकती बिकल्प पंथा** को पर्यावरण के संरक्षक तथा सुधार के काम में लोगों की सहभागिता को निष्ठा के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/CONSERVATION/PRESERVATION FILM

MUDIALY EKTI BIKALPA PANTHA (THE MUDIALY ALTERNATIVE)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **DILIP KUMAR ROY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SAMIRAN DUTTA**

Citation
The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation film of 1991 is given to **MUDIALY EKTI BIKALPA PANTHA** for faithfully presenting people's participation in improving and conserving the environment.

दिलीप कुमार राय ने दामोदर वैली कारपोरेशन में मृदा संरक्षण के उप-निदेशक के रूप में काम किया है। वे पर्यावरण सम्बन्धी नियोजन और संरक्षण गतिविधियों में भी सक्रिय रहे हैं।

DILIP KUMAR ROY has served in the Damodar Valley Corporation as Deputy Director of Soil Conservation and worked in environmental planning and conservation activities.

समीरन दत्ता फिल्म प्रभाग के भूतपूर्व निर्देशक व निर्माता हैं। 150 से अधिक वृत्तचित्र बना चुके हैं और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।

SAMIRAN DUTTA, former director and producer for the Films Division, Government of India, has made more than 150 documentary films and won many international awards.

प्रोत्साहन देने वाली सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

ऑफ माइन्स एण्ड मेन (अंग्रेजी)

निर्माता **पी.सी. शर्मा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **रघु कृष्ण** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

प्रोत्साहन देने वाली (पर्यटन, निर्यात, शिल्प, उद्योग आदि सहित) सर्वोत्तम फिल्म का 1991 का पुरस्कार **ऑफ माइन्स एण्ड मेन** को दिया गया है, जिसमें भारतीय खान ब्यूरो के सभी पहलुओं तथा पर्यावरण के प्रति उसकी चिन्ता को कुशलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM

OF MINES AND MEN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **P.C. SHARMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **RAGHU KRISHNA**

Citation

The Award for the Best Promotional Film (to cover Tourism, Exports, Crafts, Industry, etc.) of 1991 is given to the film **OF MINES AND MEN** for presenting the work of the Indian Bureau of Mines in all its aspects including its concern for the environment in a competent manner.

पी.सी. शर्मा फिल्म प्रभाग में निर्माता है। उन्होंने निर्देशक के रूप में सबसे पहले एक मिनट की लघु फिल्म **नेव कंटैक्ट** बनाई, जिसे शिकागो अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में उच्चत्तम उपलब्धि का प्रमाण पत्र मिला। फिल्म प्रभाग में आने के बाद उनकी फिल्मों को पुरस्कार मिले उनमें **पम्पा, प्रेमचन्द, क्लोजिंग द डोर, अगेंस्ट, लेप्रोसी** और **क्वाइटली डाइज़, बसुन्धरी** शामिल है।

P.C. SHARMA, Producer, Films Division, Bombay, made his directorial debut with a one-minute short, Naive Contact, which won the certificate of highest achievement during the Chicago International Film Festival. Among the award-winners he has made after joining the Films Division are **Pampa, Prem Chand, Closing the Door against Leprosy** and **And Quietly Dies Vasundhary**.

रघु कृष्ण ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने फिल्म प्रभाग के लिए 20 से अधिक वृतचित्रों का निर्देशन किया है। प्रसिद्ध कार्टूनकार शंकर के बारे में उनकी जीवनी फिल्म **द डेविल ऑफ दिल्ली** को 1988 में त्रिवेन्द्रम फिल्मोत्सव के भारतीय पैनोरमा वर्ग के लिए चुना गया था।

RAGHU KRISHNA holds a diploma in cinema from the FTII, Pune, and has directed over twenty documentaries for the Films Division. **The Devil of Delhi**, a biographical film on the cartoonist Shankar, was selected for the Indian Panorama Section of the Trivandrum Filmotsav 1988.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार

मुलबेरियम पट्टुनूलम (मलयालम)

निर्माता **केरल राज्य फिल्म विकास निगम लि०**, को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **पी.पी. गोविन्दन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फिल्म (पशुपालन, दुग्ध उत्पादन जैसे कृषि से सम्बन्धित विषयों सहित) का 1991 का पुरस्कार **मुलबेरियम पट्टूनूलम** को रेशम उत्पादन की प्रक्रिया को मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक शैली में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURAL FILM

MALBERIYUM PATTUNOOLUM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **KERALA STATE FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **P.P. GOVINDAN**

Citation

The Award for the Best Agricultural Film (to Include Subjects Related to and Allied to Agriculture like Animal Husbandry and Dairying) of 1991 is given to the film **MALBERIYUM PATTUNOOLUM** for presenting sericulture through all its stages in a pleasing and informative manner.

पी. पी. गोविन्दन ने केरल विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान में स्नातक की डिग्री और भारतीय फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। अनेक वृत्तचित्रों के अलावा उन्होंने मलयालम और तमिल में कथाचित्रों का भी निर्देशन किया है। उनकी फिल्मों में **सरिता, सीता, सन्ध्या रागम्** और **पासक्कानल** शामिल हैं।

P.P. GOVINDAN is a graduate in botany from Kerala University and holds a diploma in film direction from the FTII, Pune. In addition to his documentaries, he has directed feature films in Malayalam and Tamil. Among his films are **Saritha, Seetha, Sandhya Ragam** and **Pasakkanal**.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म पुरस्कार

आनंद भवन (अंग्रेजी)

निर्माता **वी.बी. चन्द्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **यश चौधरी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म का 1991 का पुरस्कार आनंद भवन को प्रदान किया गया है, जिसमें इलाहाबाद में नेहरू वंश के पैतृक निवास के इतिहास को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, जैसे यह विशाल भवन अपनी जबानी अपनी कहानी सुना रहा हो।

AWARD FOR THE BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION/COMPILATION FILM

ANAND BHAVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **V.B. CHANDRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **YASH CHAU-DHARY**

Citation
The Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film of 1991 is given to **ANAND BHAVAN** for chronicling the history of the home of the Nehrus in Allahabad as if told by the huge historic house in the first person.

वी.बी. चन्द्रा फ़िल्म प्रभाग के मुख्य निर्माता हैं। वे बम्बई के वृतचित्र, लघु और कार्टून फ़िल्मों के अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह के निदेशक हैं। वे भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे के निदेशक भी रहे हैं। उन्होंने 20 से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय तथा 12 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वृत्तचित्र फ़िल्म आन्दोलन को आगे बढ़ाने के क्षेत्र में उन्हें विश्व में मान्यता प्राप्त है।

VIJAY B. CHANDRA is Chief Producer and Head of the Films Division, Director (and Founder Director) of Bombay International Film Festival for Documentary, Short and Animation Films, and Director of the FTII, Pune. He has won over twenty international and twelve national awards and has been recognised world wide for his pioneering role in strengthening the documentary film movement.

यश चौधरी ने भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान से फ़िल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। कथाचित्रों के लेखक और निर्देशक के रूप में काम करने के बाद 1967 में वे फ़िल्म प्रभाग में काम करने लगे। उन्हें 30 से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार और 5 बड़े राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

YASH CHAUDHARY holds a diploma in film direction from the FTII, Pune. He worked as a writer and director of feature films and joined the Films Division in 1967. He has won more than thirty international awards and five major national awards.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

आइज़ ऑफ स्टोन (हिन्दी, मेवाड़ी)

निर्माता **नीलीता वाच्छानी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **नीलीता वाच्छानी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सामाजिक विषयों पर (मद्यनिषेध, महिला और बाल कल्याण, दहेज, नशीले पदार्थ और विकलांग कल्याण सहित) सर्वोत्तम फिल्म का 1991 का पुरस्कार **आइज़ ऑफ स्टोन** को तथाकथित भूत-पिशाच से ग्रस्त औरतों की दुखद अवस्था को सहानुभूति तथा सद्भावना के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

EYES OF STONE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **NILITA VACHANI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **NILITA VACHANI**

Citation
The Award for the Best Film on Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse and Welfare of the Handicapped of 1991 is given to **EYES OF STONE** for portraying with sympathy and understanding the plight of the so-called possessed women.

नीलीता वाच्छानी का जन्म 1960 में नई दिल्ली में हुआ । 1981 में वे फिल्म तथा संचार सिद्धान्त के अध्ययन के लिए पेनसिल्वनिया विश्वविद्यालय गईं । 1983 से 1985 तक उन्होंने शिकागो के कला संस्थान में फिल्म निर्माण कला का अध्ययन किया। 1987 तक उन्होंने न्यूयार्क में वृत्तचित्रों के संपादक के रूप में काम किया । निर्देशक के रूप में **आइज़ ऑफ स्टोन** उनकी पहली फिल्म है ।

NILITA VACHANI was born in New Delhi in 1960. In 1981 she went on a scholarship to the University of Pennsylvania to study film and communication theory. From 1983 until 1985 she studied filmmaking at the Art Institute of Chicago. She worked until 1987 in New York as editor of documentary films. **Eyes of Stone** is her directorial debut.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म पुरस्कार

ए स्टोरी ऑफ ट्रायम्फ (अंग्रेजी)

निर्माता **पूना जिला कुष्ठरोग समिति** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **विश्राम रेवंकर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म का 1991 का पुरस्कार **द स्टोरी ऑफ ट्रायम्फ** को दिया गया है, जिसमें इलाज से ठीक हुए, कुष्ठरोगियों और उनके पुनर्वास का चित्रण करते हुए कुष्ठरोग पर मानव की विजय को प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

A STORY OF TRIUMPH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **POONA DISTRICT LEPROSY COMMITTEE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **VISHRAM REVANKAR**

Citation
The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1991 is given to **A STORY OF TRIUMPH**, which portrays human triumph over the disease of leprosy through the testimony of cured and rehabilitated patients.

पूना ज़िला कुष्ठरोग समिति एक धमार्थ न्यास है, जो पिछले 30 वर्षों से कुष्ठरोग की चिकित्सा और सामाजिक सहायता के क्षेत्र में काम कर रही है। इस समिति ने कुष्ठरोग से होने वाली विकलांगता को ठीक करने के लिए विशेष शैल्य-चिकित्सा विकसित की है। इसने उपचार के बाद ठीक हो गए रोगियों के सामाजिक और आर्थिक पुनर्वास के लिए मेहता सहकारी पुनर्वास मॉडल भी विकसित किया है।

THE POONA DISTRICT LEPROSY COMMITTEE is a charitable trust involved in medical and social leprosy relief work for the past thirty years. It has pioneered reconstructive surgery for correction of leprosy deformities, and has developed the Mehta Cooperative Rehabilitation Model for the socioeconomic rehabilitation of cured leprosy patients.

विश्राम रेवंकर वृत्तचित्रों के जाने-माने निर्माता-निर्देशक हैं। उन्हें तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों के अलावा ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन का स्वर्ण और रजत पदक तथा ग्रीन वीक बर्लिन 1992 समारोह में कांस्य पदक प्राप्त हुआ। वे पुणे में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम कर चुके हैं।

VISHRAM REVANKAR is a producer and director of documentaries. He has won three national awards, the British Medical Association's Gold and Silver Medal, and the Bronze Medal at the Green Week Berlin 1992 Festival. He was formerly assistant professor at the Film Institute of India, Pune.

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म पुरस्कार

भागीरथी की पुकार

निर्माता **अनवर जमाल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **अनवर जमाल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **भागीरथी की पुकार** को प्रदान किया गया है जिसमें पर्यावरण तथा लोगों पर टिहरी बांध के प्रभाव का बारीकी से विश्लेषण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

BHAGIRATHI KI PUKAAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **ANWAR JAMAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ANWAR JAMAL**

Citation
The Award for the Best Investigative Film of 1991 is given to **BHAGIRATHI KI PUKAAR** for the in-depth analysis of the impact of the proposed Tehri Dam on the environment and the people affected by it.

अनवर जमाल हिन्दी साहित्य में एम.ए. हैं। उन्होंने फ़िल्म निर्माण का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उन्होंने टेलीविजन के लिए सामाजिक विषयों पर लघु फ़िल्में और वीडियो वृत्तचित्र बनाये हैं। वे लेखक भी हैं और रंगमंच से जुड़े हैं। वे नागरिक अधिकारों तथा बाल मजदूरी और साम्प्रदायिकता के खिलाफ काम करने वाले स्वयंसेवी संगठनों के लिए भी काम करते हैं।

ANWAR JAMAL holds a master's degree in Hindi literature and has trained in film making. He has produced video documentaries and shorts for television on social issues, is a writer, is involved in the theatre and does voluntary work for organisations working for civil rights and against child labour and communalism.

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म पुरस्कार

बल्लूशाह (हिन्दी)

निर्माता **भारतीय बाल चित्र समिति** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **राजेश अग्रवाल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार **एस.एम. हसन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **बल्लू शाह** को दिया गया है, जिसमें एक परम्परागत बाल-कथा को कल्पनाशील कार्टूनकला तथा ध्वनि की सहायता से हास्यपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

BALLU SHAH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **RAJESH AGGARWAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Animator: **S.M. HASAN**

Citation
The Award for the Best Animation Film of 1991 is given to **BALLU SHAH** for its humorous presentation of a traditional children's story done with imaginative animation and sound.

राजेश अग्रवाल भारतीय फिल्म तथा टेलीविज़न संस्थान के स्नातक हैं। उन्होंने कई वृत्तचित्रों और बाल फ़िल्मों का निर्माण, डबिंग और संपादन किया है। निर्देशक के रूप में **बल्लू शाह** उनकी पहली कार्टून फ़िल्म है।

RAJESH AGGARWAL is a graduate in film editing from the FTII, Pune. He has edited, produced and dubbed numerous documentaries and children's films. **Ballu Shah** is his directorial debut for an animation film.

एस.एम. हसन का जन्म 1945 में तमिलनाडु में वेल्लोर में हुआ। उन्होंने कला में बिना किसी औपचारिक शिक्षा के निपुणता प्राप्त की है। वे 1966 में कार्टूनकार के रूप में काम करने के लिए बम्बई गये और 1971 में सहायक कार्टूनकार के रूप में भीमसेन के साथ काम करने लगे। जिन लघु फ़िल्मों में इन्होंने भीमसेन के साथ काम किया उनमें से **एक अनेक और एकता** और **बिजनेस इन पीपल** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। **बल्लू शाह** फ़िल्म में इन्होंने पहली बार मुख्य कार्टूनकार और डिजाइनर के रूप में काम किया है।

S.M. HASAN was born in Vellore, Tamil Nadu, in 1945. He is a self-taught artist. He migrated to Bombay in 1966 to work as an animator and in 1971 joined Bhimsain as assistant animator. Among the shorts in which Hasan assisted Bhimsain, **Ek Anek aur Ekta** and **Business Is People** won national awards. **Ballu Shah** is the first film on which Hasan has worked as chief animator and designer.

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

मिटी पंग (अंग्रेजी) और आकृति

निर्देशक **अरिबम श्याम शर्मा** (मिटी पंग के लिए) और **बी. नरसिंग राव** (आकृति के लिए) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल का 1991 का विशेष पुरस्कार **मिटी पंग** फिल्म को मणिपुर के सामाजिक जीवन और संकीर्तन में परम्परागत ढोल 'पंग' की भूमिका को संवेदनापूर्ण ढंग से चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

निर्णायक मण्डल का 1991 का विशेष पुरस्कार **आकृति** फिल्म को भी दिया गया है, जिसमें विभिन्न आकारों और रूपों के शिलाखण्डों की आकृतियों के बारे में प्रयोग किये गये हैं। ए.के. बीर के दृश्य विधानों और पंडित हरि प्रसाद चौरसिया के आकर्षक संगीत से फिल्म का प्रभाव बहुत बढ़ गया है।

SPECIAL JURY AWARD

MEITEI PUNG and AKRUTI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors: **ARIBAM SYAM SHARMA** (for **MEITEI PUNG**) and **B. NARSING RAO** (for **AKRUTI**)

Citation

The Special Jury Award for 1991 is given to the film **MEITEI PUNG** for sensitively depicting the role that Pung, the traditional drum, plays in the Sankirtana and social life of Manipur.

The Special Jury Award for 1991 is also given to the film **AKRUTI** for experimentation with forms of boulders of various shapes and textures, brilliantly visualised by A.K. Bir with the evocative music of Pandit Hari Prasad Chaurasia.

अरिबम श्याम शर्मा मणिपुरी रंगमंच के जाने-माने अभिनेता और निर्देशक हैं। वे लोकप्रिय गायक तथा संगीतकार भी हैं। उनकी आरंभिक फ़िल्मों ने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। उनकी फ़िल्म **इमागी निगथेम** (1981) को राष्ट्रीय पुरस्कार और अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में दिखाया गया और उसे नांतेस समारोह में ग्रां प्री प्राप्त हुआ। **इशानऊ** (1990) को कॉन फ़िल्म समारोह में अन सर्टेन रिगार्ड वर्ग के लिए चुना गया। यह फ़िल्म अन्य अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में भी प्रदर्शित की गई। अरिबम श्याम शर्मा ने अनेक वृत्तचित्र भी बनाये हैं।

ARIBAM SYAM SHARMA has been an actor and director of note in Manipuri theatre and a popular vocalist and composer. His early films won national awards. **Imagi Ningthem** (1981) was screened at national and international festivals and won the Grand Prix at Nantes. **Ishanou** (1990) was an official selection in Un Certain Regard at Cannes and was screened at other international festivals. Aribam Syam Sharma also has numerous documentaries to his credit.

बी. नरसिंग राव को अभिनय के क्षेत्र में व्यापक अनुभव प्राप्त है। लोक कलाओं तथा चित्रकला में भी उनकी गहरी रुचि है। उन्होंने **रगूंला कला** (1983), **मा ऊरू, दासी** (1988) और **माटी मानशुलू** (1990) का निर्देशन किया है और इन सभी फ़िल्मों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पुरस्कार मिले हैं।

B. NARSING RAO has a wide experience in theatre and interest in folk art and painting which enrich his work in film. He has directed **Rangula Kala** (1983), **The City** (1987), **Maa Ooru, Daasi** (1988) and **Matti Manushulu** (1990), all of them winners of national and/or regional awards.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म पुरस्कार

पुनरावृत्ति और तोतानामा (हिन्दी)

निर्माता **भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान के निदेशक** (पुनरावृत्ति) और **विकास सातवलेकर** (तोतानामा) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **इमो सिंह** (पुनरावृत्ति के लिए) और **चन्दिता मुखर्जी** (तोतानामा के लिए) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म (70 मिनट की अवधि तक) का 1991 का पुरस्कार **पुनरावृत्ति** फ़िल्म को दिया गया है, जिसमें एक ऐसी बूढ़ी औरत के अकेलेपन और उसकी पीड़ाजनक दशा का अत्यन्त कुशलता के साथ चित्रण किया गया है जो अपने अति संरक्षणवादी स्वभाव के कारण अपनी भावनाओं को फिर से जीने के लिए मजबूर हो जाती है।
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म का 1991 का पुरस्कार **तोतानामा** को भी उसकी परम्परागत शैली व्याख्यात्मक स्वरूप और श्रेष्ठ निर्माण मूल्यों के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

PUNARAVRITTI and TOTANAMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **DIRECTOR, FTII (PUNARAVRITTI)** and **VIKAS SATWALEKAR (TOTANAMA)**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors: **IMO SINGH (PUNARAVRITTI)** and **CHANDITA MUKHERJEE (TOTANAMA)**

Citation
The Award for the Best Short Fiction Film (not exceeding 70 minutes) of 1991 is given to **PUNARAVRITTI** for delicately handling the loneliness and plight of an old woman who is forced to relive emotions because of her overprotective nature.
The Award for the Best Short Fiction Film of 1991 is also given to **TOTANAMA** for its traditional style, narrative structure and good production values.

इमो सिंह ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। निर्देशन के रूप में **पुनरावृत्ति** उनका प्रथम प्रयास है।

IMO SINGH is a graduate in film direction from the FTII. **Punaravritti** is his directorial debut.

चन्दिता मुखर्जी ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा किया है। वे शैक्षणिक और वीडियो फिल्मों का निर्देशन कर रही हैं। वे विज्ञान की लोकप्रियता, विशेषतः स्वास्थ्य पर कार्य, पुनरूत्पादन, प्रौढ़ शिक्षा, हाउसिंग और अन्य विषयों पर भी कार्य कर रही हैं 1989 में उन्होंने राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान से एक फैलोशिप प्राप्त की, उसी दौरान **तोतानामा** उनके निर्देशन में निर्मित की गई।

CHANDITA MUKHERJEE, a graduate in direction of the FTII, has been working in educational films and videofilms. She has also been involved with popularisation of science, specifically through works on health, reproduction, adult education, housing and other subjects. In 1989 she won a fellowship at the National Institute of Design. **Totanama** is a product of her work at the NID.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

ए मैटर ऑफ मदरहुड (अंग्रेजी)

निर्माता **राजीव मेहरोत्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **राजीव मेहरोत्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म का 1991 का पुरस्कार **ए मैटर ऑफ मदरहुड** को लोगों, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को परम्परागत विश्वासों के माहौल में मातृत्व के विभिन्न पक्षों को समझाने के कुशल प्रयास के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

A MATTER OF MOTHERHOOD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **RAJIV MEHROTRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **RAJIV MEHROTRA**

Citation
The Award for the Best Film on Family Welfare of 1991 is given to **A MATTER OF MOTHERHOOD** for its competent attempt to educate the people, especially in the rural areas, on various aspects of motherhood in the prevailing atmosphere of traditional beliefs.

राजीव मेहरोत्रा निर्देशक, छायाकार और कमेंटेटर हैं। उन्होंने अपनी अनेक फिल्मों का लेखन और सम्पादन भी किया है। उन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से छायांकन में आनर्स डिग्री के साथ-साथ फिल्म निर्देशन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। उनकी फिल्में दूरदर्शन के अलावा अमरीकी पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सर्विस तथा ब्रिटिश आई.टी.वी. पर भी दिखाई गई हैं। उन्हें **बाबा, द बैरन हार्वेस्ट** और **एस्केप टु नोवेयर** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार तथा **ओशियन ऑफ विज़डम** के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

RAJIV MEHROTRA is a director, cinematographer and narrator who has also written and edited a number of his own films. He holds a post-graduate degree in film direction with honours in cinematography from Columbia University. His films for television have been aired on Doordarshan, the US Public Broadcasting Service, and the British ITV. He has won national awards for **Baba, The Barren Harvest** and **Escape to Nowhere** and international awards for **Ocean of Wisdom**.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

साइलेन्ट वैली-एन इंडियन रेनफोरेस्ट (अंग्रेजी)

छायाकार **शेखर दत्तात्री** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
फिल्म की प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला **प्रसाद फिल्म लैबोरेट्रीज़** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम छायांकन का 1991 का पुरस्कार **शेखर दत्तात्री** को **साइलेन्ट वैली- एन इंडियन रेनफोरेस्ट** फ़िल्म में उनके काम के लिए दिया गया है, जिसमें उन्होंने केरल में डेढ़ साल तक साइलेन्ट वैली की वनस्पति का अनेक कठिनाइयों के बीच धैर्य-पूर्वक छायांकन किया और कठिन परिस्थितियों के बीच रिकार्ड किए गये वातावरण का श्रेष्ठता के साथ चित्रण किया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

SILENT VALLEY—AN INDIAN RAINFOREST

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman: **SHEKAR DATTATRI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the laboratory processing the film: **PRASAD FILM LABORATORIES**

Citation

The Award for the Best Cinematography for a non-feature film of 1991 is given to **SHEKAR DATTATRI** for his work in the fim **SILENT VALLEY** for the arduous and patient coverage of the flora and fauna of the Silent Valley in Kerala over a period of one-and-a-half years and for giving an intimate portrait of the environment, recorded under difficult conditions.

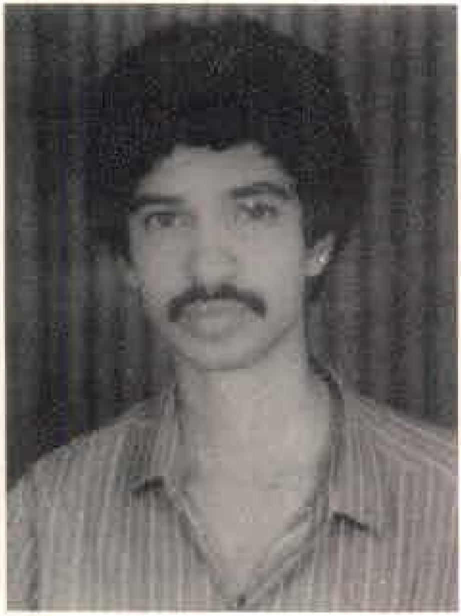

शेखर दत्तात्री फिल्म निर्देशक, छायाकार और संपादक के रूप में काम करते हुए पर्यावरण सम्बन्धी शिक्षा से बहुत गहराई से जुड़े हुए हैं। 1986 के बाद से उन्होंने पर्यावरण सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर 6 वृत्तचित्र बनाये हैं और दो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वे सरिसृप विज्ञान में भी रुचि रखते हैं।

SHEKHAR DATTATRI, director, cinematographer and film editor by profession, is deeply involved with environmental education. He has made six documentaries since 1986 on various environmental themes and won two national awards. He is also a keen herpetologist and a wildlife photographer and illustrator.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

सन्स ऑफ अबोतानी : द मिसिंग

ध्वनि आलेखक **अनिल तालुकदार** और **गौतम बोरा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1991 का पुरस्कार **सन्स ऑफ अबोतानी : द मिसिंग** को संवादों तथा कमेंटरी का विशिष्ट और कल्पनाशील उपयोग करने तथा फिल्म को सशक्त बनाने वाली मधुर ध्वनि के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

SONS OF ABOTANI: THE MISINGS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographers: **ANIL TALUKDAR** and **GAUTAM BORA**

Citation
The Award for the Best Audiography in a non-feature film of 1991 is given to **SONS OF ABOTANI: THE MISINGS** for the selective and imaginative use of commentary and dialogues and the sculpted sound which enriches the film.

गौतम बोरा ने जर्मनी के कोनराड वर्ल्ड इन्स्टीच्यूट से फ़िल्म और टेलीविजन निर्देशन में डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने **प्रथम रागिनी** फ़िल्म के सह निर्देशक और **अग्निस्नान** के सहायक निर्देशक के रूप में काम किया और इन दोनों फ़िल्मों को रजत कमल मिला। स्वतन्त्र रूप से बनाई गई उनकी पहली फ़िल्म **वोसोबिपो** को निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फ़िल्म के लिए स्वर्ण कमल मिला और उसे कई अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में भी भेजा गया।

GAUTAM BORA holds a degree in film and television direction from Konrad World Institute, Germany. He worked as associate director on **Pratham Ragini** and as assistant director on **Agnisnan,** both of them winners of the Rajat Kamal. His first independent feature film was **Wosobipo**, which won the Swarna Kamal in the debut film category and was entered in international film festivals.

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

संचारी (अंग्रेजी)

फ़िल्म सम्पादक **राजेश परमार** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम सम्पादन का 1991 का पुरस्कार **राजेश परमार** को **संचारी** फ़िल्म में उनके काम के लिए दिया गया है, जिसमें बड़ी सुन्दरता के साथ ऐसी संरचना का सृजन किया गया है जो नृत्य की लय ताल के एकदम अनुरूप है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

SANCHARI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor: **RAJESH PARMAR**

Citation

The Award for the Best Editing of a non-feature film of 1991 is given to **RAJESH PARMAR** for his work in **SANCHARI**, which beautifully creates a structure that responds to the rhythms of the dance.

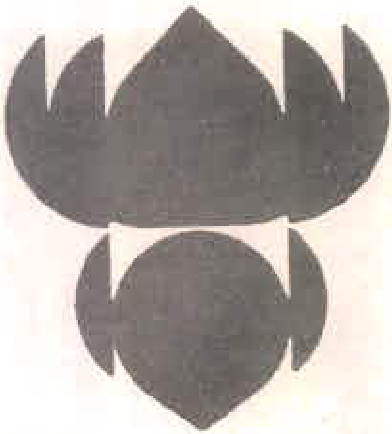

विशेष उल्लेख

देवल बासु

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने **देवल बासु** का **लिविंग ऑन द जंक** फिल्म के निर्देशन के लिए विशेष उल्लेख किया है।

यह फिल्म उपभोक्तावादी समाज के कूड़े से पर्यावरण के लिए खतरे को कम करने में एक महानगर के कचरा बीनने वालों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालने का उनका सच्चा और पहला प्रयास है।

SPECIAL MENTION

DEBAL BASU

Citation

The Special Mention for 1991 is given to **DEBAL BASU** for his work in directing the film **LIVING ON THE JUNK**. The film is a sincere maiden effort in focussing attention on the significant contribution of ragpickers of a metropolis in minimising the threat to the environment from the junk of a consumerist society.

देबल वासु का जन्म 1950 में हुआ। वे पश्चिम बंगाल में लालपुर में महात्मा गांधी कालेज में प्राध्यापक हैं। **लिविंग आन द जंक** उनकी पहली फ़िल्म है। इस समय वे पश्चिम बंगाल और बिहार के छोटानागपुर क्षेत्र में रेत से सोना बीनने वालों के बारे में वृत्तचित्र तैयार कर रहे हैं।

DEBAL BASU was born in 1950. He works as a lecturer in Mahatma Gandhi College, Lalpur, in West Bengal.

Living on the Junk is his first film. He is now working on a documentary on the gold panners of Chotonagpur area in West Bengal and Bihar.

पुरस्कार जो नहीं दिये गये (गैर कथाचित्र)

गैर कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने सर्वोत्तम खोजी/साहसिक फिल्म (खेल सहित) पुरस्कार नहीं दिया ।

AWARD NOT GIVEN (NON-FEATURE)

The Non-Feature Film Jury did not give the award for the Best Exploration/Adventure Film (to Include Sports)

सिनेमा	Awards for
लेखन	Writing on
पुरस्कार	Cinema

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक पुरस्कार

आत्मानिन्डेयुडे पूक्कल (मलयालम) (आत्मनिंदा के पुष्प)

लेखक **अरविन्दन वालाचीरा** को स्वर्ण कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक **बी.आर. पुष्पकरण** को स्वर्ण कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का 1991 का पुरस्कार **आत्मानिन्डेयूडे पूक्कल** को एम.टी. वासुदेवन नायर की फिल्मों के आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए प्रदान किया गया है। इस पुस्तक में मानवीय मूल्यों की जटिलता तथा सामाजिक संस्थाओं और व्यक्ति के बीच आदान-प्रदान का गहराई से विवेचन किया गया है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

ATHMANINTAYUDE POOKKAL (Malayalam) (Flowers of Self-Condemnation)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Author: **DR. ARAVINDAN VALLACHIRA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Publisher: **V.R. PUSHPAKARAN**

Citation
The Award for the Best Book on Cinema of 1991 is given to **ATHMANINTAYUDE POOKKAL** for a critical analysis of **M.T. VASUDEVAN NAIR**'s film. The book is an in-depth study of the complexity of human values and the interaction between social institutions and the individual.

डॉ॰ अरविन्दन का जन्म केरल के त्रिशूर जिले में वल्लाचिरा में हुआ । उन्होंने मन्नुति पशुचिकित्सा कालेज से पशु-चिकित्सा विज्ञान में डिग्री प्राप्त करने के बाद जानवरों के डाक्टर के रूप में काम किया । इस समय वे मन्नुति कालेज में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने अपने लेखन कार्य 1960 के दशक के मध्य में शुरू किया । 1985 में उनका उपन्यास प्रकाशित हुआ । उन्होंने सिनेमा लेखन के लिए एक बार राज्य पुरस्कार और दो बार क्रिटिक्स एसोसिएशन पुरस्कार प्राप्त किया है। वे त्रिशूर की संस्था सिने विजन के अध्यक्ष हैं ।

DR. ARAVINDAN was born in Vallachira, Trichur District, Kerala. He took his degree in veterinary science at the Mannuthi Veterinary College and then served as a veterinary surgeon. He is now Associate Professor at the Mannuthi College. Dr. Aravindan began his writing career in the mid-1960s, and he published a novel in 1985. He has won a state award and he has twice won the Critics Association Award for his writing on cinema. He is president of Cine-Visions, Trichur.

वी.आर.पुष्पकरण का जन्म 1956 में केरल राज्य के त्रिशूर जिले के पट्टीकाड में हुआ । इन्होंने श्री केरेला वर्मा कालेज त्रिशूर से 1976 में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की । वर्तमान में ये त्रिशूर के सिंचाई विभाग में कार्यरत है । पुष्पकरण विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृति संगठनों तथा फिल्म सोसायटी आन्दोलन से भी सम्बन्धित है । सिनेमा संवर्धन के लिए त्रिशूर में गठित **"सिनेविजन"** संस्था के सचिव के पद पर भी कार्य कर रहे हैं ।

V.R. PUSHPAKARAN was born at Pattikad, Thrissur District, Kerala in 1956. He graduated from Sree Kerala Varma College, Thrissur in 1976 and is working at the Irrigation Office, Thrissur.

Pushpakaran is actively involved with various sociocultural organisations and also with the film society movement. He is secretary of Cinevisions Thrissur, an organisation for the promotion of cinema.

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

गौतम कौल

फ़िल्म समीक्षक **गौतम कौल** को स्वर्ण कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का 1991 का पुरस्कार **गौतम कौल** को फ़िल्मों से जुड़े अनेक विषयों पर स्पष्टता और सार्थकता के साथ कलम चलाने तथा एक सृजनात्मक माध्यम के रूप में सिनेमा के बारे में बेहतर समझ पैदा करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC

GAUTAM KAUL

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1991 is given to **GAUTAM KAUL** for the clarity and consistency with which he has written on a wide range of issues, creating a better understanding of cinema as a creative medium.

गौतम कौल ने फ़िल्मों के बारे में लिखना तब शुरू किया जब लखनऊ में नवगठित फिल्म सोसायटी के लिए उन्होंने नोट लिखे। इसके बाद वे फिल्म के गम्भीर पहलूओं पर **फ़िल्म फेयर** और **स्क्रीन** में अपनी रचनायें भेजने लगे। स्वतंत्र लेखक के रूप में वे भारत में आयोजित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों के बारे में नियमित रूप से लिखते हैं। उनके लेख मुख्यतया मद्रास और नई दिल्ली के हिन्दू अखबार में छपते हैं।

गौतम कौल भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं। उन्होंने समर सेवा स्टार मैडल, उल्लेखनीय सेवा के लिए पुलिस पदक के अलावा 1982 में एशियाई खेलों के श्रेष्ठ प्रबन्ध के लिए एशियाड ज्योति पुरस्कार प्राप्त किया।

GAUTAM KAUL began writing on cinema when he provided notes for his newly founded film society in Lucknow. He then began to contribute to **Filmfare** and **Screen** on the more serious aspects of cinema. As a freelance writer, he has regularly covered the National and International Film Festivals in India. His articles are published primarily in **The Hindu** in Madras and New Delhi.

Gautam Kaul is a senior officer of the Indian Police Service. He has won the Samar Seva Star Medal, the Police Medal for Meritorious Service, and the 1982 Asiad Jyoti Award for his excellent management of the Asian Games.

कथासार: कथाचित्र

Synopses: Feature Films

अभयम

मलयालम/रंगीन/ 93 मिनट

निर्माण : भारतीय बाल चित्र समिति **निर्देशन/ कहानी:** शिवन **पटकथा:/ गीतकार:** शिबु चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेता :** तरूण कुमार **सह अभिनेता :** मधु **सह अभिनेत्री :** पार्वती **छायांकन :** संतोष शिवन **ध्वनि आलेखन :** उन्नी, राजेन्द्रन, थम्बी **सम्पादन :** श्रीकर प्रसाद **कला निर्देशन :** राजीव अंचल **संगीत निर्देशन :** एम.जी. राधाकृष्णन **पार्श्व गायक :** एम.जी. राधाकृष्णन **पार्श्व गायिका :** अरुणधति

आठ वर्ष का बालक वीनू मां-बाप की ऊंची इच्छाओं के कारण पढ़ाई के बोझ तले दबा हुआ है। यह प्रकृति की सुन्दरता और रंगों के प्रति आकर्षित है वह अपने दादा के पास भाग जाने के सपने देखता है, जो उसके मां-बाप की तुलना में उसे बेहतर ढंग से समझते हैं। एक दिन वीनू की मां उसे पीटती है और बोर्डिंग स्कूल में दाखिल कराने की धमकी देती है। वीनू डर कर घर से भाग जाता है। लेकिन बाहर उसे अपने सपनों से अलग ही दुनिया दिखाई देती है। उसे प्यार करने वाले पान वाले और बस कन्डक्टरों तथा पेड़ पौधों की बजाए ऐसे लोगों से वास्ता पड़ता है जो उसकी चिन्ता नहीं करते। प्रकृति के मनोरम दृश्य की बजाए उसे कारखाने देखने पड़ते हैं। लेकिन इस कठिन यात्रा के अन्त में वह अपने दादा का घर ढूंढ़ लेता है और दौड़कर उनके गले लग जाता है। वीनू के मां-बाप भी तभी वहाँ पहुंच जाते हैं और उसे पढ़ाई लिखाई के लिए वापस ले जाते हैं। वीनू अपने दादा के कान में धीरे से कहता है, ''मैं फिर आऊँगा।''

ABHAYAM

Malayalam/colour/93 min.

Producer: Children's Film Society **Director:** Sivan **Screenplay Writer/Lyricist:** Shibu Chakravarty **Leading Actor:** Madhu **Leading Actress:** Parvathy **Child Artiste:** Tarun Kumar **Cinematographer:** Santosh Sivan **Audiographers:** Unni, Rajendren **Editor:** Sreekar Prasad **Art Director:** Rajeev Anchal **Music Director:** M.G. Radhakrishnan

Eight-year-old Vinu is a child caught up in a gruelling round of studies determined by his parents'high ambitions for him. He is distracted by the beauties and colours of nature and dreams of escaping to his grandfather, who understands him better than his parents do. One day his mother beats him and threatens to put him in a boarding school and Vinu runs away. He finds his journey very different from the one of his dreams. Instead of friendly pan sellers and bus conductors to help him along and birds and trees to show him the way to his grandfather's house, he meets indifferent adults and the landscape of his memories is overrun with factories. At his journey's end, however, he finds his grandfather's mansion, unchanged, and runs into the old man's embrace.

Vinu's parents enter right behind him to take him back to his exams and studies. The boy whispers to his grandfather, "I'll come again."

आदि मीमांसा

उड़िया/रंगीन/ 109 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/छायांकन : ए.के.बीर **मुख्य अभिनेता :** ललतेन्दु रथ **मुख्य अभिनेत्री :** बिजैनी मिश्र **सह अभिनेता :** मोहन गोखले **सह अभिनेत्री :** नीना गुप्ता **बाल कलाकार :** अभिषेक नाथ **ध्वनि आलेखन :** जीतेन्द्र चौधरी **सम्पादन :** दिलीप पंडा **कला निर्देशन :** चेल परेश **संगीत निर्देशन:** भवदीप जैपुरवाले

आराखित बाबू और क्षेत्रपाल बाबू एक दूसरे के मित्र हैं तथा एक ही घर के दो हिस्सों में रहते हैं। दीवार के एक ओर कुंआ तथा दूसरी ओर नाली है, जिसमें दोनों परिवारों का पानी बहता है। एक जैसी आशाओं और संघर्षों के कारण दोनों व्यक्तियों में काफी निकटता कायम हो गई है। क्षेत्रपाल आर्थिक तंगी के बावजूद ज्यादा खुश रहता है।

एक बूढ़ी विधवा घर में आती है और नाली के बारे में उल्टी-सीधी बातें करके दोनों परिवारों में शक और गलतफहमी पैदा कर देती है। आपसी सम्बन्धों के इस तनाव को दूर करने के लिए क्षेत्रपाल घर छोड़ने को तैयार हो जाता है लेकिन हालात ऐसे बनते हैं कि आराखित को घर छोड़ना पड़ता है। आखिर में एक बच्चे की अबोधता समस्या को हल करती है।

ADI MIMANSA

Oriya/colour/109 min.

Producer/Screenplay Writer/Director/ Cinematographer: A.K. Bir **Leading Actor:** Lalatendu Rath **Leading Actress:** Bijainee Misra **Supporting Actor:** Mohan Gokhale **Supporting Actress:** Neena Gupta **Child Artiste:** Avishek Nath **Audiographer:** Jitendra Chaudhury **Editor:** Dilip Panda **Art Director:** Chel Paresh **Music Director:** Bhavdeep Jaipurwale.

Aarakhit Babu and Kshetrapal Babu are friends who live in two portions of the same house. The partition of their house has left the well on one side and a common drain on the other side of the wall. The two men have become close through their common hopes and struggles. Kshetrapal is the more cheerful in living with economic constraints.

An old widow appears at the house and plants suspicion and misunderstanding between the two families by making comments about the common drain. To end the strain on their relationship Kshetrapal offers to leave, but it is Aarakhit who is forced by circumstances to go.

It is the innocence of a child that lights on a graceful resolution.

आगन्तुक

बंगला/रंगीन/120 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम **निर्देशन/पटकथा/संगीत निर्देशन** : सत्यजीत राय **मुख्य अभिनेता** : उत्पल दत्त **मुख्य अभिनेत्री** : ममता शंकर **सह अभिनेता**: दीपांकर डे **सह अभिनेत्री** : सुब्रता चटर्जी **बाल कलाकार** : बिक्रम भट्टाचार्य **छायांकन**: बरूण राहा **ध्वनि आलेखन** : सुजीत सरकार **सम्पादन**: दुलाल दत्त **कला निर्देशन**: अशोक बोस **गीतकार** : रवीन्द्रनाथ टैगोर **पार्श्व गायिका** : श्रोमोना गुहा ठाकुरता **वेशभूषा**: ललिता रे

अनिला को अपने अंकल मनमोहन से एक पत्र मिलता है। उनसे वह पहले कभी नहीं मिली है। मनमोहन 35 वर्ष तक विदेशों में रहने के बाद भारत लौट रहे हैं।

पत्र पाकर अनिला खुश होती है, हालांकि उसके पति सुधीर के मन में संदेह है। मनमोहन उनके घर पहुंचते हैं और अपने अच्छे स्वभाव के कारण बहुत जल्दी अनिला के 11 वर्षीय बेटे से उनको लगाव हो जाता है। सुधीन्द्र को शक हो जाता है कि वह वसीयत का अपना हिस्सा लेने के लिए ही यहां आये हैं। वह उनके बारे में जांच कराता है। पता चलता है कि वह पिछले 35 वर्ष उत्तरी और दक्षिणी अमरीका में आदिवासियों के जीवन के अध्ययन में बिताये हैं। सुधीन्द्र का वकील मनमोहन के रहन-सहन का मजाक उड़ाता है।

सुधीन्द्र और अनिला अपनी शंका के समाधान के लिए संताल गांव जाते हैं, जहां मनमोहन रह रहे हैं। मनमोहन उन्हें आदिवासियों के एक नृत्य कार्यक्रम तक वहीं रुकने के लिए कहते हैं। अनिला नृत्य से आकर्षित होकर खुद भी नाचने लगती है। कलकत्ता लौटकर आस्ट्रेलिया के लिए रवाना होने से पहले मनमोहन सुधीन्द्र को एक उपहार देते हैं। यह विरासत में उनके हिस्से के कागजात हैं।

AGANTUK

Bengali/colour/120 min.

Producer: NFDC **Director/ Screenplay Writer/Music Director:** Satyajit Ray **Leading Actor:** Utpal Dutt **Leading Actress:** Mamata Shankar **Supporting Actor:** Deepankar Dey **Supporting Actress:** Subrata Chatterji **Child Artiste:** Bikram Bhattacharya **Cinematographer:** Barun Raha **Audiographer:** Sujit Sarkar **Editor:** Dulal Dutt **Art Director:** Ashoke Bose **Lyricist:** Rabindranath Tagore **Female Playback Singer:** Sromona Guha Thakurta **Costume Designer:** Lalita Roy

Anila receives a letter from her uncle, Manomohan, whom she has never met. He is visiting India after thirty-five years abroad. Anila is his only surviving relation. He wants to meet her in Calcutta before he sets off again.

Anila looks forward to the meeting, although her husband Sudhindra is suspicious.

The uncle arrives, and immediately wins the friendship of Anila's son. Anila suddenly remembers her grandfather's will, and Sudhindra is quick to suspect that Manomohan has come only to claim his share of the inheritance. He triggers an investigation of the old man.

Sudhindra's and Anila's suspicions lead them to the Santal village where Manomohan is spending time. He invites them to stay for a tribal dance. Anila is attracted by the rhythm and rushes in to join the dance. Back in Calcutta, just before he leaves for Australia, Manomohan gives the family his entire share of the inheritance.

अन्तर्धान

बंगला/रंगीन/ 135 मिनट

निर्माण : नवकुमार चन्द्रा, स्वप्न कुमार मित्रा, सुचेता मित्रा **निर्देशन/पटकथा/संगीत निर्देशन:** तपन सिन्हा **मुख्य अभिनेता :** सौमित्र चटर्जी **मुख्य अभिनेत्री :** माधवी चक्रवर्ती **सह अभिनेता:** अर्जुन चक्रवर्ती **सह अभिनेत्री :** शताब्दी राय **छायांकन :** सौमेन्दु राय **ध्वनि आलेखन :** रबीन सेनगुप्त **सम्पादन:** सुबोध राय **कला निर्देशन :** अशोक बोस **गीतकार :** रवीन्द्रनाथ टैगोर **पार्श्व गायक:** प्रतिम सेनगुप्त **पार्श्व गायिका :** श्रेया गुहा ठाकुरता

इस फ़िल्म में एक अवकाश प्राप्त प्रोफेसर सुशोभन मुखर्जी के अनुभव का चित्रण किया गया है, जिनकी इकलौती लड़की 18 वर्षीय इना रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में लापता हो जाती है। गुम होने के दिन इना अपने बीमार चाचा का हालचाल पूछने जाती है।

बाद में एक आदमी सुशोभन को टेलीफोन पर बताता है कि इना ने यह कहने को कहा है कि वे अपने भाई के पास जल्दी से पहुंच जाए, क्योंकि उनकी हालत गम्भीर है। फोन करने वाला खुद को उनके भतीजे अर्जुन का दोस्त बताता है। सुशोभन उनकी पत्नी लीना को लेकर तत्काल घर से रवाना होते हैं और उनके पहुंचने से कुछ देर पहले भाई की मृत्यु हो जाती है तभी लीना को ख्याल आता है कि इना कहीं दिखाई नहीं दे रही। अर्जुन बताता है कि इना काफी देर पहले यहां से जा चुकी है और अर्जुन के दोस्त ने सुशोभन के यहां कोई फोन नहीं किया। सुशोभन हैरान-परेशान होकर घर की ओर लपकता है लेकिन इना तब भी वहां नहीं पहुंची है।

ANTARDHAN

Bengali/colour/135 min.

Producers: Nabakumar Chandra, Swapan Kumar Mitra, Sucheta Mitra **Director/Screenplay Writer/Music Director:** Tapan Sinha **Leading Actor:** Soumitra Chatterjee **Leading Actress:** Madhabi Chakrabarty **Supporting Actor:** Arjun Chakrabarty **Supporting Actress:** Satabdi Roy **Cinemato- grapher:** Soumendu Roy **Audiographer:** Rabin Sen Gupta **Editor:** Subdoh Roy **Art Director:** Asoke Bose **Lyricist:** Rabindranath Tagore **Male Playback Singer:** Pratim Sen **Female Playback Singer:** Sreya Guha Thakurata

The film depicts the experience of a retired professor, Susobhan Mukherjee, whose only child, eighteen-year-old Ina, disappears under mysterious circumstances one evening. On the day of her disappearance, Ina has gone out to see her ailing uncle.

Later, a man telephones Susobhan, introducing himself as his nephew Arjun's friend, to say that Ina wants Susobhan to rush to his brother, whose condition is critical. Susobhan and Leena hurry to his brother, who dies a few minutes before they reach him. As the nephews are consoling Susobhan, Leena discovers that Ina is nowhere around.

The search follows.

भद्रम कोडुको

तेलुगु/रंगीन/ 107 मिनट

निर्माण : वी. रामचन्द्र राव **निर्देशन/पटकथाः** ए.कुटुम्ब राव **सह अभिनेताः** एम.आर. कट्टा **सह अभिनेत्री :** अनुराधा सर्राज **बाल कलाकार :** संतोष **छायांकन :** मधु अम्बातीर्थ **सम्पादन :** सल्ली बाबू **संगीत निर्देशन :** येल्ला वेंकटेश्वर राव **गीतकार :** वोल्गा **पार्श्व गायिकाः** चित्रा

भद्रम कोडुको का अर्थ है ''सावधान रहो, मेरे बेटे'' । इस फ़िल्म में उपेक्षित बच्चों के दुख-दर्द और चुनौतियों का चित्रण किया गया है । इस में घरों से भागे बच्चों के प्रति समाज के दृष्टिकोण के बारे में कई सवाल भी उठाये गये हैं । सीनू अपने मां बाप के मरने के बाद एक ईरानी होटल में सफाई-बर्तन आदि का काम करता है । उसका दोस्त यादागिरी स्कूटर मैकेनिक है लेकिन उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है और वह रेल डिब्बों की सफाई का काम करने लगता है । यादागिरी की मित्रता 10 साल की एक लड़की माली से है । माली को एक वेश्यालय में बेच दिया जाता है । सताये हुए बच्चे मिलकर ठग से झगड़ा करते हैं जिसमें यादागिरी मारा जाता है । सीनू और उसके बाकी दोस्तों को अपने कष्टों से मुक्ति का अभी इंतजार है ।

BHADRAM KODUKO

Telugu/colour/107 min.

Producer: V. Ramachandra Rao **Director/Screenplay Writer:** A. Kutumba Rao **Supporting Actor:** M.R. Katta **Supporting Actress:** Anuradha Sarraj **Child Artiste:** Santosh Reddy **Cinematographer:** Madhu Ambatirt **Editor:** Salli Babu **Music Director:** Dr. Yella Venkateswara Rao **Lyricist:** Volga **Female Playback Singer:** Chitra

Bhadram Koduko in Telugu means "Be careful, my son." It is a story of the turmoil and the challenges in the lives of runaway children. It raises many questions about society's attitude towards them.

Seenu works as a cleaner in an Irani hotel after his parents die. His friend Yadagiri is thrown out of his job as a scooter mechanic and ends up scrounging a living by cleaning train compartments. Yadagiri befriends a 10-year-old girl, Mali, who has been brought up by a thug. After Yadagiri's departure, Seenu too is thrown out and finds himself in the railway station with Yadagiri. He meets a number of people including the thug, a madwoman who is raped and has a baby, and Mali, who is sold to a brothel. The irate youngsters challenge the thug, and Yadagiri pays with his life. Seenu and his friends wait for deliverance from their drudgery.

भारतम्

मलयालम/रंगीन/ 135 मिनट

निर्माण/मुख्य अभिनेता : मोहनलाल **निर्देशन:** सिबी मलायिल **पटकथा :** लोहिदादास **मुख्य अभिनेत्री :** उर्वशी **सह अभिनेता :** नेडुमुडी वेणु **सह अभिनेत्री :** लक्ष्मी **छायांकन :** आनन्दकुट्टन **ध्वनि आलेखन :** लक्ष्मीनारायणन् **सम्पादन :** भूमिनाथन **कला निर्देशन :** कृष्णन कुट्टी **संगीत निर्देशन :** रवीन्द्रन **गीतकार :** कैथापुरम **पार्श्व गायक :** बालमुरलीकृष्ण, येशुदास **पार्श्व गायिका:** चित्रा **वेशभूषा :** एम.एम. कुमार

रामनाथन प्रसिद्ध गायक है और उसने अपने भाई गोपीनाथन को भी गायन का प्रशिक्षण दिया है। उनकी बहन राधा गूंगी है। उनके पड़ोस में एक युवक आकर रहने लगा है, जिसका राधा से प्रेम हो जाता है और दोनों की शादी तय हो जाती है।

रामनाथन कभी-कभी शराब पीता है लेकिन अब वह अधिक पीने लगा है। शराब के कारण एक संगीत कार्यक्रम में वह गा नहीं पाता और उसकी जगह गोपीनाथन गा कर उसकी इज्जत बचा लेता है। लोग गोपीनाथन की बहुत सराहना करते हैं, जिससे रामनाथन को ईर्ष्या होती है और वह और अधिक शराब पीने लगता है। राधा की शादी से कुछ दिन पहले रामनाथन घर छोड़कर कहीं चला जाता है। कहने को वह तीर्थ-यात्रा पर गया है, किन्तु गोपीनाथन को मालूम है कि वह अब इस दुनिया में नहीं है। गोपीनाथन इस बारे में घर के लोगों को कुछ नहीं बताता ताकि राधा की शादी ठीक ठाक हो जाए। विवाह के बाद रामनाथन के बेटे को अपने पिता की मृत्यु की जानकारी मिलती है और वह घर में बताता है। घर के लोग रामनाथन की मौत और उस के बारे में चुप रहने के लिए गोपीनाथन को भलाबुरा कहते हैं। किन्तु रामनाथन की पत्नी असलियत को समझती है और गोपीनाथन को दिलासा देती है।

BHARATHAM

Malayalam/colour/135 min.

Producer/Leading Actor: Mohanlal **Director:** Sibi Malayil **Screenplay Writer:** Lohidadas **Leading Actress:** Oorvasi **Supporting Actor:** Nedumudi Venu **Supporting Actress:** Lakshmi **Cinematographer:** Anandakuttan **Audiographer:** Laxminarayanan **Editor:** Bhoominathan **Art Director:** Krishnankutty **Music Director:** Ravindran **Lyricist:** Kaithapuram **Male Playback Singers:** Balamuralikrishna, Yesudas **Female Playback Singer:** Chitra **Costume Designer:** M.M. Kumar

Ramanathan is a celebrated singer and he has trained his brother Gopinathan also to sing. Their sister Radha is mute. A newcomer in the neighbourhood falls in love with Radha and her marriage is arranged.

Ramanathan becomes alcoholic and a few days before Radha's wedding, he disappears. He has supposedly gone on a pilgrimage, but Gopinathan knows that he is dead. To allow the wedding to go on as planned, he does not tell the others in the family. After the ceremony, Ramanathan's child comes to know of his death and tells the family. They blame Gopinathan for his brother's death and for his silence. Only Ramanathan's wife understands his reasons and consoles him.

धारावी

हिन्दी/रंगीन/ 140 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, दूरदर्शन **निर्देशन/पटकथा :** सुधीर मिश्र **मुख्य अभिनेता :** ओमपुरी **मुख्य अभिनेत्री :** शबाना आजमी **सह अभिनेता :** रघुवीर यादव **सह अभिनेत्री :** प्रमोद बाला **बाल कलाकार :** राजू बर्नाड **छायांकन :** राजेश जोशी **ध्वनि आलेखन :** मधु अप्सरा **सम्पादन :** रेणु सलूजा **कला निर्देशन :** सुभाष सिन्हा राय **संगीत निर्देशन :** रजत ढोलकिया **वेशभूषा :** वन्दना खन्ना

धारावी फ़िल्म में बम्बई में एशिया के सबसे बड़े स्लम और वहां रहने वाले हजारों लोगों के सपनों की कहानी कही गई है। टैक्सी ड्राईवर राज करण यादव सपने देखने वाले इन्हीं लोगों में से एक है। वह अपनी पत्नी से बड़े-बड़े उद्योगपतियों की तरह अमीर बनने के अपने सपनों की चर्चा करता है। किन्तु उसे गुन्डों और बदमाशों से रुपये उधार लेने पड़ते हैं और वह उनके जाल में फंस जाता है। उसे इस सब की कीमत भी चुकानी पड़ती है, लेकिन वह फिर सपने देखने लगता है।

DHARAVI

Hindi/colour/140 min.

Producers: NFDC, Doordarshan **Director/Screenplay Writer:** Sudhir Mishra **Leading Actor:** Om Puri **Leading Actress:** Shabana Azmi **Supporting Actor:** Raghuvir Yadav **Supporting Actress:** Pramod Bala **Child Artiste:** Raju Bernad **Cinematographer:** Rajesh Joshi **Audiographer:** Madhu Apsara **Editor:** Renu Saluja **Art Director:** Subhash Sinha Roy **Music Director:** Rajat Dholakia **Costume Designer:** Vandana Khanna

Dharavi is about life in Asia's largest slum and the dreams that the thousands of migrants to Bombay have. Rajkaran Yadav, a taxi driver, is one such dreamer. He confides in his wife his dreams of striking it rich like big industrialists. He ends up borrowing money from the underworld and gets entangled in their web. He pays the price for it, but dares to dream again.

दीक्षा

हिन्दी/रंगीन/ 135 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम, दूरदर्शन **निर्देशन :** अरूण कौल **पटकथा :** उमेश कलबाग, जे.पी. दीक्षित, अरुण कौल **मुख्य अभिनेता :** मनोहर सिंह **मुख्य अभिनेत्री** राजश्री सांवत **सह अभिनेता :** नाना पाटेकर **सह अभिनेत्री:** सुलभा आर्य **बाल कलाकार:** आशीष मिश्र **छायांकन :** ए.के.बीर **ध्वनि आलेखन :** अनुज माथुर : **सम्पादन :** आदेश वर्मा **कला निर्देशन :** उमेश कलबाग **संगीत निर्देशन :** महेन्द्रजीत सिंह **पाइर्व गायिका:** तेजकृष्ण जलाली **वेशभूषा :** मूर्ति बंगालोरेकर

सेहागिरी उडुपि एक वैदिक विद्वान हैं जो ब्राह्मण बच्चों को शिक्षा देते हैं। वह व्यवहार से उदार हैं। जब एक अस्पृश्य व्यक्ति कोगा उन्हें अपनी एक मृतक सम्बन्धी की आत्मा की शान्ति के लिए आशीर्वाद देने का अनुरोध करता है तो उडुपि उनकी बस्ती में जाकर आशीर्वाद देते हैं। अन्य ब्राह्मणों को इससे बहुत नाराजगी होती है, लेकिन उडुपि उन्हें समझाते हैं कि उन्होंने किसी मृतक को मुक्ति देने के लिए नहीं बल्कि एक जीवित आदमी के मन की शान्ति के लिए ऐसा किया है। किन्तु जब उनकी युवा विधवा बेटी यमुना के साथ बलात्कार होता है और इस कांड के कारण लोग अपने बच्चों को उनके विद्यालय से निकाल लेते हैं।

DIKSHA

Hindi/colour/135 min.

Producers: NFDC, Doordarshan **Director:** Arun Kaul **Screenplay Writers:** Umesh Kalbag, J.P. Dixit, Arun Kaul **Leading Actor:** Manohar Singh **Leading Actress:** Rajashri Sawant **Supporting Actor:** Nana Patekar **Supporting Actress:** Sulabha Arya **Child Artiste:** Ashish Mishra **Cinematography:** A.K. Bir **Audiographer:** Anuj Mathur **Editor:** Adesh Verma **Art Director:** Umesh Kalbag **Music Director:** Mahenderjit Singh **Female Playback Singer:** Tej Krishna Jalali **Costume Designer:** Murty Bangalorekar

Seshagiri Udupa is a Vedic scholar who teaches brahmin children. He is unconventional in his behaviour. When Koga, an untouchable, asks him to bless his dead aunt to lead her soul to salvation, Udupa goes to the untouchables' colony to bless the body. The other brahmins in the community are shocked,

Yet, when his young, widowed daughter Yamuna is seduced and the scandal causes parents to withdraw their boys from his school, Udupa publicly condemns Yamuna. He performs the death rites for her, as was the custom to punish immoral widows, in order to enforce her excommunication. The brahmins praise him, but his devoted disciple and Koga leave him in disgust. Yamuna remains alone in the untouchables' colony.

दुर्गा

हिन्दी/रंगीन/ 100 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम **निर्देशन/पटकथा** : बासु चटर्जी **मुख्य अभिनेता** : दिनेश खन्ना **मुख्य अभिनेत्री** : सुकन्या कुलकर्णी **सह अभिनेता** : दीपक काज़िर **सह अभिनेत्री** : दीप्ति दवे **बाल कलाकार** : पिंकी घोष, सुमुख घोष, मालविका शिवपुरी **छायांकन** : अजय प्रभाकर **ध्वनि आलेखन** : अरूण चक्रवर्ती **सम्पादन** : कमल सहगल **कला निर्देशन** : जादव भट्टाचार्य **संगीत निर्देशन** : सलिल चौधरी **गीतकार** : अशोक मिश्र **वेशभूषा** : चन्द्रकांत वरदकर

दुर्गा की 13 साल की उम्र में शादी हो जाती है। उसके 6 बच्चे पैदा हुए हैं, जिनमें से केवल 4 जीवित हैं और वह फिर गर्भवती है उसके पति के पास कोई जमीन नहीं और वह बेरोज़गार है। दुर्गा कई घरों में काम करके और गोबर उठाकर किसी तरह घर का गुज़ारा चला रही है। वह अपनी 13 साल की बेटी चन्द्रा के लिए वर की तलाश में हैं।

दुर्गा की एक मालकिन उसकी कमजोर हालत को देखकर उसे डाक्टर के पास ले जाती है। डाक्टर को उसकी हालत देखकर और यह सुनकर हैरानी और दुख होता है कि वह चन्दा की शादी करने की सोच रही है। डाक्टर और मालकिन दोनों मिलकर उसे समझाती हैं कि शादी की बजाय वह चन्दा को किसी काम-काज का प्रशिक्षण दिलाये।

DURGA

Hindi/colour/100 min.

Producer: NFDC **Director/Screenplay Writer:** Basu Chatterji **Leading Actor:** Dinesh Khanna **Leading Actress:** Sukanya Kulkarni **Supporting Actor:** Deepak Qazir **Supporting Actress:** Dipte Dave **Child Artistes:** Pinky Ghosh, Sumukh Ghosh, Malvika Shivpuri **Cinematographer:** Ajay Prabhakar **Audiographer:** Arun Chakravarty **Editor:** Kamal Sahgal **Art Director:** Jadav Bhattacharya **Music Director:** Salil Chawdhury **Lyricist:** Ashok Mishra **Costume Designer:** Chandrakant Varadkar

Durga was married at the age of thirteen. She has had six children, of which only four have survived, and is pregnant again. Her husband is landless and often unemployed. Durga works as a servant in several houses and collects cow dung to keep her family going. She is looking out for a bridegroom for her first daughter, Chanda, who has just turned thirteen.

One of Durga's employers, noticing her weakened condition, takes her to a doctor. The doctor is shocked at her state and even more so at Durga's plans to marry Chanda off. The two women persuade her instead to get Chanda trained in a craft. Durga goes further to start a poultry with money she gets from selling a cow. The chicks die and Durga loses her second daughter to malnutrition.

But Durga refuses to sink into her former state of helplessness. With the help of her employer and the block development officer, she starts the poultry business again and this time it is a success. She gets the younger children educated, trains Chanda in sewing, and gets her married at the age of eighteen.

फिरिंगोती

असमिया/रंगीन/ 116 मिनट

निर्माण : शैलधर बरूआ, जाह्नु बरूआ **निर्देशन/पटकथा :** जाह्नु बरूआ **मुख्य अभिनेत्री :** मलाया गोस्वामी **छायांकन :** अनूप जोतवाणी **ध्वनि आलेखन :** जतीन शर्मा, विजय दिवेकर **सम्पादन :** हियु-एन बरूआ, रंजीत दास **संगीत निर्देशन/गीतकार :** सत्य बरूआ **पार्श्व गायिका :** रीता दास **वेशभूषा :** गायत्री बरूआ

रितु एक युवा विधवा है, जो असम के कोरोगा गांव में पुराने अध्यापक के रिटायर होने पर अध्यापिका बन कर जाती है। वहां पहुंच कर उसे पता चलता है कि गांव में कोई स्कूल है ही नहीं। कई साल पहले स्कूल जल गया था और किसी ने भी सरकार को इस बारे में सूचित नहीं किया, लेकिन पुराने अध्यापक रिटायरमेंट से पहले तक अपने वेतन लेते रहे। रितु हिम्मत से काम लेती है और एक पेड़ के नीचे स्कूल शुरू कर देती है। धीरे-धीरे वह गांव के लोगों को स्कूल की छोटी-सी इमारत बनाने के लिए भी राज़ी कर लेती है। गांव में शिक्षा के साथ-साथ बाहरी दुनिया की कुछ बुराइयां भी पहुंच जाती हैं। झगड़ा तब शुरू होता है जब थोड़ा बहुत पढ़ लिख जाने के बाद गांव का एक युवक यह मांग करता है कि किसी बाहरी व्यक्ति के बजाए गांव के व्यक्ति को ही स्कूल में नौकरी मिलनी चाहिए।

FIRINGOTI

Assamese/colour/116 min.

Producers: Sailadhar Barooah, Jahnu Barua **Director/Screenplay Writer:** Jahnu Barua **Leading Actress:** Moloya Goswami **Cinematography:** Anoop Jotwani **Audiographers:** Jatin Sharma, Vijay Divekar **Editors:** Heu-en Barua, Ranjit Das **Music Director/Lyricist:** Satya Baruah **Female Playback Singer:** Reeta Das **Costume Designer:** Gayatri Barua

Ritu, a young widow, comes to the Assamese village of Koronga as a schoolteacher upon the retirement of the old teacher. On her arrival, she learns that there is no school. It had burned down years ago, but no one had informed the authorities, and the teacher had continued to draw his salary until his official retirement.

Ritu faces the situation with energy. She starts her school under a tree and gradually persuades the villagers to build a simple schoolhouse. Along with literacy and the benefits of a formal education come some of the outside world's ugliness. A conflict arises when a village youth, who has some learning, demands that the outsider make way for a son of the soil.

हलधर

असमिया/रंगीन/ 107 मिनट

निर्माण : गीता बरूआ, द्विजेन हजारिका **निर्देशन :** संजीव हजारिका **पटकथा :** संजीव हजारिका, विद्युत चक्रवर्ती, अजान बरूआ **मुख्य अभिनेता :** अतुल पचानी **सह अभिनेता:** इन्द्र बनिया **छायांकन :** अजान बरूआ **ध्वनि आलेखन :** जतीन शर्मा **सम्पादन :** ए. श्रीकर प्रसाद **संगीत निर्देशन:** शेर चौधरी

ग्रामीण वातावरण में फिल्माई गई इस फिल्म की कहानी एक हल के आस-पास घूमती है। बालोराम लकड़ी के दो टुकड़े खरीद कर अपने लिए तथा अपने बहनोई के लिए दो हल तैयार करता है। गांव का महाजन बालोराम से एक हल मांगता है लेकिन बालोराम उसको बताता है कि उसका दूसरा हल किसी और के लिए है इसलिए वह उसे नहीं दे सकता। गुस्से में आकर महाजन अपने खेत में काम करने वाले किसान सोमेश्वर को हल चुराने के लिए कहता है। बालोराम को पूरा शक है कि हल महाजन ने चोरी कराया है और उसे महाजन के खेतों में वह देख भी लेता है, किन्तु वह इस चोरी की रिपोर्ट फौरन नहीं कर पाता, क्योंकि सारा गांव एक उत्सव में व्यस्त है। उत्सव समाप्त होने तक, महाजन हल को कहीं छिपा देता है। अगले दिन सोमेश्वर की मुलाकात बालोराम से होती है और वह उसे महाजन के खिलाफ खड़ा होने को उकसाता है। सोमेश्वर को महसूस होता है कि महाजन के डर से उसने अपने ही साथियों की चोरी की है। वह बालोराम को उसका हल लौटा देता है।

HALADHAR

Assamese/colour/107 min.

Producers: Geeti Barua, Dwijen Hazorika **Director:** Sanjeev Hazorika **Screenplay Writers:** Sanjeev Hazorika, Bidyut Chakravorty, Ajan Barua **Leading Actor:** Atul Pachani **Supporting Actor:** Indra Bania **Cinematographer:** Ajan Barua **Audiographer:** Jatin Sharma **Editor:** A. Sreekar Prasad **Music Director:** Sher Chowdhury

The film is set in a village and the central figure is the plough. Baloram has bought two pieces of wood to make a plough for himself and one for his brother-in-law. Mahajan, the rich man of the village, comes upon Baloram working and asks for one plough. But Baloram is firm that the second plough is promised to someone else. Mahajan in anger forces his tenant farmer, Someswar, to steal the plough.

Baloram suspects Mahajan and in fact finds that the plough is in Mahajan's place. He cannot report the theft immediately since he and the whole village are involved in a festival. By the end of the festival, Mahajan has gotten rid of the evidence. The next morning Someswar happens to meet the sullen Baloram and teases him, provoking a tirade against Mahajan. Someswar realises that in fear of Mahajan he has stolen from his real friends. He returns the plough.

कडावु

मलयालम/रंगीन/ 90 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : एम.टी. वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता** : संतोष एंटनी **मुख्य अभिनेत्री** : भाग्यरूपा **सह अभिनेता:** बालन के. नायर **सह अभिनेत्री** : पी.टी. श्रीदेवी **छायांकन** : वेणु **ध्वनि आलेखन** : सम्पत **सम्पादन** : बी. लेनिन **कला निर्देशन:** भाषन **संगीत निर्देशन** : राजीव तारानाथ **वेशभूषा** : नटराजन

घर से भागा हुआ लड़का राजू एक नाव पर पहुंचता है। नाव का मालिक बीरन उसे अपने सहायक के रूप में रख लेता है। बीरन बहुत दयावान व्यक्ति है जिसे अपनी नाव तथा रहन-सहन के तौर तरीकों से लगाव है। और नाव में बैठकर नदी पार करने वाले लोगों से उसका मेल-मिलाप बढ़ जाता है। एक युवती तथा उसका भाई अपनी बीमार मां को उनकी नाव में नदी पार ले जाते हैं और उसका शव लेकर लौटते हैं। कुछ दिन बाद राजू की उन दोनों से फिर मुलाकात होती है, जब वे किसी सम्बन्धी के यहां रहने के लिए कालीकट जा रहे होते हैं। जाते-जाते लड़की उसे यों ही कह देती है कि वह भी कालीकट आये। लौटते हुए राजू को लड़की की पायल नदी में पड़ी मिलती है। लेकिन लड़की को पायल देना अब संभव नहीं है। वह उसी लड़की के बारे में सोचता रहता है और आखिर उसे ढूंढने के लिए एक दिन शहर चला जाता है।

KADAVU

Malayalam/colour/90 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: M.T. Vasudevan Nair **Leading Actor:** Santosh Antony **Leading Actress:** Bhagyaroopa **Supporting Actor:** Balan K. Nair **Supporting Actress:** P.T. Sreedevi **Cinematographer:** Venu **Audiographer:** Sampath **Editor:** B. Lenin **Art Director:** Bhasan **Music Director:** Rajiv Tharanath **Costume Designer:** Natarajan

A ragged runaway, Raju, reaches the ferry, where the old boatman, Beeran, takes him on as an assistant. Beeran is a compassionate man attached to his boat and his way of life. As they work together, Raju also comes to love the boat and befriends the people he rows across the river.

A young girl and her brother take their ailing mother across and return with her body. The next time Raju sees them, they are leaving for Calicut to live with their relatives. As they part, the girl casually invites him to Calicut.

On his way back, Raju finds the girl's silver anklet in the river. It is too late to catch the girl to return it.

He broods on the girl and finally leaves the boatman to find her in the city. After a long search he finds her but she does not recognise him or the anklet.

Raju wanders back to the ferry, to find a new boatman and his helper. But the boat welcomes him back, and he rows out.

लम्हे

हिन्दी/रंगीन/ 180 मिनट

निर्माण/निर्देशन : यश चोपड़ा **पटकथा :** हनी ईरानी **मुख्य अभिनेता :** अनिल कपूर **मुख्य अभिनेत्री :** श्रीदेवी **सह अभिनेता :** अनुपम खेर **सह अभिनेत्री :** वहीदा रहमान **बाल कलाकार** ऋचा पलोड **छायांकन :** मनमोहन सिंह **ध्वनि आलेखन :** अनुज माथुर **सम्पादन :** केशव नायडू **कला निर्देशन :** सुधेन्दु राय **संगीत निर्देशन :** शिव कुमार शर्मा, हरि प्रसाद चौरसिया **गीतकार :** आनन्द बक्षी **पार्श्व गायिका :** लता मंगेशकर, पामेला चोपड़ा, इला अरूण **वेशभूषा :** नीता लुल्ला, कचिन्स, लीना दारू

वीरेन, एक सुन्दर और मजबूत दिल वाली लड़की पल्लवी से प्यार करता है। पल्लवी गायिका भी है। प्रेम व्यक्त करने में असमर्थ होने के कारण वह अपना अधिकतर समय उसके बारे में सपने देखने में बिताता है। उसे पता चलता है कि पल्लवी एक अन्य व्यक्ति सिद्धार्थ को चाहती है। इसके बाद वह अपने में मस्त और बेफिक्र रहने की बजाए परेशान और दुखी रहने लगता है। पल्लवी की याद उसके दिल से दूर नहीं होती और वह हंसना और खुशियां मनाना भूल जाता है। उसकी यह हालत तभी बदलती है जब उसकी मुलाकात पूजा से होती है।

LAMHE

Hindi/colour/180 min.

Producer/Director: Yash Chopra **Screenplay Writer:** Honey Irani **Leading Actor:** Anil Kapoor **Leading Actress:** Sridevi **Supporting Actor:** Anupam Kher **Supporting Actress:** Waheeda Rehman **Child Artiste:** Richa Pallod **Cinematographer:** Manmohan Singh **Audiographer:** Anuj Mathur **Editor:** Keshav Naidu **Art Director:** Sudendhu Roy **Music Directors:** Shiv Kumar Sharma, Hari Prasad Chaurasia **Lyricist:** Anand Bakshi **Male Playback Singers:** Suresh Wadkar, Hariharan, Sudesh Bhosle **Female Playback Singers:** Lata Mangeshkar, Pamela Chopra, Ila Arun **Costume Designers:** Neeta Lulla, Kachins, Leena Daru

Viren is captivated by Pallavi, a girl with dreamy eyes, tinkling laughter, a singing voice and a strong will. Unable to articulate his love, he spends his time dreaming of her. He realises that Pallavi loves Siddarth, a stranger in uniform. He changes from a carefree adolescent into an unhappy man.

The memory of Pallavi does not fade and takes away Viren's ability to laugh and enjoy life, until he meets Pooja.

मैसूरा मल्लिगे

कन्नड़/रंगीन/ 140 मिनट

निर्माण : श्रीहरि एल. खोडेय **निर्देशन/पटकथा :** टी.एस. नागभरण **मुख्य अभिनेता :** आनन्द **मुख्य अभिनेत्री :** सुधा रानी **सह अभिनेता :** गिरीश कर्नाड **बाल कलाकार :** मन्जु भार्गवी **छायांकन :** बी.सी. गौरीशंकर **ध्वनि आलेखन :** कृष्णमूर्ति **सम्पादन :** सुरेश अर्स **कला निर्देशन :** शशिधर अदापा **संगीत निर्देशन :** सी. अश्वत्थ **गीतकार :** के.एस. नरसिम्हा स्वामी **पार्श्व गायक :** बालसुब्रह्मण्यम् **पार्श्व गायिका :** एस. जानकी रत्न, माला प्रकाश **वेशभूषा :** नागिनी भराना

मैसूरा मल्लिगे कन्नड़ के आधुनिक कवि के.एस. नरसिम्हा स्वामी की लयपूर्ण कविताओं पर आधारित है। ये कवितायें मातृभूमि के प्रति प्रेम को समर्पित हैं।

पद्मा एक ग्रामीण लड़की है जो देश भक्त कवि मंजु से प्रेम करती है। उसका पिता गांव का मुन्शी है और मंजु की गतिविधियों का विरोध करता है। वह अपनी लड़की की शादी अपने विचारों के एक युवक से करना चाहता है किन्तु पद्मा और मंजु चूड़ियां बेचने वाले चिन्नैया की मदद से विवाह बंधन में बंध जाते हैं।

चिन्नैया भी राष्ट्रवादियों से सहयोग करने लगता है। उसे बचाने की कोशिश में मंजु घायल हो जाता है और लोग समझते हैं कि वह कहीं खो गया है।

MYSOORA MALLIGE

Kannada/colour/140 min.

Producer: Srihari C. Khoday **Director/Screenplay Writer:** T.S. Nagabharana **Leading Actor:** Anand **Leading Actress:** Sudha Rani **Supporting Actor:** Girish Karnad **Child Artiste:** Manju Bhargavi **Cinematographer:** B.C. Gowrishankar **Audiographer:** Krishna Murty **Editor:** Suresh Urs **Art Director:** Shashidhar Adapa **Music Director:** C. Aswath **Lyricist:** K.S. Narasimha Swamy **Male Playback Singer:** Balasubramanyam **Female Playback Singers:** S. Janaki, Rathnamala Prakash **Costume Designer:** Nagini Bharana

Mysoora Mallige is woven from the lyrical poems of K.S. Narasimha Swamy, one of the modern Kannada poets inspired to sing by the love of his land.

Padma is a village girl who is in love with the poet Manju, a fervent patriot. Her father is the village accountant, an instrument of the village's feudal structure, and he opposes Manju's activities. He tries to arrange his daughter's marriage to a man of his own views, but Padma and Manju are united, with the help of Chinnaiah, a bangle seller.

In an attempt to save Chinnaiah, who becomes involved with nationalists, Manju is wounded and given up for lost. The poet's works are later published by his wife, the Mysore jasmine of his lyrics.

रुकमावती की हवेली

हिन्दी/रंगीन/ 132 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/छायांकन : गोविन्द निहलाणी **मुख्य अभिनेत्री :** उत्तरा बावकर **सह अभिनेत्री :** ज्योति सुभाष चन्द्र **ध्वनि आलेखन :** अजय मुंजाल, ए.एम. पद्मनाभन **सम्पादन :** बेला भांसली सेंगल **कला निर्देशन:** समीर चन्दा **संगीत निर्देशन :** इला अरूण **वेशभूषा :** आरती कालिया

फ़िल्म की कहानी इस शताब्दी के आरम्भिक काल की है। राजस्थान के एक छोटे से कस्बे में रहने वाली रुकमावती के पति की मृत्यु हो गई है और उसने पांच वर्ष तक शोक मनाने की घोषणा की है। उसकी 5 लड़कियां हैं और वे सभी कुंवारी है, क्योंकि रुकमावती को अपने विचारों और स्तर का सही लड़का नहीं मिल रहा।

नाहर सिंह सबसे बड़ी लड़की सावित्री से मिलने जुलने लगता है। लेकिन सबसे छोटी लड़की पद्मा भी उसे चाहने लगती है और नाहर सिंह उस पर भी डोरे डालने लगता है। उनकी मंझली बहन मुमल को भी नाहर सिंह से प्रेम हो जाता है किन्तु वह उसकी तरफ ध्यान नहीं देता और वह निराश हो जाती है।

एक रात को पद्मा नाहर से मिलने के लिए घर से निकलती है। मुमल उसे देख लेती है और शोर मचा कर सारे घर को बता देती है। रुकमावती आगबूबला हो उठती है और नाहर सिंह की पिटाई करती है। पद्मा आत्महत्या कर लेती है। रुकमावती को बहुत दुख होता है लेकिन उसके विचारों में कोई बदलाव नहीं आता। वह लोगों से झूठ बोलती है कि पद्मा का किसी पुरूष से कभी कोई सम्पर्क नहीं हुआ। यह फ़िल्म फ्रेडरिको गर्शिया लोरका के स्पेनिश नाटक 'द हाउस ऑफ बोरनार्डा अलबा' पर आधारित है।

RUKMAVATI KI HAVELI

Hindi/colour/132 min.

Producer/Director/Screenplay-Writer/ Cinematographer: Govind Nihalani **Leading Actress:** Uttara Baokar **Supporting Actress:** Jyoti Subhashchandra **Audiographers:** Ajay Munjal, A.M. Padmanabhan **Editor:** Bela Bhansali Segal **Art Director:** Samir Chanda **Music Director:** Ila Arun **Costume Designer:** Arti Kalia

The film is set at the turn of the century in a small Rajasthan town. Rukmavati has lost her husband and declared a five-year period of mourning. Her five daughters are unmarried because she has not found any suitor who satisfies her ideas of class and status.

Nahar Singh starts courting Savitri, the eldest daughter, but the youngest, Padma, and Mumal, the middle sister, also love him.

One night, as Padma leaves the house to meet Nahar, she is caught by Mumal, who alerts the household with her noise. In the ensuing commotion, Padma kills herself. Rukmavati is shocked but unchanged in her ideas. She lies to the world that her daughter died a virgin.

सारोथी

असमिया/रंगीन/ 96 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : डॉ० भवेन्द्रनाथ सैकिया **मुख्य अभिनेता :** अरुण नाथ **मुख्य अभिनेत्री :** मृदुला बरूआ, विद्या राव नायर **सह अभिनेता :** हेमेन बर्मन, जयन्त दास, मिंटू बरूआ **सह अभिनेत्री :** मौसमी कठकोटिया **छायांकन :** कमल नायक **ध्वनि आलेखन :** ज्योति चट्टोपाध्याय, अनूप मुखोपाध्याय, हीरेन्द्र प्रसाद भट्टाचार्य **सम्पादन:** निकुंज भट्टाचार्य **कला निर्देशन :** नूरूद्दीन अहमद, संगीता सैकिया **संगीत निर्देशन:** प्रभात सरमा

निरंजना दत्ता एक सरकारी कर्मचारी हैं। वे अपना मकान बना रहे हैं।

मकान का निर्माण कार्य आगे बढ़ता है और उधर दत्ता के दिमाग में अपने विवाहित जीवन, खासकर मकान के नक्शे के बारे में उसकी पत्नी और बच्चों की तरह-तरह की इच्छाओं की यादें घूमने लगती हैं। उन्हें यह भी याद आता है कि जीवन के कठिन समय में वे अलग-थलग रहे। यादों के इस ताने-बाने से उनकी सहयोगी निर्मला की तस्वीर उभरती है, जिसके बारे में वह सोचते हैं कि उसकी पत्नी की बजाए वह अधिक समझदार और मददगार पत्नी साबित होती। शाम को वह निर्माण कार्य पूरा होने की खुशी अपने परिवार से बांटने के लिए घर लौटते हैं बातों-बातों में वे यह भी बताते हैं कि आज उन्होंने खाना नहीं खाया।

SAROTHI

Assamese/colour/96 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: Dr. Bhabendra Nath Saikia **Leading Actor:** Arun Nath **Leading Actresses:** Mridula Baruah, Bidya Rao Nair **Supporting Actors:** Dr. Hemen Barman, Jayanta Das, Mintoo Baruah **Supporting Actress:** Mousumi Kathkotia **Cinematographer:** Kamal Nayak **Audiographers:** Jyoti Chattopadhyay, Anup Mukhopadhyay, Hirendra Prasad Bhattarcharyya **Editor:** Nikunja Bhattacharyya **Art Directors:** Nuruddin Ahmed, Sangeeta Saikia **Music Director:** Prabhat Sarma

Niranjan Dutta, a government employee, is building a house.

As the work progresses on the site, Dutta's mind travels back over his married life and particularly over the involvement of his wife and children in the building plans and the way in which each one's wishes had been accommodated. He also remembers the isolation he felt during the unhappy times in his life. Through his memories weave images of Nirmala, his colleague, whom he thinks would have been a more understanding and supporting life partner than his wife. At the end of the day, he returns to share with his family his happiness about the finished house. He mentions that he has not had any lunch. An argument follows among his wife and children about who had neglected to send it to him.

स्वाति किरणम्

तेलुगु/रंगीन/ 145 मिनट

निर्माण: डा.आर. वी राव **निर्देशन/पटकथा:** के. विश्वनाथ **मुख्य अभिनेता :** मम्मूटी **मुख्य अभिनेत्री :** राधिका **सह अभिनेत्री :** जयन्ती **बाल कलाकार :** मन्जू नाथ **छायांकन:** कस्तूरी **ध्वनि आलेखन :** ए.आर. स्वामीनाथन **सम्पादन :** जी.जी. कृष्णराव **कला निर्देशन:** अरूण डी. घोडगावकर **संगीत निर्देशन:** के.वी. महादेवन **गीतकार :** श्रीवेन्नाला सीताराम शास्त्री **पार्श्व गायक :** एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम् **पार्श्व गायिका :** वाणी जयराम **वेशभूषा :** के. सूर्य राव

अनन्तराम शर्मा उच्च कोटि के संगीतकार हैं। उनकी पत्नी शारदा भी संगीतकार है और यश तथा धन दौलत पाकर वे दोनों सुखी जीवन बिता रहे हैं। उनकी कोई संतान नहीं है। गंगाधर एक प्रतिभाशाली बच्चा है जो संगीत सीखने में निपुण है। उसके मां-बाप उसे अनन्तराम शर्मा के पास संगीत सीखने भेजते हैं। किन्तु वैदिक मन्त्र का अशुद्ध उच्चारण करके वह अपने गुरू को नाराज कर देता है। शारदा इस लड़के की संगीत शिक्षा का खर्च उठाती है। कई वर्ष बाद गुरू-पूर्णिमा के दिन गंगाधर अनन्तराम शर्मा के घर आता है। उस दिन अपने संगीत कार्यक्रम से वह स्वयं को सिद्ध संगीतकार साबित करता है। अनंतराम शर्मा गंगाधर को अपने शिष्य के रूप में अपना लेता है और वह उनके साथ ही रहने लगता है।

शारदा गंगाधर को अपने बेटे की तरह मानती है किन्तु अनंतराम को उसकी लोकप्रियता से जलन होने लगती है। गंगाधर, अनंतराम और शारदा के बीच तनाव दूर करने के लिए बहुत बड़ा फैसला करता है।

SWATHI KIRANAM

Telugu/colour/145 min.

Producer: Dr. R.V. Rao **Director/Screenplay Writer:** K. Vishwanath **Leading Actor:** Mammootty **Leading Actress:** Radhika **Supporting Actor:** Dharmavarapu Subramanyam **Supporting Actress:** Jayanthi **Child Artiste:** Manjunath **Cinematographer:** Kasthoori **Audiographer:** A.R. Swaminathan **Editor:** G.G. Krishnarao **Art Director:** Arun D. Ghodgavakar **Music Director:** K.V. Mahadevan **Lyricist:** Sirivennala Seetharama Sastry **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramanyam **Female Playback Singer:** Vani Jayaram **Costume Designer:** K. Surya Rao

Anantharama Sharma is a celebrated musician. His wife, Sharada, is also a musician and they are a happy couple having fame and wealth. They have no children.

Gangadhar is a precocious child with an instant grasp of music. His parents send him to learn from Anantharama Sharma but the boy angers the musician with a flippant recital of Vedic verses. Sharada finances the boy's study of music. Years later, on "guru poornima" day, Gangadhar comes to Anantharama Sharma's house to pay his respects. His performance on that day establishes him as a prodigy. Anantharama Sharma takes Gangadhar on as a pupil, and the boy lives with him.

While Sharada treats Gangadhar as her own son, Anantharama Sharma begins to become jealous of his popularity. Gangadhar takes a drastic decision to restore harmony between Anantharama Sharma and Sharada.

तारा

उड़िया/रंगीन/ 132 मिनट

निर्माण/निर्देशन/मुख्य अभिनेत्री : विजया जेना **पटकथा :** विमल दत्त, विजया जेना **मुख्य अभिनेता :** सुनील चौरसिया **सह अभिनेता** अजीत दास, अश्रु मोहन्ती **छायांकन:** नीलाभ कौल **ध्वनि आलेखन :** अजय शर्मा **सम्पादन :** गदाधर पूटी **संगीत निर्देशन :** धनेश खान, भुवनेश्वर मिश्र **गीतकार :** स्वरूप नायक

तारा उच्च नैतिक आदर्शों वाली महिला है। उसका पति श्यामाचरण तान्त्रिक है। वह तारा को भी तान्त्रिक विद्या सिखाता है। तब उसे पता चलता है कि उसका पति धोखेबाज है। किन्तु वह तारा की खातिर अपने आप को बदलने को तैयार हो जाता है। वह अपनी जमीन बेचकर कहीं और जा कर फिर से जिंदगी शुरू करने का फैसला करता है।

बेसहारा औरतों की संस्था चलाने वाला सनातनजी ज़मीन खरीदना चाहता है, तारा सनातनजी के पास यह सोचकर जाती है कि वे उसके पति से अधिक आदर्शवान हैं परंतु वे उसकी ओर आकर्षित होने लगते हैं तब तारा वापिस अपने पति के पास वापिस चली जाती है। अगले दिन सनातन जी की हत्या हो जाती है।

तारा काली मन्दिर में समाधि की अवस्था में जाकर बैठती है। लोग उसे दुर्गा का अवतार समझकर उसकी पूजा करने लगते हैं।

TARA

Oriya/colour/132 min.

Producer/Director/Leading Actress: Bijaya Jena **Screenplay Writers:** Bimal Dutt, Bijaya Jena **Leading Actor:** Sunil Chourasia **Supporting Actors:** Ajit Das, Ashru Mohanty **Cinematographer:** Neelabh Kaul **Audiographer:** Ajay Sharma **Editor:** Gadadhar Puty **Music Directors:** Dhyanesh Khan, Bhubaneswar Mishra **Lyricist:** Swarup Nayak

Tara is a woman of strong morals. Her husband, Shyamacharan, is a Tantrik. He initiates her into Tantrik rites. He is a crook but wants to change for her sake. He decides to sell his land and start afresh elsewhere.

Sanatanji, who runs an institution for destitute women, wants the land. Tara is drawn to his moral superiority to her husband, but finds he is a hypocrite. She returns to Shyamcharan. Later, Sanatanji is found dead.

Tara in a trance goes and sits in a Kali temple. People think she is an incarnation of the goddess and begin to worship her. By and by, she believes what they believe. The police arrest Shyamacharan for Sanatanji's murder. Tara refuses to save him, and he kills her.

वन्ना वन्ना पूकल

तमिल/रंगीन/ 124 मिनट

निर्माण: एस. धनु **निर्देशन/ पटकथा/ छायांकन/ सम्पादन :** बालू महेन्द्रा **कला निर्देशन :** कृष्णमूर्ति **संगीत निर्देशन :** इलयाराजा **गीतकार :** वाली **पार्श्व गायक :** येशुदास **पार्श्व गायिका :** एस. जानकी

मानो नाम की लड़की घर छोड़कर जंगल में चली जाती है वहां उसकी मुलाकात शिव से होती है वे दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं।

शेणबकम शिव से विवाह करना चाहती है। उसके घर वालों और शिव के बीच विवाह के बारे में सहमति है। शिव मानो को चोरी छिपे अपने घर ले आता है। शेणबकम को इसकी कोई जानकारी नहीं है। जब शिव मानो से शादी करने का प्रबन्ध करता है तो वह उसके घर से गायब हो जाती है। वह उसकी खोज में निकलता है और उसे उसकी असली स्थिति मालूम होती है। शिव लौट आता है। शेणबकम उसे दिलासा देती है।

VANNA VANNA POOKKAL

Tamil/colour/124 min.

Producer: S. Dhanu **Director/ Screenplay Writer/Cinematographer/Editor:** Balu Mahendra **Art Director:** Krishnamoorthy **Music Director:** Ilayaraja **Lyricist:** Vali **Male Playback Singer:** K.J. Yesudas **Female Playback Singer:** S. Janaki

Mano, a teenager, leaves her house. She meets Shiva in a forest and the two fall in love.

Shenbakam hopes to marry Shiva. There is an understanding between her family and his about the marriage.

Shiva secretly brings Mano to his house. Shenbakam does not know about it. When he makes arrangements to marry Mano, she disappears from his house. He goes in search of her and finds out the truth about her. Shiva returns. Shenbakam consoles him.

यगनयम

तेलुगु/रंगीन/ 130 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : गुत्ता रामीनेडु **मुख्य अभिनेता :** पी.एल. नारायण **मुख्य अभिनेत्रीः** लक्ष्मी प्रिया **सह अभिनेता :** भानुचन्द्र **सह अभिनेत्री :** शान्ति **बाल कलाकार :** शिवा **छायांकन :** नव कान्त **ध्वनि आलेखन :** प्रताप रामकृष्ण **सम्पादन :** वी.अंकीरेड्डी **कला निर्देशनः** एस. दिलीप सिंह **संगीत निर्देशन :** चक्रवर्ती **गीतकार :** डॉ० सी. नारायण रेड्डी, गजेल्ला मल्ला रेड्डी **पार्श्व गायिका :** जय माला **वेशभूषा :** वाई. वेंकटराव

जमींदारों और बिचौलियों द्वारा किसानों के दमन का चित्रण किया गया है । आंध्र प्रदेश के सुन्दरापालेन गांव में हरिजन किसान अप्पालारामुडू और उसका परिवार रहता है। वह और उसका भाई बिना किसी झगड़े के अपनी जमीन का बंटवारा कर लेते हैं क्योंकि अप्पालारामुडू व्यापारिक फसलें उगाना चाहता है । पहली फसल की कटाई पर उसे मुनाफा होता है । लेकिन वह जानता है कि अनपढ़ होने के कारण वह बिचौलियों और फसल खरीदने वालों की दया पर निर्भर है जो तोल और लेन-देन में हेराफेरी करते हैं ।

युद्ध छिड़ जाने पर फसलों की कीमतें गिर जाती हैं । एक गांधीवादी कार्यकर्ता श्री रामुलु नायडू गांवों में तीव्र विकास की बातें करता है और गांव में एक स्कूल तथा कुछ अन्य परियोजनायें चलाता है, जिनके लिए हरिजन भी चन्दा देते हैं । अप्पालारामुडू ऋण के मामले में उस पर विश्वास करता है लेकिन आखिर में धोखा खाता है ।

YAGNYAM

Telugu/colour/130 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: Gutta Ramineedu **Leading Actor:** P.L. Narayana **Leading Actress:** Lakshmi Priya **Supporting Actor:** Bhanuchander **Supporting Actress:** Santhi **Child Artiste:** Siva **Cinematographer:** Navakanth **Audiographers:** Pratap, Ramakrishna **Editor:** V. Ankireddy **Art Director:** S. Dilip Singh **Music Director:** Chakravarthy **Lyricists:** Dr. C. Narayana Reddy, Gajjela Malla Reddy **Female Playback Singer:** Jayamala **Costume Designer:** Y. Venkata Rao

The film depicts, against the oppression of a people by the British Raj, the equally harsh oppression of farmers by landlords and middlemen. The Harijan farmer Appalaramudu experiments with cash crops. From the first few harvests he makes a profit.

The war causes crop prices to fall. Sriramulu Naidu, who wants to develop the village at full speed, initiates a school and other projects to which the Harijans contribute. Appalaramudu trusts him in the matter of a loan he must pay to a middleman, and finds himself betrayed, just as his community is ultimately betrayed by village development, which leaves the poor poorer.

यमनम

मलयालम/रंगीन/ 99 मिनट

निर्माण/वेशभूषा : अजयन वरीकोलिल **निर्देशन :** भारत गोपी **पटकथा :** जार्ज ओनक्कूर **मुख्य अभिनेत्री :** अर्चना **सह अभिनेता :** रामचन्द्रन **सह अभिनेत्री :** शान्तादेवी **छायांकन :** सुरेश पी. नायर **ध्वनि आलेखन:** देवदास **सम्पादन :** वेणुगोपाल **कला निर्देशन:** राजीव अंचल **संगीत निर्देशन :** जी.देवराजन **गीतकार :** डॉ. अयप्पा पनिकर **पार्श्व गायिका:** लेखा आर. नायर

अम्बिलि पोलियो के कारण विकलांग है और व्हीलचेयर के सहारे कहीं आ जा सकती है। वह माडल और खिलौने बना सकती है। लेकिन वह और उसकी विधवा मां अपने ही घर में उसके भाई देवन और भाभी राजी के व्यवहार के कारण उपेक्षित हैं। देवन और राजी घर से अलग होने का फैसला करते हैं जिससे अम्बिलि तथा उसकी मां अकेलापन महसूस करती हैं। तभी अम्बिलि का एक माडल अच्छी रकम में बिक जाता है और वह अपना काम और अधिक उत्साह से करने लगती है। पड़ोस में दो बच्चे आ कर रहने लगते हैं जिससे अम्बिलि और उसकी मां की खुशियां बढ़ जाती हैं। इन बच्चों का चाचा एक डाक्टर है जो अम्बिलि की मां के इलाज के दौरान परिवार के नजदीक आता है और उसे अम्बिलि से लगाव हो जाता है। एक दिन वह अम्बिलि से शादी करने का प्रस्ताव करता है। लेकिन अम्बिलि को लगता है कि वह हमदर्दी दिखाने के लिए ऐसा कर रहा है। वह शादी करने से इंकार कर देती है और अपने काम में जुट जाती है।

YAMANAM

Malayalam/colour/99 min.

Producer/Costume Designer: Ajayan Varicolil **Director:** Bharat Gopy **Screenplay Writer:** Dr. George Onakkoor **Leading Actress:** Archana **Supporting Actor:** Ramachandran **Supporting Actress:** Santhadevi **Cinematographer:** Suresh P. Nair **Audiographer:** Devadas **Editor:** Venugopal **Art Director:** Rajeev Anchal **Music Director:** G. Devarajan **Lyricist:** Dr. Ayyappa Panicker **Female Playback Singer:** Lekha R. Nair

Ambili is restricted to a wheelchair because of a childhood attack of polio. She is skilled at making models and toys. She and her widowed mother are gradually sidelined in their own home by her brother Devan and his wife Raji. Devan and Raji decide to live separately, and Ambili and her mother feel isolated. Then one of Ambili's house models is sold for a good sum, and she becomes more energetic about her work. Two children move in next door, and Ambili and her mother find new joys in life.

The children's uncle, a doctor, becomes involved with the two women, first in order to treat Ambili's mother, and later because of his growing feeling for Ambili.

One day the doctor proposes marriage to Ambili. She realises his feeling is only one of sympathy. She refuses him and reenters her work room.

कथासार: गै़र-कथाचित्र

Synopses: Non-Feature Films

आकृति

रंगीन/ 10 मिनट

निर्माण: बी. रामचन्द्र राव **निर्देशन :** बी. नरसिंग राव **छायांकन :** ए.के.बीर **ध्वनि आलेखन :** स्वामीनाथन **सम्पादन :** डी. राजगोपाल **संगीत निर्देशन :** हरि प्रसाद चौरसिया, बी.एन.राव

इस फ़िल्म में आकृति को शिलाखण्डों के माध्यम से दर्शाया गया है। फ़िल्म में अनेक आकृतियां उभरती हैं। पहली नजर में शिलाखण्ड अति विशाल और मूक प्रतीत होते हैं किन्तु क्या वास्तव में ऐसे ही हैं ? नहीं, उनमें संवेदना भी है, वे बोलते हैं.... वे प्रकृति की भाषा बोलते हैं। शिलाखण्ड बड़े और छोटे, खुरदरे और कोमल, गरम और ठंडे, घने काले और चमकदार, सब तरह के हैं। उनके अलग-अलग रंग और अलग-अलग ध्वनियां हैं। उनसे प्रकृति का गान फूटता है। इतिहास तथा इतिहास के पूर्व का काल एक साथ उजागर है। प्रकृति की सुन्दरता और समय का प्रहार इन शिलाखण्डों पर अंकित है। ये प्रकृति की नकाशी के नमूने हैं।

AKRUTI

Colour/10 min.

Producer: B. Ramchander Rao **Director:** B. Narsing Rao **Cinematographer:** A.K. Bir **Audiographer:** Swaminathan **Editor:** D. Rajgopal **Music Directors:** Hari Prasad Chaurasia, B.N. Rao

Shape, form, essence. That's how Akruti can be described. Akruti manifests in boulders... presents a bewildering range of images. The boulders at first glance look massive and dumb. Are they really so? No, they are sensitive.

They speak. They speak the language of nature... big and small, rough and smooth, hot and cool, dark and brilliant... a myriad shapes, shades and sounds. The polarities of nature sing out from them. Prehistory and history come together. The charm of nature and the ravages of time are imprinted on the boulders. They are the carvings of nature—*Publicity notes.*

आनंद भवन

अंग्रेजी/रंगीन/ 81 मिनट

निर्माण: वी.बी. चन्द्रा **निर्देशन/पटकथा :** यश चौधरी **छायांकन :** महेश कांबले, पी.डी. भीष्म **ध्वनि आलेखन :** एच.एस. नीलकान्त, पी.ए.वारिस **सम्पादन :** प्रकाश अचरेकर, सोमनाथ कुलकर्णी **संगीत निर्देशन :** दिनेश कुमार प्रभाकर **कार्टूनकार :** वी.के. वानखेडे, आर.आर. जोशी, पी.एच. भोंगडे

आनंद भवन नेहरू गांधी परिवार का पैतृक निवास है। लोग जिसे आनंद भवन मानते हैं, वह असल उसकी प्रतिकृति है वास्तविक आनंद भवन इलाहाबाद में पवित्र संगम के निकट स्थित है और 150 वर्ष से अधिक पुराना है।

फ़िल्म में आनंद भवन की ज़बानी नेहरू परिवार की कहानी कही गई है।

ANAND BHAVAN

English/colour/81 min.

Producer: V.B. Chandra **Director/ Screenplay Writer:** Yash Chaudhary **Cinematographers:** Mahesh Kamble, P.D. Bhishma **Audiographers:** H.S. Neelkanta, F.A. Waris **Editors:** Prakash Acharekar, Somnath Kulkarni **Music Director:** Dinesh Kumar Prabhakar **Animators:** V.K. Wankhede, R.R. Joshi, P.H. Bhongade

Anand Bhavan is the family home of the Nehru-Gandhi family. What the public knows as Anand Bhavan, however, is a replica. The original house stands near the holy Sangam at Allahabad and is over 150 years old.

The film tells the story of the Nehru family through the first person narrative of the house.

बल्लू शाह

हिन्दी/रंगीन/ 22 मिनट

निर्माण: भारतीय बाल चित्र समिति **निर्देशन/पटकथा/सम्पादन :** राजेश अग्रवाल **छायांकन :** भास्कर सरनायक **कार्टूनकार :** एस.एम. हासन

बल्लू शाह बड़ा कंजूस आदमी है। जब उसका जीवन खतरे में होता है तो वह एक हज़ार ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प करता है। किन्तु हालत ठीक होने पर उसका कंजूसपन हावी हो जाता है और वह सोचता है कि 500 ब्राह्मणों को भोजन खिलाना काफी है। अन्त में वह एक ही आदमी को भोजन कराना पर्याप्त मानता है और वह है पंडित जानकी प्रसाद, जिसे कभी भूख ही नहीं लगती।

बल्लू शाह को प्रसन्नता है कि वह बिना कुछ खर्च किये अपना संकल्प पूरा कर सकता है। इसलिए वह जानकी प्रसाद को भोजन पर आमंत्रित करता है। किन्तु जानकी प्रसाद उसे बढ़िया सबक सिखाता है और बल्लू शाह को 16 स्वर्ण मुद्राओं से हाथ धोना पड़ता है।

BALLU SHAH

Hindi/colour/22 min.

Producer: Children's Film Society, India **Director/Screenplay Writer/ Editor:** Rajesh Aggarwal **Cinematographer:** Bhaskar Sirnaik **Animator:** S.M. Hasan

Ballu Shah, a miser, makes a rash vow to feed a thousand brahmins when his life is in danger. As soon as he is on firm ground, though, his inner miserly self persuades him that it is enough to feed five hundred brahmins, and finally only one, and that one a man who never feels hungry, Pandit Janki Prasad.

Ballu Shah is delighted that he can keep his promise and at the same time not spend money, so he invites Janki Prasad to a meal. The wily Janki Prasad teaches him a lesson, which costs Ballu Shah sixteen gold coins.

भगीरथी की पुकार

हिन्दी/रंगीन/ 44 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : अनवर जमाल **छायांकन :** ज़ूबी अमीर **ध्वनि आलेखन :** पंकज राकेश, सलीम शेख **सम्पादन :** मणि

इस फ़िल्म में गंगा पर बनाये जाने वाले टिहरी बांध की हानियों व फायदों तथा उसके वित्तीय और पर्यावरण सम्बन्धी पहलुओं का चित्रण किया गया है। इस बांध के बनने से बड़ी संख्या में लोगों को अपने गांव छोड़ने होंगे तथा वनों व कृषि भूमि में पानी भर जायेगा। 1970 के दशक में इस परियोजना के स्वीकृत होने के समय से ही बांध का ज़ोरदार विरोध किया जा रहा है। हिमालय में भूकम्प की सम्भावना को ध्यान में नहीं रखा गया है। इस क्षेत्र में विस्फोटों से भूचाल की आंशका काफी बढ़ सकती है।

यद्यपि बांध के समर्थन में ठेकेदारों और राजनेताओं की लाबी बहुत ताकतवर है किन्तु जिन लोगों के लिए ये बांध जीवन और मरण का प्रश्न है, उनका विरोध भी कम ज़ोरदार नहीं है।

BHAGIRATHI KI PUKAAR

Hindi/colour/44 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: Anwar Jamal **Cinematographer:** Zoobi Amir **Audiographers:** Pankaj Rakesh, Salim Sheikh **Editor:** Mani

The film explores the benefits and the financial and ecological costs of the Tehri Dam to be built on the Ganga. The completion of the dam will uproot a whole community and submerge forests and arable lands. Opposition to the dam has been intense since the late 1970s, when the project was formally approved. The seismic structure of the Himalayan region has not been taken into account in the design of the dam, and blasting in the area can considerably increase the risk of earthquakes.

Although the contractors' and politicians' lobby in favour of the dam is powerful, the opposition of the people to whom the project is a life and death matter is formidable.

भावांतरण

उड़िया/रंगीन/ 65 मिनट

निर्माण : बाम्बे सिनेमाटोग्राफ प्रा० लिमिटेड **निर्देशन :** कुमार शाहनी **पटकथा :** फरीदा मेहता, कुमार शाहनी **छायांकन :** आलोक उपाध्याय **ध्वनि आलेखन :** नमिता नायक **सम्पादन :** परेश कामदार

भावांतरण फिल्म भारतीय शास्त्रीय नृत्य की ओडिसी शैली के मर्मज्ञ गुरू केलुचरण महापात्र के बारे में है। इसमें गुरू के जीवन और कला को भारतीय तत्वमीमांसा से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

BHAVANTARANA

Oriya/colour/65 min.

Producer: Bombay Cinematograph Pvt. Ltd. **Director:** Kumar Shahani **Screenplay Writers:** Fareeda Mehta, Kumar Shahani **Cinematographer:** Alok Upadhyay **Audiographer:** Namita Nayak **Editor:** Paresh Kamdar

Bhavantarana is about Guru Kelucharan Mohapatra, the maestro of the Orissi form of Indian classical dance. The narrative weaves the guru's life and art with Indian metaphysics.

ऑइज़ ऑफ स्टोन

हिन्दी, मेवाड़ी/रंगीन/ 91 मिनट

निर्माण/निर्देशन/सम्पादन : नीलिता वाच्छानी **छायांकन :** वेंगेलिस कलमबकस **ध्वनि आलेखन :** सुरेश राजमणि, पंकज राकेश

शान्ता नाम की युवती को यह विश्वास है कि उस पर किसी भूत-पिशाच की छाया है। उसके पति और सुसराल वाले उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते और वह ज्यादातर अपने मायके में ही रहती है। लम्बे समय तक पूजा करके देवी को प्रसन्न करने से शान्ता की बीमारी का ''उपचार'' हो जाता है।

EYES OF STONE

Hindi, Mewari/colour/91 min.

Producer/Director/Editor: Nilita Vachani **Cinematographer:** Vangelis Kalambakas **Audiographers:** Suresh Rajamani, Pankaj Rakesh

Shanta is a young woman possessed by a spirit, according to her own belief. Treated with indifference by her husband and in-laws, she usually lives in her own mother's house. Having propitiated the goddess over a long time, Shanta is "cured" of her illnesses. The essentials of her life with her husband, however, remain unchanged.

कबितार अनंत जात्रा पथे

बंगला/श्वेत श्याम/ 27 मिनट

निर्माण : सूचना और संस्कृति विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार **निर्देशन :** सनत कुमार दास गुप्ता **पटकथा :** सनत कुमार दासगुप्ता, धीमान दासगुप्ता **छायांकन :** तपन बागची **ध्वनि आलेखन :** दुर्गादास मित्रा, सजल दास **सम्पादन :** प्रशान्त डे **कला निर्देशन :** पार्वती दास **संगीत निर्देशन :** पार्थ सेनगुप्त

इस फिल्म में महाकवि जीवनानन्द दास के जीवन तथा उन परिस्थितियों का चित्रण किया गया है, जिनमें उनके गीतों को आकार मिला। यह सारा चित्रण उनकी कविताओं के साथ किया गया है। जीवनानन्द दास की मृत्यु 1954 में एक दुर्घटना में हो गई थी, किन्तु कवि के रूप में उन्हें मान्यता बाद में तब मिली, जब उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

KABITAR ANANTA JATRAPATHE

Bengali/black and white/27 min.

Producer: Department of Information and Cultural Affairs, Government of West Bengal **Director:** Sanat Kumar Dasgupta **Screenplay Writers:** Sanat Kumar Dasgupta, Dhiman Dasgupta **Cinematographer:** Tapan Bagchi **Audiographers:** Durga Das Mitra, Sajal Das **Editor:** Prasanta Dey **Art Director:** Parbati Das **Music Director:** Partha Sengupta

The film depicts the life of the poet Jibanananda Das and the environment that fostered the images in his lyrics, the whole shot through with the poems themselves. The poet died in 1954 in an accident. Recognition came to him afterwards, when the Sahitya Academy Award was conferred on him.

कमलाबाई

मराठी, हिन्दी/रंगीन/ 46 मिनट

निर्माण/निर्देशन : रीना मोहन **छायांकन:** रंजन पालित **ध्वनि आलेखन :** सुरेश राजमणि **सम्पादन :** स्मृति नेवटिया

यह फिल्म भारतीय सिनेमा की पहली अभिनेत्री और मराठी रंगमंच की प्रारम्भिक अभिनेत्रियों में से एक कमलाबाई के जीवन के सम्बन्ध में है। उनकी यह जीवनी उनके साथ भेटवार्ताओं, चित्रों, नाटकों के अंशों और उस समय के संगीत के माध्यम से चित्रित की गई है। फिल्म में भारतीय फिल्म उद्योग और रंगमंच के साथ-साथ एक महिला की प्रगति की झलक मिलती है। कमलाबाई की उम्र इस समय 92 वर्ष है। वे पुणे में अकेली रहती हैं। वे बीमार हैं किन्तु उनका उत्साह अब भी बरकरार है।

KAMLABAI

Marathi, Hindi/colour/46 min.

Producer/Director: Reena Mohan **Cinematographer:** Ranjan Palit **Audiographer:** Suresh Rajamani **Editor:** Smriti Nevatia

This is the story of Kamla Gokhale, first lady of Indian cinema and one of the first Marathi stage actresses. It is told through interviews with the actress, photographs, dramatic reenactments, and period music. The film attempts to go beyond nostalgia to give a flavour of the history of Indian film and stage and a woman's progress.

Kamlabai is ninety-two years old. She lives alone in Pune, confined to her bed, but her vivacity is undimmed.

लिविंग ऑन द जंक

अंग्रेजी/रंगीन/ 26 मिनट

निर्माण : गोपाल बोस **निर्देशन/पटकथा :** देबल बसु **छायांकन :** रणजीत सरकार **ध्वनि आलेखन :** रोबिन अधिकारी **सम्पादन :** रथीन बोस **संगीत निर्देशन :** विनय चक्रवर्ती

यह फिल्म शहरों में कूड़ा बीनने वालों पर केन्द्रित है। यह लोग तेजी से उपभोक्तावाद की ओर बढ़ रहे समाज द्वारा कूड़े के रूप में फेंके गये प्लास्टिक, कागज, बोतलों, चीथड़ों और धातुओं के टुकड़ों को इकट्ठा करते हैं और ऐसी लगभग सारी सामग्री कागज बनाने वाले कारखानों में पहुंचती है। इस तरह कूड़ा बीनने वाले ये लोग उपभोक्ता और रद्दी चीजों से दुबारा वस्तुएं तैयार करने की व्यवस्था के बीच पुल का काम करते हैं। आप कह सकते हैं कि इनके बिना समाज अपने ही कूड़े के नीचे दब जाएगा। किन्तु इतनी आवश्यक सेवा करते हुए भी ये गरीब लोग निहायत बुरी हालत में रहते हैं और गन्दगी से कई तरह की बीमारियों और बुराइयों के शिकार हो जाते हैं।

LIVING ON THE JUNK

English/colour/26 min.

Producer: Gopal Bose **Director/ Screenplay Writer:** Debal Basu **Cinematographer:** Ranajit Sarkar **Audiographer:** Robin Adhikari **Editor:** Rathin Bose **Music Director:** Binoy Chakraborty

The film focuses on the ragpickers of Indian cities. They sort through the waste of an increasingly consumerist society to cull plastic, paper, bottles, metal scrap and rags. Almost the entire quantity of waste paper supplied to paper recycling mills is handpicked from city streets.

The ragpickers are thus a vital link from consumer to recycler without which society would be buried under its own garbage. In rendering this essential service, these poorest of the poor must lead a vagabond life, exposed to all the ills arising from dirt and rubbish.

The documentary is punctuated with cameos of ragpickers.

मलबेरियम पट्टुनूलम

मलयालम/रंगीन/20 मिनट

निर्माण : केरल राज्य फिल्म विकास निगम **निर्देशन :** पी.पी. गोविन्दन **छायांकन :** रमेश कुमार **ध्वनि आलेखन :** टी. कृष्णन उन्नी **सम्पादन :** जी. भास्करन **संगीत निर्देशन:** रमेश नारायणन्

एक समय था जब यह माना जाता था कि केरल की जलवायु में रेशम कीड़े पालना संभव नहीं है। किन्तु केरल के खादी बोर्ड के अन्तर्गत रेशम विभाग के अनुसंधान और विकास कार्यक्रम से यह बात सामने आई है कि राज्य में रेशम उत्पादन का सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इस फिल्म में यह बताया गया है कि किस तरह की जमीन में और किस तरह की सिंचाई व्यवस्था से रेशम के कीड़े पालने की जमीन में और किस तरह की सिंचाई व्यवस्था से रेशम के कीड़े पालने की किस तरह की विधियां अपना कर रेशम उद्योग को सफलतापूर्वक चलाया जा सकता है।

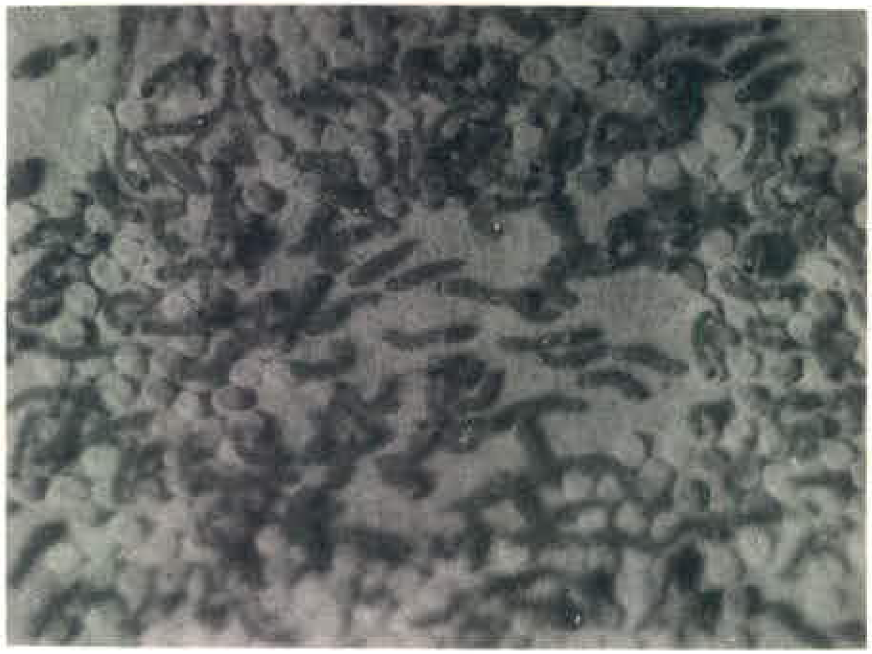

MALBERIYUM PATTUNOOLUM

Malayalam/colour/20 min.

Producer: Kerala State Film Development Corp. **Director:** P.P. Govindan **Cinematographer:** Ramesh Kumar **Audiographer:** T. Krishnan Unni **Editor:** Bhaskaran **Music Director:** Ramesh Narayanan

Sericulture was once thought to be impossible under the climatic conditions of Kerala. The research and development programme of the Department of Sericulture functioning under the Khadi Board of Kerala has proved that on the contrary, sericulture can be highly successful in this state. The film outlines the soils, altitudes, irrigation system, tree propagation and silkworm farming methods that will ensure success.

ए मैटर ऑफ मदरहुड

अंग्रेजी/रंगीन/ 20 मिनट

निर्माण : राजीव मेहरोत्रा **निर्देशन** राजीव मेहरोत्रा **पटकथा :** सफीना ओबराय **छायांकन:** राजीव मेहरोत्रा **ध्वनि आलेखन** पी.डी. वालसन **सम्पादन :** वसुन्धरा फड़के

भारत में आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं का बहुत अधिक योगदान है, लेकिन उन्हें प्राय: बच्चे पैदा करने लायक ही समझा जाता है। यद्यपि मां बनने पर घर में खुशी मनाई जाती है, किन्तु हमारे देश में हर साल बच्चे को जन्म देते हुए एक लाख महिलायें अपनी जान से हाथ धो बैठती हैं। इनमें से अधिकतर मौतें ऐसी हैं जिनको रोका जा सकता है। प्रसव से पूर्व और पश्चात् मां तथा बच्चों की देखभाल के लिए अब सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर कई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, जिनमें से सबसे उपयोगी कार्यक्रम स्थानीय दाइयों की सेवायें लेने का है। किन्तु मातृत्व की बेहतरी ज्यादा कुछ राजनीतिक और सामाजिक संकल्प पर निर्भर करेगी।

A MATTER OF MOTHERHOOD

English/colour/20 min.

Producer/Director: Rajiv Mehrotra **Screenplay Writer:** Safina Uberoi **Cinematographer:** Rajiv Mehrotra **Audiographer:** P.D. Valson **Editor:** Vasundhara Phadke

Women in India are productive across the entire range of economic and social activities, but an overwhelming majority are valued only for their ability to produce children. Although pregnancy is commemorated with feasts, over 100,000 women die each year in this country during or because of childbirth. Most of these deaths, which are due to sepsis, anaemia and tetanus, are preventable.

Prenatal and antenatal care of mothers and babies is now the focus of many government and non-government programmes, the most effective of which work through the local midwives. But their long-term impact on motherhood will depend on political and social will.

मिटी पंग

अंग्रेजी / रंगीन / 28 मिनट

निर्माण / निर्देशन / संगीत निर्देशन : अरिबम श्याम शर्मा **छायांकन :** गिरिश पढियार **ध्वनि आलेखन:** अरिबम शान्तीमो शर्मा **सम्पादन:** उज्वल नन्दी

मिटी पंग मणिपुर का एक बेलनाकार ढोल है जो वहां के लोगों के जीवन और संस्कृति का अभिन्न अंग है । इस फिल्म में भगवान कृष्ण के संगीतमय समारोहों, शास्त्रीय नृत्यों और जन्म से मृत्यु तक के सभी अवसरों पर इस वाद्य की केन्द्रीय भूमिका को दर्शाया गया है। यह ढोल लकड़ी और चमड़े से तैयार किया जाता है । मणिपुर के संगीतकारों ने वर्षों की साधना से इस वाद्य के लिए अनेक ताल तैयार किये हैं ।

MEITEI PUNG

English/colour/28 min.

Producer/Director/Music Director: Aribam Syam Sharma **Cinematographer:** Girish Padhiar **Audiographer:** Aribam Santimo Sharma **Editor:** Ujjal Nandy

The Meitei Pung, a barrel-shaped drum of Manipur, is essential to the life and culture of the Manipuris. The film shows its centrality in the musical celebrations of Lord Krishna, the classical dance of the region, and every ritual enacted from birth to death. The drum is made from wood and leather, and the musicians of the region have over the years built for it a rich repertoire of intricate tals.

मुदियाले एकती विकल्प पंथ (द मुदियाले अल्टरनेटिव)

अंग्रेजी / रंगीन / 30 मिनट

निर्माण : दिलीप कुमार राय **निर्देशन / पटकथा** : समीरन दत्ता **छायांकन:** प्रदीप चक्रवर्ती **ध्वनि आलेखन** : सुदीप्त मोहन बसु **सम्पादन** : रतीश साहा **संगीत निर्देशन:** गौतम चटर्जी

कलकत्ता में अन्धाधुन्ध औद्योगिक जनसंख्या वृद्धि और स्वच्छता के प्रबन्धों की कमी के कारण शहर के आस-पास नदी, नहरों, तालाबों आदि में मलमूत्र जमा रहता है। इससे प्रदूषण फैल रहा है। मलमूत्र वाले पानी में मछली पालन की नई विधि से पर्यावरण शुद्ध होने के साथ-साथ रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और बेकार चीजों में विद्यमान पौष्टिक तत्वों का इस्तेमाल किया जा सकेगा।

मुदियाले मछुआरा सहकारी समिति ने कलकत्ता के दक्षिण पश्चिम में इस तरह के 70 हैक्टेयर क्षेत्र को मछली फार्म में बदल दिया है, जहां प्रति हैक्टेयर 8 टन मछलियों का उत्पादन किया जा रहा है। इस विकास योजना का एक महत्वपूर्ण पहलू ये है कि मछलियों के तालाबों के आसपास उद्यान जैसा वातावरण विकसित हो गया है। थोड़े से मछुआरों द्वारा शुरू की गई यह सहकारी समिति अब आत्म-निर्भर संस्था का रूप ले चुकी है और यह हर साल लगभग 50 लाख रुपये का कारोबार करती है। इस संस्था को कई बार राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला है।

MUDIALY EKTI BIKALPA PANTHA (THE MUDIALY ALTERNATIVE)

English/colour/30 min.

Producer: Dilip Kumar Roy **Director/ Screenplay Writer:** Samiran Dutta **Cinematographer:** Pradip Chakravarty **Audiographer:** Sudipto Mohan Basu **Editor:** Ratish Saha **Music Director:** Gautam Chatterjee

In Calcutta, rapid and unplanned industrialisation, an exploding population growth, and the lack of urban sanitation have flooded the wetlands around the city with sewage. In the wetlands the sewage gets naturally detoxified. Sewage-fed fish farming is an indigenous innovation to take advantage of the nutrition in the wastes, generate employment, and clean the environment.

The Mudialy Fishermen's Cooperative Society has transformed seventy hectares of waterlogged wasteland south-west of Calcutta into a farm that produces eight tonnes of fish per hectare per year. A striking feature of this cost-effective and sustainable development is the growth of a park-like environment around the cluster of fish ponds.

The cooperative grew from a small band of fishermen to a self- reliant body that generates a turnover of fifty lakh rupees a year. The cooperative has won the National Productivity Award several times.

ऑफ माइन्स एंड मैन

अंग्रेजी/रंगीन/ 18 मिनट

निर्माण : पी.सी. शर्मा **निर्देशन/पटकथा :** रघु कृष्ण **छायांकन :** रामचन्द्र काशिद **ध्वनि आलेखन :** नीलकांत **सम्पादन :** एम.एस. खत्रे

यह भारतीय खान ब्यूरो के कार्यकलापों और पर्यावरण संरक्षण में उनकी भूमिका को दर्शाने वाला वृत्तचित्र है।

OF MINES AND MEN

English/colour/18 min.

Producer: P.C. Sharma **Director/ Screenplay Writer:** Raghu Krishna **Cinematographer:** Ramchandra Kashid **Audiographer:** Neelkantha **Editor:** M.S. Khatre

Of Mines and Men is a documentary on the functions of the Indian Bureau of Mines and its role in the conservation of the environment.

पुनरावृत्ति

हिन्दी/श्वेत श्याम/ 28 मिनट

निर्माण : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे **निर्देशन/पटकथा :** इमो सिंह **छायांकन :** मलय के.रे **ध्वनि आलेखन :** अरूण नम्बियार **सम्पादन :** प्राशन्त के. नायर

एक लड़का घर से भाग जाता है। वह घर नहीं लौटता और उसकी माँ उसकी इन्तजार में बुढी हो जाती है। 25 वर्ष के बाद उसका पोता अपनी माँ के साथ इस बूढ़ी औरत के पास रहने के लिए आता है। सम्बन्धों में बढ़ते हुए तनाव के कारण वह भी घर से भाग जाता है।

PUNARAVRITTI

Hindi/black and white/28 min.

Producer: FTII, Pune **Director/Screenplay Writer:** Imo Singh **Cinematographer:** Malay K. Ray **Audiographer:** Arun Nambiar **Editor:** Prashant K. Naik

A boy runs away from home. He does not come back and his mother grows old waiting for him. After twenty-five years her grandson comes with his mother to stay with the old woman. Because of the strains arising from their relationship, he too runs away, leaving the two women alone.

संचारी

अंग्रेजी/रंगीन/ 33 मिनट
निर्माण : अरूण खोपकर **निर्देशन:** अरूण खोपकर **छायांकन :** पीयूष शाह **ध्वनि आलेखन :** विक्रम गोगलेकर **सम्पादन :** राजेश परमार **कार्टूनकार :** राम मोहन बायोग्राफिक्स

संचारी फिल्म नृत्य और फिल्म कला का संगम है। यह प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना लीला सैमसन पर केन्द्रित है और इस में कलाक्षेत्र में नृत्य के प्रशिक्षण की जानकारी दी गई है। नृत्य मुद्राओं को मूर्ति कला के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि नृत्य और मूर्ति कला एक दूसरे से प्रेरणा ग्रहण करती हैं।
''केवल तकनीकी प्रशिक्षण से कोई नर्तक नहीं बन सकता। इसके लिए चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत की समझ, सवंदेना और ज्ञान आवश्यक हैं। ये सभी गुण वातावरण से विकसित होते हैं। कला क्षेत्र में, मैं कह सकती हूँ कि हम में से बहुत से लोग नहीं जानते थे और शायद अब भी नहीं जानते कि हम कितना कुछ सीख रहे थे।'' (फ़िल्म पर लीला सैमसन की टिप्पणी)

SANCHARI

English/colour/33 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: Arun Khopkar **Cinematographer:** Piyush Shah **Audiographer:** Vikram Joglekar **Editor:** Rajesh Parmar **Animator:** Ram Mohan Biographics

"Technical training alone does not make a dancer. An active consciousness, sensitivity and knowledge of...painting, sculpture, music are vital.... These must come from the environment... In Kalakshetra... I daresay most of us did not know, and perhaps still do not know, how much we were learning" (Leela Samson, commentary in the film).

Sanchari is a meeting of dance and cinematography. The film centres on Leela Samson, a well-known Bharathanatyam dancer, and recreates her training at Kalakshetra. The performances are juxtaposed with the sculptures inspired by dance and the forms by which the dance itself is inspired.

साइलेन्ट वैली-एन इंडियन रेनफारेस्ट

अंग्रेजी/रंगीन/ 53 मिनट

निर्माण : इको मिडिया प्रा० लिमिटेड **निर्देशन/ध्वनि आलेखन :** शेखर दत्तात्री, रेवती मुखर्जी **पटकथा/छायांकन :** शेखर दत्तात्री **सम्पादन :** रेवती मुखर्जी, शेखर दतात्री **संगीत निर्देशन :** जोएल अल्मीडा

इस फ़िल्म में भारत के जंगलों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है। यह बात वन्य प्राणियों की भाषा में कही गई है। इन प्राणियों में नीलगिरी के ताहर, त्रावणकोर के कछुए, मलाबार की विशालकाय गिलहरियां, सामान्य बन्दर और शेर जैसी पूंछ वाले वानर शामिल हैं। पनबिजली परियोजनाओं तथा विकास की अन्य योजनाओं के कारण जंगल बड़ी तेजी से कम होते जा रहे हैं, जिससे वन्य प्राणियों और वनस्पति की हजारों प्रजातियां विनाश के कगार पर हैं। फिल्म के कमेन्टेटर के अनुसार ''साइलेन्ट वैली इस समय तो सुरक्षित हैं किन्तु हम निश्चिंत नहीं रह सकते ... विकास गतिविधियों पर रोक लगाने की मांग करना अव्यावहारिक होगा, किन्तु थोड़े समय के लाभों के लिए वनों को नष्ट करना आत्मघाती कदम है"।

SILENT VALLEY—AN INDIAN RAINFOREST

English/colour/53 min.

Producer: Eco Media (P) Ltd. **Directors/ Audiographers:** Shekar Dattatri, Revati Mukherjee **Screenplay Writer/Cinematographer:** Shekar Dattatri **Editors:** Revati Mukherjee, Shekar Dattatri **Music Director:** Joel Almeida

The film is an eloquent plea for the conservation of Indian rainforests, expressed in the language of the Nilgiri tahr, the Travancore tortoise, the collared scops owl, the king cobra, the python, the Malabar giant squirrel, the leaf monkey and the lion-tailed macaque. These and thousands of other species of animal and plant life are endangered with the depletion of rainforests caused by hydroelectric and other projects.

In the words of the commentator, "Silent Valley is safe for the moment. But we cannot be complacent.... While it is unrealistic to call a halt to development, it is utterly suicidal to continue to plunder forests for short-term gains."

सन्स ऑफ़ अबाटानी : द मिसिंग

मिसिंग/रंगीन/ 53 मिनट

निर्माण : दिलीप डोले **निर्देशन :** गौतम बोरा **पटकथा :** गौतम बोरा, दिलीप डोले **छायांकन:** विवेक बनर्जी, गौतम बोरा **ध्वनि आलेखन:** अनिल तालुकदार, गौतम बोरा **सम्पादन:** श्रीकर प्रसाद **संगीत निर्देशन :** शेर चौधरी

मिसिंग समुदाय स्वयं को अबाटानी की सन्तान कहता है। उसके गीतों, मंत्रो, कथाओं और पौराणिक कथाओं की समृद्ध परम्परा है। एक समय से बहुत उन्नत, आत्म-निर्भर और शान्तिप्रिय लोग थे जो अब दरिद्रता और भुखमरी के शिकार हो चुके हैं। बाढ़, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ शहरीकरण के कारण उनकी भूमि पर दूसरों के कब्जे से इन लोगों की जीवन शैली पर बुरा प्रभाव पड़ा है। समुदाय के रूप में जीवित रहने के लिए उन्हें अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाना होगा।

SONS OF ABOTANI: THE MISINGS

Mising/colour/35 min.

Producer: Dilip Doley **Director:** Gautam Bora **Screenplay Writers:** Gautam Bora, Dilip Doley **Cinematographers:** Vivek Banerjee, Gautam Bora **Audiographers:** Anil Talukdar, Gautam Bora **Editor:** Sreekar Prasad **Music Director:** Sher Choudhury

The Mising, who call themselves the sons of Abotani, have a rich oral history of songs, chants, tales and legends. They were a prosperous, self-sufficient, peace-loving people who are now reduced to penury and even starvation. Floods, earthquakes, and the invasion of their native ground by urban growth have completely undercut their way of life. In order to survive as a community, they must completely change their ways.

ए स्टोरी ऑफ ट्रायम्फ

अंग्रेजी / रंगीन / 22 मिनट

निर्माण : पूना जिला कुष्ठरोग समिति **निर्देशन:** विश्राम रेंवकर **पटकथा :** डा० जाल मेहता, डा० संजय साने, वी. एन. कुलकर्णी **छायांकन:** भारत नेरकर, आर.एन. चौधरी **ध्वनि आलेखन :** राजकमल **सम्पादन :** अर्चना रेंवकर

इस फिल्म में उन लोगों के जीवन को चित्रित किया गया है, जो पहले कुष्ठरोग से पीड़ित थे, किन्तु अब इलाज के बाद आम लोगों जैसा जीवन बिता रहे हैं। इस फिल्म में इस बीमारी के सम्बन्ध में लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से इस के निदान के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई है।

A STORY OF TRIUMPH

English/colour/22 min.

Producer: Poona District Leprosy Committee **Director:** Vishram Revankar **Consultant:** Dr. Jal Mehta **Screenplay Writers:** Dr. Jal Mehta, Dr. Sanjay Sane, V.N. Kulkarni **Cinematographers:** Bharat Nerkar, R.N. Choudhary **Audiographer:** Rajkamal **Editor:** Archana Revankar **Music Director:** P.P. Vaidyanathan **Animator:** R.S. Phansalkar

The film shows the lives of people who once suffered from leprosy and who are now cured and living in the mainstream. It also provides information on the etiology of the disease, in an attempt to educate the people about the disease and its victims.

तोतानामा

हिन्दी/रंगीन/ 32 मिनट

निर्माण : विकास सातवलेकर **निर्देशन/पटकथा** : चन्दिता मुखर्जी : **मुख्य अभिनेत्री** : ऊर्मि जुवेकर, अमिता सेंट, तनाज़ ईरानी **छायांकन** : एस.बी. सक्सेना **ध्वनि आलेखन** : इन्द्रजीत नियोगी, अखिल सक्सेना **सम्पादन** : रेणु सलूजा **कला निर्देशन** : नीलम अय्यर, नीना सबनानी **संगीत निर्देशन** : रजत ढोलकिया **गीतकार** : सुरेश शर्मा कान्त **वेशभूषा** : मधुरिमा, पटनी भौमिक **कार्टूनकार**: बिनीता देसाई

मैमून के व्यापार के लिए विदेश चले जाने पर उसकी पत्नी खोजस्ता अकेली रह जाती है। रुपया-पैसा उधार देने का धंधा चलाती उसे वर्षों तक अकेली रहना है इसलिए उसका पति उसे एक समझदार तोते की देखरेख में छोड़कर जाता है। एक दिन शहज़ादा मेहताब खोजस्ता की खिड़की के सामने से गुज़रता है। दोनो की आंखे चार होती है और वे एक दूसरे को चाहने लगते हैं। एक भिखारिन के हाथ वे एक दूसरे को संदेश भेजते हैं और शहज़ादे के तम्बू में रात को मुलाकात तय होती है।

तोता खोजस्ता को गलत रास्ते पर जाने से रोकने के उद्देश्य से उसे एक कहानी सुनाता है। यही कहानियां तोतानामा के नाम से मशहूर हैं। इनका प्रारम्भिक लेखन काल पांचवी से आठवीं शताब्दी के बीच माना जाता है।

TOTANAMA

Hindi/colour/32 min.

Producer: Vikas Satwalekar **Director/Screenplay Writer:** Chandita Mukherjee **Leading Actresses:** Urmi Juvekar, Amita Saint, Tanaaz Irani **Cinematographer:** S.B. Saxena **Audiographers:** Indrajit Neogi, Akhil Succena **Editor:** Renu Saluja **Art Directors:** Nilam Iyer, Nina Sabnani **Music Director:** Rajat Dholakia **Lyricist:** Suresh Sharma Kant **Costume Designers:** Madhurima, Patni Bhowmick **Animator:** Binita Desai

Khojastha, the young wife of Maimoon, is left alone while her husband goes abroad for trade. She may be alone for years and will have to look after his moneylending business. He leaves her in the care of a wise parrot.

One day the prince Mehtaab passes Khojastha's window. Their eyes meet and they desire each other. They exchange messages through a beggar woman and arrange to meet in the night in his tent.

The parrot, knowing that Khojastha cannot be reasoned out of her desires, tells her a story. The story does not convince her to give up the prince, but it does take the whole night to tell, and the young wife does not meet her prince. Night after night the parrot holds her rapt with new stories, and night after night Khojastha misses her rendez-vous.

द वेलिएन्ट वन्स

अंग्रेजी/रंगीन/ 22 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : ए.के बालकृष्णन **छायांकन** : जी.के. विरमानी **ध्वनि आलेखन** के.आर. प्रसाद, सतीश लाडे **सम्पादन** : एस.एस. बिष्ट, वाई.एस. रावत **संगीत निर्देशन** : जी. देवराजन

कोडागू कर्नाटक का एक छोटा सा जिला है, जिसे ब्रिटिश काल में कुर्ग नाम दिया गया। आजादी से पहले यह एक रियासत था। यहां के निवासियों में सुदृढ़ मातृसनात्मक परम्परा है। पुरूष बचपन से ही शस्त्र धारण करते हैं। शस्त्र धारण करने का समारोह आयोजित किया जाता है। शिकार के मौकों पर भी उत्सव मनाया जाता है। विदेशी शासन के खिलाफ विद्रोह वहां 1834 में ही शुरू हो गया था जब अंग्रजों ने कोडागू को अपने अधीन किया था।

फिल्म में इस क्षेत्र के लोगों के नृत्यों, उत्सवों, वेशभूषा और जीवन शैली का चित्रण किया गया है।

THE VALIANT ONES

English/colour/22 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: A.K. Balakrishnan **Cinematographer:** G.K. Virmani **Audiographers:** K.R. Prasad, Satish Lade **Editors:** S.S. Bisht, Y.S. Rawat **Music Director:** G. Devarajan

Kodagu, renamed Coorg by the British, is a small district in Karnataka. Prior to Independence it was a princely state. Its people, the Kodavas, have a strong martial tradition. The males are armed from childhood. The seasonal taking up of arms is a cause for celebration. The hunt, which has become ceremonial with the denuding of forests, is the centre of festivities. Resistance to foreign rule began right from the year 1834, when the British annexed Kodagu.

The film depicts the dances, feasts, dress and way of life of the Kodavas.